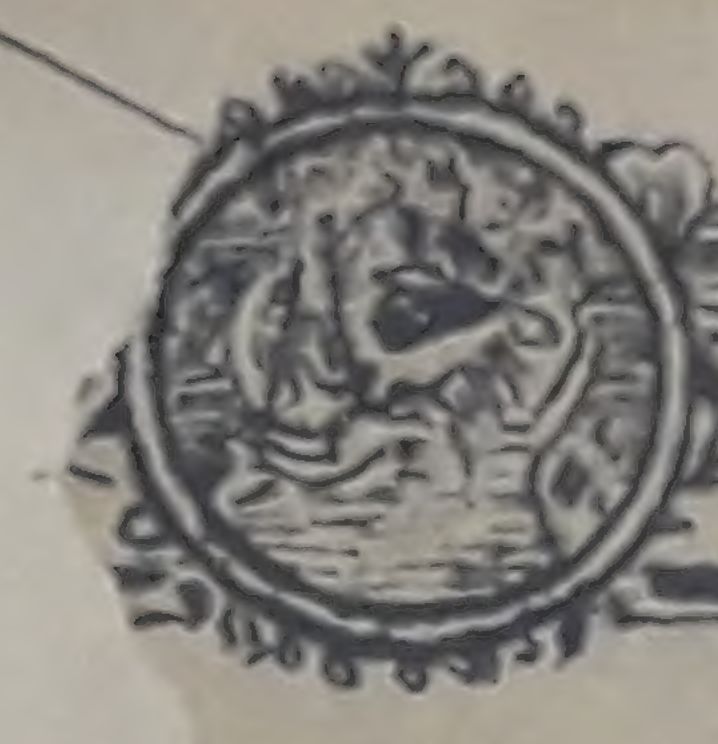


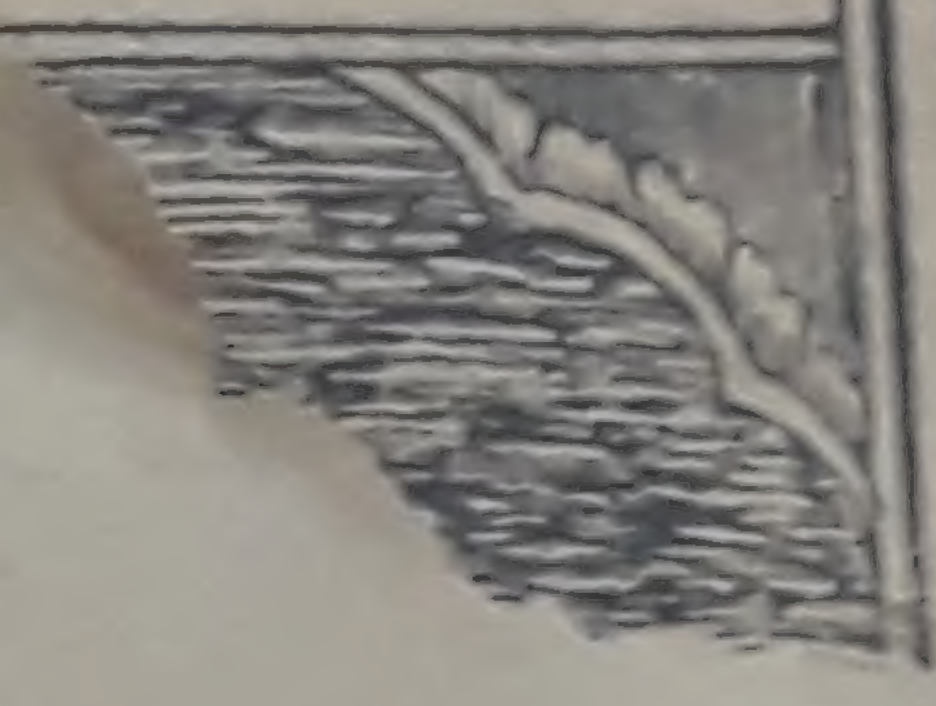


मोहानन्द



नानाटकभाषा

त



श्रीहनुमानाटकभाषा

अर्थात्



॥ श्रीवर विलास ॥:

श्रीपिप्लोदपत्तनधिपालरावतजीश्रीश्रीदूलह
सिंहजीसाहेबकी आज्ञानुसाररतलामनिवासी
महन्तश्रीरामाजीचतुरदासनेरूपवाया ॥ शुभम्

मतवन्नफौककाशीमेंमुन्शीअम्बेप्र
सादकेप्रबन्धसेमुद्रितहुई ॥ शुभम् ॥
पहलीवार १००० मोलप्रतिपुस्तक १)

श्रीमतेनिम्बार्कयेनमः॥

प्रथमश्रीवरबिलासःप्रारभ्यते

श्रीगणेशायनमः॥शालिनीवृत्तं॥बन्दे रामकोटिकामाभिरा
मं॥मेघश्यामं सर्वदा पूर्णकामं॥गोविन्दो हं सच्चिदानन्दकं
दं॥देवाधीशं जानकीशं जनेशं॥१॥अनुयुप्तवृत्तं॥श्रीबर
स्य बिलासो यंग्रन्थो रामयशो कितः॥हनुमन्नाटकच्छा
यांग्रहित्वा तन्यते मया॥२॥अथ ग्रन्थावतरणिका॥शतगु
नी सबन्ती सह १५३२ मेचक आवगामास॥बुधवासर अंका
दशी श्रीबरबदत बिलास॥३॥पायक छुक परसंग मम आ
गमपुर पिपलोद॥दूलह नृप दीनो हुकम सुनिमन भयो प्र
मोद॥४॥मत्तगजेंद्र वृत्तं॥एक समै पिपलोद पुरी प्रतिगो
न गोविन्द तुरंत तहाँ है॥मन्दिर मैं गगनायक के निज मंत्रि
न जुक्त जनेश जहाँ है॥नाटक की चरचानि चलाय सुनाय
दिये वर बेन वहाँ है॥ओनिप दूलह की उपमा सम पावत से
नृप को न कहँ है॥५॥श्रीमतरावत साहब दूलह हेरन मैं द
र सैं नित हाटक॥विप्र गोविंद दई उन आय सहीय कपाटन
की उदघाटक॥सोहत नाटक रत्नन मैं मणिमारा कसो ह
नुमान सुनाटक॥ग्रन्थ नवीन बनेँ उहिं यंथन श्रीन पैं पैं
अध अध उचाटन॥६॥दाहावृत्त॥कागक जग मैं मतात
ते समज सकल रहेस॥फाटक हियरि के धुलें नाटक

पंडनिसेस॥७॥आयसपतिपिपलोदकीलीनीसीसचढा
य॥पुरशोभापुरपतिप्रभाकछुबरनतचितचाय॥८॥मत्तग
जेंद्रवृत्त॥थानकथानकहोतकथानकवानकमंगलआन
कबजि॥मंदिरमंदिरअंदरसुंदरसेवनदेवमहोच्छवहजि॥
गेहनगेहसनेहसनेतुलसीधिरथानविसेयबिराजि॥मोदप्र
मोदबिनोदभरीपिपलोदपुरीभुविपैभलभ्राजि॥९॥अथनृ
पतिबरीनम्॥अमृतध्वनीवृत्तम्॥लइजयवल्लिमतलि
महबंशावल्लिरावल्ल॥दुल्लहरावतधुल्लितितमल्लविदल्ली
ढल॥ढल्ललधिप्रतिमल्ललहनहल्लल्लजजित॥फुल्ललो
कविफुल्ललोयनबुल्लल्लवतित॥तुल्ललगकिअतुल्लल्लियजस
मुल्लल्लधुवय॥दुल्लल्लयतनभुल्लल्लगतमबल्लल्लयिजय॥१०॥अ
थसिंहआयेदकबरीन॥लयिवेमैनवहथ्यकेपंचाननबडम
थ्य॥लथ्यपथ्यलोहनकियेदूलहनृपदुइहथ्य॥हथ्यथ्य
दिमहमथ्यथ्यतदुइचित्तथ्यरतुर॥बथ्यतुवकअकथ्य
थ्यतिसमरथ्यथ्यलउर॥तथ्यतितप्रहरतनकितकिजित
तसनधि॥कथ्यतवनकवित्तथ्युइसर्वततबलधि॥११॥
अथगजबरीन॥कटकटातअटकतनहीसोहनबासनपुइ॥
लायिकुंजरगलगुंजरतउरउद्धतअविरुद्ध॥रद्धहुरअतिकुद्ध
तुरजुरिजुद्धहुरअट॥धद्धिन्नाधद्धिन्नाधद्धुवरट॥धद्ध
काकटधद्धाकटधद्धाकट॥धुद्धुधुकटधुद्धुधुकट
धुद्धुधुकट॥१२॥त्वरबचउचरतमहावतमुरजबोलगल

गज्ज ॥ रावतदूलहकरिनकरगिरिकज्जलकबिकुज्ज ॥
 कज्जच्छिनिधरगज्जज्जलधरकज्जज्जयकरा ॥ दुइइइइ
 किइकिविज्जिइइइतिमुलिज्जज्जसवर ॥ भज्जज्जवसुरग
 ज्जज्जवशिरज्जज्जिनधर ॥ लज्जज्जलधिनिभज्जज्जड ॥
 धिसलज्जज्जियत्वर ॥ १३ ॥ अथहयशालावर्गानि ॥ दिनदु
 लहादुलहानृपतिजसजाहरदशादिस्स ॥ होतरहतहयशा
 लजिहिंसंगीतकअहानिस्स ॥ निस्सस्सरिगमधस्सस्सरिग
 मयस्सस्सरिगम ॥ गस्सस्सरिगममस्सस्सरिगमरस्सस्स
 रिगम ॥ तज्जथ्यइ पुनितज्जथ्यइ पुनितज्जथ्यइतिन ॥ अ
 स्सस्सकलनृपस्सस्सबलविलस्सस्सबदिन ॥ १४ ॥ अथ
 राजकुमारवर्गानि ॥ दोहावृत्त ॥ भावतमनरावतकैवर उ
 पजावतआनंद ॥ नीनहुमनुतिभुवनतिलकउपमाअधि
 लअमंद ॥ १५ ॥ कलितकेसरीकेसरीसोहतसदुपमशेष ॥
 हिम्मतहियकिम्मतकरनसकुचतसुकविअशेष ॥ १६ ॥ सो
 रठावृत्त ॥ कैवरकनीयरसालराजतअतिरघुनाथहरि ॥ नी
 नहुगुनगनमालचितचीनहुसबसुधरनर ॥ १७ ॥ श्रीः ॥
 ॥ ॥ इतिश्रीपियलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंह
 जीविजापितरत्नपुरस्थकविटाकागमांगजगोविन्दरामबिर
 चितेश्रीवरविलासेग्रन्थावतराणाकावर्गाननामप्रथमोक्ता
 सः ॥ १८ ॥ ॥ तदुक्तं नाटिकावतारे ॥ ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वीपि
 नान्दीद्वादशभिः पदैः ॥ आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापि

तन्मुखम् ॥ ॥ इतिनान्दीसंगलबचनं ॥ ॥ दोहावृत्त ॥ ॥ रावत
 नरपतिहुकमगाहिधियधरिअमितहुलास ॥ टीकमसुत ॥
 गोविन्दहिजश्रीवरवदतविलास ॥ १९ ॥ ॥ मनोहरवृत्त ॥ मंग
 लनिधानकलिकिल्वियहरनहारपावनपदार्थनकोपाव
 नप्रकामहै ॥ नांदीसत्वरपरनपदप्रापतिकोप्रस्थितजेमनुज
 मुमुच्छुराहयर्चअभिगमहै ॥ कविवरवैनविसरामधामअ
 कवहीसज्जनकोजीवनजरूरवसुजामहै ॥ धर्मवृच्छबीज
 होहुसकलविभूतिप्रदरावरसदैवगुणाग्रामरामनामहै ॥ २० ॥
 ॥ कमलाकुचनपत्ररचनाबिचित्रचीमकरीकीमुद्रामंजुअ
 कितहृदयहै ॥ देवसर्वजगदीशमधूवधूवक्तकंजमुद्रितक
 रनहेतुइन्दुसौउदयहै ॥ कीडाकाजकियोकोडकलितकले
 वरहैहैजचंदजेसीश्वेतदंष्ट्रसमुदयहै ॥ तापैदियैभूमिकही
 प्रलयपयोधिमुस्ताथमसालसतअमैरामसोमुदयहै ॥ २१ ॥
 श्रीवशिवधारेब्रह्मवदतबेदांतवारेवोदमतवारेबुडबुडिमें
 विचारैहै ॥ कर्ताकहैनैयायिकजैनीअरहंतरेमीमांसक
 कर्मअकईश्वरउचारेहै ॥ गावतगोविन्दहोहुबांछितफल
 दप्रभुसैनदिनरावरेसुधारैकाजसारहै ॥ वहहेविलोकीनाथ
 सीतानाथरघुनाथन्यारेन्यारे लोकन्यारे रूपतैनिहारेहै ॥
 ॥ २२ ॥ रामवहगवणारिदशरथसुनुलसैलच्छमनअग्रजा
 तसुगुनसमेतहै ॥ पूज्यप्रद्युम्नीअब्धिअंतलौप्रतापजास
 सकलमुहागसिद्धिविद्याकोनिकेतहै ॥ आनन्दकोकन्द

कलिकलिवसपटलध्वंसिसौम्यदेवसेवातमसर्वकौसंके
तहै॥ त्रिभुवनशरनअशरनकोशरनसदांनित्यनिकलंकना
हिप्राणावौसहेतहै॥१॥ अवधपुरीकोभयदशरथहोतभयो
सूर्यवंशकेतुशूरशत्रुनसंधारीहै॥ बलीवीरविक्रमीकरीही
पुत्रदृष्टितानेनारायणातवैतासआसनिरधारीहै॥ दुष्टदैत्य
कष्टभूरिभारभयोभूतलपैतिनकेसंहारहेतचारमूर्तिधारी
है॥ जेष्टश्रेष्ठरामलच्छभरतरुशत्रुहनचारौभ्यातमातता
तआयसानुसारीहै॥६॥ असुरनभूरिभयभीतमुनिविष्णु
मित्रअवधअधीशअंगजातजुगजाचेहै॥ ओनिपयप्राप्ती
निजचितमैंदुचितहोयदीनैसुतदोयरामलच्छमनराचेहै॥
सुदामुरसुन्दरीप्रहारीताटकामिधानकौशिकहुजानीनृप
बालसूरसांचेहै॥ विद्यादृष्टदीनीसद्यअतिअनवद्यतदा
कहिगेसमस्तजेमनोरथमनकाचेहै॥७॥ मतगजेन्द्रवृत्त॥
कौशिकनंदनआश्रमआयकियोमयतूरनआपअवेहै॥
धूमनिहारतआसुरश्रेष्ठसुबाहुमरीचसमेतसवेहै॥ श्रीरघु
नंदनकंदकियोछिनछाडिमरीचसुजानजवेहै॥ कारजलैन
कछुकरयोजिहितैतिहिकोतजिदीनतवेहै॥८॥ मनोहरवृत्त॥
॥ सीताकोस्वयंवरसुनतऔनकियोगौनमारगमैशिला
रूपअहल्याउधारीहै॥ जनकपुरीमैंजायसर्वसतकारपाय
महतमहीपनमैंपायेशोधभारीहै॥ गावतगोविन्दसवि
कोसलकिशोरद्विचित्रसेभयेहैयत्रतत्रनरनारीहै॥ इं-

दहेकिइंदुहेकिदिपतदिनेंदकिधौदशरथनन्दरामचन्दव
लिहारीहै॥९॥ ॥ दोहावृत्त॥ ॥ निरखतनिमिन्पनंदिनीउर
उमगयोआनन्द॥ निजमनमाधिसंकलपकछुकरनलगी
स्वच्छन्द॥१०॥ चंद्रायणावृत्त॥ कच्छपपीठकठोरयेहशिव
चापहै॥ कोमलमूर्तिश्रीरघुनन्दनआपहै॥ इनतैहोयअधि
ज्यकौनयहवातहै॥ परिहौपरादारुणाअतिकीनअहहतुम
तातहै॥११॥ मनोहरवृत्त॥ लच्छमनलायलच्छमनतैका
हतरामपेयहुप्रथीपपुंजपुंजप्रगटानहै॥ जबुद्धीपआदिद्वीप
द्वीपकेमहीपआयेकन्याअरुकीर्तिलाभमानतमहानहै॥
वकितकियोकाहुदंकितमहेशचापनमितकियोनकियोउ
त्थापितथानहै॥ चडीनाकवानकछुकडीनाजुवानमुख
मेरेजानवीरताबिहीनभोजहानहै॥१२॥ दोहावृत्त॥ किय
अनंदरघुनंदहियनिजभुजबलवरनंत॥ प्रौढीवचनप्रतच्छ
पदिलच्छवच्छहुलसंत॥१३॥ षट्पदवृत्त॥ बहुतकह
मैंकहानायसचवचनउचारत॥ दासरावरोषासलच्छम
नधिययहधारत॥ गिनौनगिरिवरमेरुप्रमुयधनुकीकागि
नती॥ अतिशयजीर्णपिनाककरोप्रभुनैयहबिनती॥ सु
हिहोयहुकमममलबहुबलकौनकौनकौतुककरो॥ ध
किधरौमरोरौमूलजिमगहिशातयोजनअनुसरो॥१४॥ सो
ठावृत्त॥ सुबचनसुनिश्रीरामनीतिनिलयनिजअनुज
के॥ रघुकुलमणिगुणग्रामकियनियेधदगसैनकरि॥१५॥

॥ ॥ इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलह
 सिंहजी विज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामविरति
 ते श्रीवरविलसे श्रीरामलक्ष्मणसंवादो नाम द्वितीयोऽस्मात्
 ॥ २॥ ॥ दोहावृत्तं ॥ ॥ लाम्यो रावरापुरोहित वतरावननिमि
 नाथ ॥ नितप्रतिदुहितारावरी चितचाहत दशमाय ॥ १ ॥
 मनोहरवृत्तं ॥ देनी है अवस्यमवदुहिता कहन कह लेनी चह
 लंकाधीशचित्तमें विचारिये ॥ जाके गुनगावें महासुनिर्मा
 च्यादिप्राच्यधरनी करि नुनै विशेष धियधारिये ॥ परमप्रच
 डदोरदंडन प्रतापनतै तिभुवन नोक लोकमच्छरनिहारि
 ये ॥ असौ अवलंब आहि कीजिये बिलंबनाहि अद्य अविलं
 ब आपकारज सुधारिये ॥ २ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ असुरपुरोहि
 त पठतरामप्रतिबै नहे ॥ धियधारी लंकाधिराज सियलै न
 है ॥ दितचाहत जो श्रेयनिजे छांडिये ॥ परिहां विभुव
 विजयी संगवैरनहि मंडिये ॥ ३ ॥ बदतबचन वैदेह पुरोहि
 ऐषिये ॥ यह माहेश्वरधनुष दृष्टि दे देषिये ॥ करि है याहि
 धिज्यसुता सो पाय है ॥ परिहां अपर सबै धि सियाय आय
 जिम जाय है ॥ ४ ॥ पठत पुरोहित सुनौ जनक महाराजजू ॥
 अवलोकत भुजवीस कितक यह काजजू ॥ किनमधिचू
 न करत धरत नहि धरि है ॥ परिहां निजगुरुशिवधनु हेरिसुवि
 कलशरीर है ॥ ५ ॥ विहसिबदन मिथिलेश पुरोहित ज
 रहौ ॥ शंभुवास कैलाश लिये कर किम कहौ ॥ गृहउपेरत

वेर कियो अविवेक है परिहां अवभयक्योगुरुभावगही धनुदेक
 है ॥ ६ ॥ दोहावृत्तं ॥ जिमलीनो कैलाश करति मधनु कीजै स
 ज्य ॥ नातर निलय सिधाईये उर आशय संत्यज्य ॥ ७ ॥ इमककु
 वचन विदेहवदिनिज उर करत विचार ॥ अव आंगे हूँ कह
 समज परत नहि सार ॥ ८ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ कुद्रसकल छिति पा
 लमु अविल अशक्त है ॥ अय्यामदशग्रीव ईश अनुरक्त है ॥
 धनुषारोपराशुल्क मुल्क जाहर कियो ॥ परिहां कस हूँ सिय
 हाय कहत नृप भरि हियौ ॥ ९ ॥ श्रीवैदेही वाक्य ॥ कोमल मूर्ति
 कोशलराज किशोर है ॥ शंभुशरासन कमठ सुप्रष्टिक ठोर है ॥
 किहिं विधि होय अधिज्य असंभव वात है ॥ परिहां अतिदारुण
 पण कियो अहहु तुम तात है ॥ १० ॥ दोहावृत्तं ॥ वैदेही वरवचन
 सुनि नीरभरे नृप नैन ॥ तवै पुरोहित को धकरि कहन लगे यो क
 कुबैन ॥ ११ ॥ मजगजेंद्रवृत्तं ॥ संजुत शंभुशिवागरा नायक स्कं
 दन नंदिगिरिंद्र उगयो ॥ विक्रमवेग पराक्रम पुंज दशानन को
 छिति छोरन छायो ॥ भूष विदेह विचार करो हिय चाप चडावन
 वाहिबतायो ॥ आवत मोहि अचभमहा इहि मै तुम का पुरुषार
 थ पायो ॥ १२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ उपरोहित आच्छेपक
 रिउर उमंग अधिकाय ॥ जनक सुनावत सब नृपनत वनिज मुज
 उगय ॥ १३ ॥ जनक उवाच ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ शंभुशरासन मध्य
 महागुरुतारई ॥ बीस मुजन की शक्ति जहां कुंठित भई ॥ असौ को
 इत आहिया हि सज्जित करे ॥ परिहां विभुवन विजय विभूति

सीयताकौंवरै॥१४॥ कविरुवाच॥ सोरठावृत्त॥ सुनिविदे
हनुपबोल श्रीरघुनंदन उमगिउर॥ लखन सुलोचन लोल
जटाजूट ग्रंथी दर्द॥१५॥ ॥ इति श्री पिपलीदपत्तनाधिः
पालरावतजी श्रीदूलह सिंहजी बिज्ञापितरत्न पुररथ कवि
टीकागंगाजगोविंदराम विरचिते श्रीवरविलासे पुरोहित
विदेह संवादोत्तामवतीयोद्भासः॥३॥ ॥ तदुक्तं वसंतराजे
॥ चक्षुर्वामं मृगदृशो जयकारिभृशं त्वरा॥ तदेव पुरुषस्या
रातस्फुरितं भयशं सनमिति॥१॥ ॥ कविरुवाच॥ ॥
घनाक्षरीवृत्त॥ पुलकितपरमस्मेरसहितमुषारबिन्दसिया
केकपीलमैं विलाकतहैं वारवार॥ कोणपकदंवनमैं होयर
ह्योकोलाहलतिनके प्रपंचबोल श्रवननिधारधार॥ पंचान-
नतुल्य आप पंचाननवैन सुनिमंचतैं उतरि पंचाननको धनु
निहार॥ आनदअयूटजोरजटाजूटग्रंथिदर्दलोगनकी लूटि
लई शोभाशुचिसारसार॥१॥ दोहावृत्त॥ वामदेवको दंड
दृढजब करलीनौ गम॥ जामदग्निजनकात्मजा तब फुरके
हगवाम॥२॥ करनलगे धनुसज्जतबभ्रातलच्छमनतास
उरवीअहिकमठादिकों देनलगे विश्वास॥३॥ रोलावृत्त॥ थि-
राहजियैं धिराधराधारियैं भुजंगम॥ महिअहिधारहुकमठरा
मकरशिखधनुसंगम॥ दिक्कुंजरदृढहोयवितयधारहुइहिअ
वसरा॥ सज्जकरतहरचापआपरधुबंसविभाकर॥४॥ यदप-
दवृत्त॥ भूमीभइबिनमनमफणिपतिफरामंडल॥ भयौ

मेचकितभूरिबुद्धिवेपतआयंडल॥ किलमिलानकिलकम
ठकौभपायौवरुणालय॥ दिग्गजदिशिभटसहितभयेकायर
करुणालय॥ बहुवारवाहं हितकरतधराधारधूजनलगे॥ ज
बसज्जकियौशिवधनुयतबडमलछमनकूजनलगे॥५॥ मनो
हरवृत्त॥ इतमैं उठायो धनुतिनैं विश्वामित्रननुपुलकिउठयोहै
अंगअंगप्रेमपाथहैं॥ इतमैं नमायौ रघुनंदनमहेशचापतिनैं
नमैं देशदेशभूपनके माथहैं॥ इतमैं भमायौ भूरिकोशालकि
शोरयहसंशयगमायौतिनैं निमिपुरनाथहै॥ कारमुकयैच
तमैं यैच्यौ मनमै थिलीको जामदग्निमानओकमानभगनसा
यहै॥६॥ यदपदवृत्त॥ जबजारोयगा कियैं कारिलौ यैचतशंक
र॥ तवैविपुरतियतोमभीमभासंतभयंकर॥ करौत्यलग्रंथी
जुतिनौकीभृष्टहोतहै॥ सदा लगायै रहत सुनतनिजश्रोत्रश्रो
तहै॥ जबजाउतारिविपुरारितितआस्फालनधनुअनुसरै॥
तबकेनिरासनिशिचरवधूआस्फोटनकंकनकरै॥७॥ दो०
उग्रदेवअत्युग्रधनुउत्थापनतैं काम॥ किहिं कारणभंजन कि
यौगुरागाहकश्रीराम॥८॥ मनो०॥ ब्रह्मवधपातकसमेत
मन्मथारिअरुमात्रवधकारिअत्रियारिजियजानिकैं॥ इत
हैंके संगरयौदोयसंसरगलयौअपरअनेकअघयानिउरुआ
निकैं॥ गावतगोविंदगिरासकलसुजानसुनौमहतमहेश
धनुयहमनमानिकैं॥ पायनमईहानतैंतैंतैंतजैप्रानराम
पाणिपयपुन्यतीरथपिछानिकैं॥९॥ दूटतहीभीमधनुकी

नोहैं कठोरनादविस्मयभयोहैंठोरठोरठामठामहै॥रविवर।
 वाजिराजिऊवदगमनकियोशंभुशिरकंपधुवधूज्योधोलधा
 महे॥दिग्गजगिरनतथाचलनकुलाद्रिनकोअणविमिलन
 सप्रऊरधतमामहै॥मैथिलीमदनमदअंधनकदनओघ
 आसुरअदनशूरसदनभिरामहै॥१०॥स्रष्टाकेवरिष्ठवरअष्ट
 हुअवनरुकेअष्टमूर्तिमूर्तिअष्टकष्टभयोभारीहै॥मुखरित
 अष्टदिशादलनकुलाद्रिअष्टअष्टकुलीनागपांतिबधिरनि
 हारीहै॥लच्छमनभ्रातअतिस्वच्छमनलच्छलायगोविंद
 प्रतच्छदच्छवदैधर्मधारीहै॥तोरदोरदंडजोरचंडिकेशको
 प्रचंडखंडनकोदंडनादचंडताप्रचारीहै॥११॥दूतधनुषम
 हीमच्योमहाकोलाहलनिठुरनिनादलोकलोकममैंछायो
 है॥श्रीरंगासुनिशब्दकेअमर्षवसमूर्च्छितकैअतिअविलंब
 ध्वानअध्वधकिधायहै॥जानकीनिमित्तजानजानकीर-
 यीनभानभंजिभवचापआपवीरपदपायोंहै॥कूरकोधअ
 ग्निप्रलेअग्निसोनिमग्नउरनिष्टरतामग्नजामदग्निमुनि।
 आयोंहै॥१२॥मस्तकमनोहरबिराजैंटोपकंकपत्रपीठपैनि
 षड्जुगमयातखंडखंडहै॥परमपवित्रभूतिभूयितउरस्थल
 हैमंजुमृगचर्ममुंजमेखलाअखंडहै॥वसनमजीठरंगरंजित
 ललिततनुकरमेधनुषअक्षवलयघमंडहै॥दंडओकमंड
 ललेऊग्रअस्त्रमंडललेपरसाप्रचंडचंडचरितउदंडहै॥१३॥
 दोहावृत्त॥ब्रह्मसूत्रबायेंकंधादच्छिनदिशधनुधार॥धर्म

दीधितिसोमसमजिमअहिचंदनलार॥१४॥मनोहरवृत्त
 जबतैंजनमलियोतबहीतैंब्रह्मचर्यशिलासंभजेसैभुजदंड
 भासमानहै॥अंकितज्याघातपंक्तिसूचनकरतयहैवसुमति
 बिजयप्रसस्तिफहरानहै॥वच्छथलप्रवलघनास्त्रशस्त्रघात
 किराकठिनकठोरपैसुधारेंधारवानहै॥कृत्रिवनवारनविदा
 रनकरनहारआयोंजमदग्निजायोंजानतजहानहै॥१५॥मुदि
 तसमुद्रसप्तपौमिप्रतिपालकहैंअर्जुनसहस्रभुजदुष्टदर्पदा
 त्योहै॥रेवातीरनीरकेनिरोधकोकरनहारदोरदंडझुंडखंडखंड
 नउछात्योहै॥गावतगोविंदअैंसैंलच्छमनकहतरामपितृ।
 बधयेयतअमर्षउदघात्योहै॥वहीजामदग्निहजानेगुरुद्रो
 हीजानकठिनकुठारतैंकठोरकंठकात्योहै॥विगुणितसात
 वेरकृत्रियसमस्तकेरवसामांसरुधिरसनानबहुवारहै॥निध
 नविधानबीचपरमप्रधानयहतीयबृहबालनाहिनिर्दयनि-
 हारहै॥राजनकेकंधकूटकोटिकोटिकाटनमैंसाठोंधरीअसों
 पेरपरमप्रचारहै॥वारवारबदतधुवांकधियधारधारकृत्रिय
 कारघोरधारयेकुठारहै॥१७॥ ॥इतिश्रीपियलोदपत्तना
 धिपरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकविटीका
 रामांगजगोविंदरामबिरचितेश्रीवरविलासेपरशुरामागम
 नंनामचतुर्थेस्त्रासः॥४॥ ॥सीरठावृत्त॥कहतकोधकरि
 वैंपरशुरामसंशयसहित॥तोस्योधनुषत्रिनैंकालकलेवा
 कौनकहु॥१॥षट्पदवृत्त॥निजपतिआयुधजानिपार्वती

पूजत जिहि नित ॥ वासुकि कंचुक लाइनं दिसा दर आच्छादि
त ॥ धनुष धनं जयतु लय विपुरता माधि वडंधन ॥ मोहि अरु
त है दूक करे कानै कहियै जन ॥ जब काहुन उत्तर दियो तब उर
अमर्य अति शाय पगे ॥ फुरकंत ओठ पुट रक्त चय राम हिसन इगा
रन लगे ॥ २॥ मजग जे द्रवृत्त ॥ फुल्लित गल्ल करै फुत कार प्रफु
ल्लन सा पुट कोटर आयो ॥ ओघ अह कति पावक पुंज हला
हल धूम तितै प्रगटायो ॥ अंध समान किये सब लोक न अवर
लौं छिति छोरन छथो ॥ लोयन लाल कराल किये तत काल
महा विकराल लघायो ॥ ३॥ मनोहर वृत्त ॥ रेरे रेरे राम तेरे रे
समग्र काम निज कुल कंज यै तुषार तोम ते सो है ॥ मोहि पहिचा
न्यो नाहिर चंडर आन्यो नाहि जान्यो नाजर रजाम दग्नि मुनि
जे सो है ॥ कीने है अकांड मै प्रचंड दौर दंड बल यंडन को दंड क
रि चंड मान कै सो है ॥ आडंबर डिभै विद्यात भयो षंड षंड मंडल
महीप मै उदंड मंडल सो है ॥ ४॥ चंद्रायण वृत्त ॥ निधिल न रे द्रनि
काय कुमुद जिम जानियै ॥ तिन को मुद्रित करन मिहिर मुहिमा
नियै ॥ कार्तवीर्य प्रतिक दे जथा मम बोल है ॥ परिहां सो मुनि
ली जै रंगम प्रवरा जुग योल है ॥ ५॥ दोहा वृत्त ॥ सहस्र वाहु नृप
सैन्य सह हौं द्विवाहु दुज अंक ॥ प्रगट प्रभा करषे यहै तब मम सं
गर टेक ॥ ६॥ जथा कही ते सी करी कार्तवाय के साथ ॥ सो जा
नत सारो जगत मम विक्रम रघुनाथ ॥ ७॥ मनोहर वृत्त ॥ कठि
न स्वभाव मेरी जाहर जगत बीच बाल वृद्ध तरुण तमाम तूरामि

रे है ॥ कांड्यो नाहि कौं नानव सतिका विहो ना वीच तिन केरु
धिर सर्व पितृकाज सारे है ॥ सप्रवय बेर कुद्रुत्रिय त्रियन केरग
भीधित अर्भन निकारिका दिडारे है ॥ अहो अहो अहो महा आ
चरज आवत है कहो कहो कहो राम तुम क्यों बिसारे है ॥ ८॥ का
ल सा कराल कूर काठिन कुठार यह कार्तवाय कंठ भुज छेदन मै
दच्छ है ॥ घसरा के यूर मध्य मरिग गरा रात्कार घोर सोर सु
नै शत्रु वसत तत छ है ॥ तेज करितु ल्य दियै द्वादश दिवा कर सो
रुजी गोत्र काज प्रलपावक प्रत छ है ॥ लच्छ मन लाय लवल
च्छ मन अग्र जात लच्छ लच्छ लच्छ वच्छ भच्छन बिच छ है
॥ ९॥ षटपद वृत्त ॥ सुनि सुनि बचन सुनीश राम निज चेत सिचुनि
चुनि ॥ पुनि पुनि नयन निहारि वैन बोल हिय गुनि गुनि ॥ भुज बल
बिदिन मोहि नाहि शिव धनु प्रताल बल ॥ रावर महिमा महा कहा
हौं जानि सकौं भल ॥ करियै त को धनाह कवि भो धरियै धीरज धूव
धिय ॥ अम्यात बाल आचरगाल यि कै प्रमुदित गुरु लोग जिया
॥ ११॥ दोहा वृत्त ॥ कर कुलार यह कंठ मम कर हुय थो चित सोय ॥
रघु बंशिन को शूर पत गो द्विज पै नहि होय ॥ १२॥ मनोहर वृत्त ॥ ली
जै मुनि विप्रवर्य हम कौं तिहार संग संगरु की बात हू किये ते होत पाय
है ॥ सारे हीन बल हम तुम बलवानन के सी सपै ल सत जथा पवन
पै छापी है ॥ कैसे करि सकै कहो रावरी वरावरी जु भुज ते भये है भूष
ब्राम मुख जाप है ॥ अंक गुरा संजुत धनुष्य धराधीशन कौ नवरुन
जुग ब्रह्म सूत्र लै आप है ॥ १३॥ चित्र भानु वंश जन्म कृत्रिय कहा

वतहों श्रोत्रियसमस्तद्वय अर्चन करतहों॥ भगवत विश्वामित्र
 महत अनुग्रह तें प्राप्त दिव्य अस्त्र पारधिय में धरतहों॥ कोऊ जन क
 रौ जस अथवा कुजस करौ हर्ष शोक नैं कनाहिं सनारतहों॥ धा
 स्तहों शस्त्र शत्रु संघन संघार काज काल तें डरौ न विप्र बाल तें डरतहों
 ॥१४॥ दोहा वृत्त॥ परंशुराम रघु राम मुख निकसे सुनिवर बोल॥ ति
 न को कियो न तोल ककु उचरन लगे अतोल॥ १५॥ विप्र विप्र कहि वद
 त मुहि रेशु वारंवार॥ जाविध को मै विप्र हों सो सुनिली जैं सारा॥ १६॥
 घनाक्षरी वृत्त॥ क्रोध करि जानैं निज जननी प्रहारी पेय रुचिय बिहीन
 मही की नीड़ कवीस बार॥ क्षत्र अस्त्र मध्वासव स्वाद मै अभिग्य अ
 तिकुलिश कठोर घोर कठिन कुठार धार॥ जाको बारा छिद्र मग
 भासैं कौंच पर्वत मै हंस कुल गिरै अजो अस्थि अद्रिके अपार॥ ओ
 सों उग्र अजो उग्र देव सों उद्युग अति प्रलै अग्नि जै सौ जाम दग्नि भार्गव
 निहार॥ १७॥ षट्पद वृत्त॥ कुभित निरधि भृगु नंद वचन रघु नंद उ
 चारत॥ त्रिभुवन तिय मधि वीर जननी जननी तव धारत॥ निज भुज व
 शी विशाय बिलधि मुख व्रीडा पाई॥ अस सुत है मम उदर उमा उर
 इच्छा आई॥ अति धन्य मात अरु तात धन वीर आप अति धन्य है
 तिहु काल त्रिलोकी बीच किहु नहिं उपमा कहु अन्य है॥ १८॥ चंद्रा
 यणा वृत्त॥ हार पौरो गरमोर कि कठिन कुठार है॥ कज्जल निय चय
 बसौ कि जल की धार है॥ सुख लयि हों संसार कि जम को मुख लयौ॥
 परिहौ विप्र न पै वीरत्व पनौ कवहु नर यौ॥ १९॥ दोहा वृत्त॥ कहे रा
 म अभिराम अति अचर अयिल अमोल॥ तदपि अभ्यसूया स

हित बोलत भृगु पति बोल॥ २०॥ किरीटी वृत्त॥ सागुर गद्यो सव शं
 कर के कर जीरन चाप पिनाक कहावत॥ दूरि यो पहिले तिहि
 दोरि प्रवीरन मै नहिं वीर सरावत॥ बैष्णव चाप हमार यहै करिस
 ज्ज विकर्य गा जो दरशावत॥ शूर समग्रन की गिनती मधि तौर
 घुनंदन राम गिनावत॥ २१॥ दोहा वृत्त॥ भार्गव मुनिके वचन
 सुनि भये चकित चित राम॥ इत पर्वत उत कूप है मिलत न कित
 बिश्राम॥ २२॥ धनुषा कर्यन करन मै विप्र धर्य गा होय॥ जौ न
 करौ यह बात तौ मिलत पराभव मोय॥ २३॥ षट्पद वृत्त॥ अ
 द्य प्रभृति मम भाव विप्र नहि परशुराम है॥ पुत्र पौत्र रघुवंश भूपनहिं
 यहै राम है॥ वीर कहौ अथवा कु वीर कहियो समग्र जन॥ अव
 अवश्य यह बात धारिली नी मै रमन॥ सब सुजन कुजन मिलि भ
 ल कहौ किं वा करिली जो हसी॥ द्विज दुष्ट प्रवल मद दमन हित
 पीतांबर कम्मर कसी॥ २४॥ इम करि मनसि विचार चारु रघुवं
 श बिभूषण॥ पुनरपि प्रवचन पठत शांति मय विरहित दूषण
 ॥ प्रणविमित भूमा त्रजीति इक वीस वेर यह॥ गहि गहि पुनि पु
 नि दियो नाहिर धिलियो आपवह॥ हौं डिंभ बहुरि नव वाहु ब
 लघोर महा अति वीर वृत॥ विरमियै क्रोध हूँ जै मुदित जाति
 पूज्य भगवंत कृत॥ २५॥ चंद्रायणा वृत्त॥ करत नाहिं द्वै बार बा
 न संधान है॥ आश्रित को द्वै बार देत नहिं यान है॥ अर्थिन को
 द्वै बेर न अर्पत दान है॥ परिहौ भाँयत नहिं द्वै बेर राम अभिधान
 है॥ २६॥ राम लियो वह धनुष सहल सुजान है॥ गुरा यी जनक

रिवागा अकर्वन ठान है ॥ छविमकर ध्वज मधन मास त मे च
 है ॥ परिहो किय भार्गव मुनि स्वर्ग गती उच्छेद है ॥ २७ ॥ राम बा
 गा संधान निरर्थक नहि कदा ॥ मुनि प्रतिक्रिये प्रहार प्रसव ध
 कै तदा ॥ किये भूमि पर पतन भूत पीडा जदा ॥ परिहो के द्यौ मुनि
 को मरगा अमर की नौ सदा ॥ २८ ॥ चापा कर्षण ताट कारि आ
 कयुरा है ॥ लखत सीय सा सूर्य नैन आकर्ष है ॥ पहिले भव धनु
 मंजिराम मो कौ लई ॥ परिहो अब कन्यका अन्य नैन इच्छा ठई
 ॥ २९ ॥ दोहा वृत्त ॥ इहि विधिसां कित भई करि कुतर्क कमनी
 य ॥ पुनि पुनि सिय येन लगी राम रूप मनीय ॥ ३० ॥ अब उदंत
 सुनिली जिये पर पुराम मुनि के ॥ गये गर्व के देर सवर ये राम तन
 हेर ॥ ३१ ॥ षट्पद वृत्त ॥ कार्तवीर्य भुज दंड सहस उच्छेदन यं
 डित ॥ जामदग्नि जुध वीर उगम उदंड अयं डित ॥ लखत राम अ
 ति उग्र विशिष्य कर धर उहि अवसर ॥ अविनय गयो बिलाप ही
 यहल साय बिनय वरा प्राप्ति न्य देत्य प्रगाई भयो पिशुन भाव भा
 र्गव भग्यो ॥ श्री राम चंद आमिन दित ब अमल तबन उचरन ल
 ग्यो ॥ ३२ ॥ अहो राम गुण ग्राम धर्म धुव धाम धुरंधर ॥ दिन मरि
 कुल कल कल रा प्रचुर पुहवी शपुरंदर ॥ जौ न आप अवतार अ
 मल निमल महि होतो ॥ तौ अवलंबन अवनि अवनि अधिप
 न नहि होतो ॥ वैलोक्य ताप वासक तरल निजनर मुद मंगल क
 रन ॥ अपराध ओघ छुमिये विमोसकल लोक अशरन शरन ॥
 ३३ ॥ दोहा वृत्त ॥ तब मुनि भृगु पतिवर तबन वदत बचन रघु नंद

जामदग्नि मुनि चरन जुग करि अभि वंदन वंद ॥ ३४ ॥ मनोहर वृत्त
 जाये जमदग्नि पुनि पाये है ॥ पिनाकी गुरु बीज विधान नावधान
 तवनंत है ॥ कर्म करि सारे हूज हान बीच जाहर हो धरम धौ पाधीरे
 महि मा मनंत है ॥ मुद्रित समुद्र सप्रसन्न दीपवती मही दीति है त्रि
 सप्त बेर भूसुर मनंत है ॥ सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवंत आ
 पलोक लोकोत्तर उपमा अनंत है ॥ ३५ ॥ चंद्रायण वृत्त ॥ जानि
 आप अवतार भये रघुनाथ है ॥ परम प्रेम मिलि गाढनयन जुग
 पाथ है ॥ अप्ये जे जम हत्व छवि वध कंडिया ॥ परिहो उत्तर दिशि कि
 यगवन तपसि मन मंडिया ॥ ३६ ॥ षट्पद वृत्त ॥ बहुविध बाजन व
 जत मनहु धनगर जत मधुधुनि ॥ गावत मंगल गीत सुवासि
 निचेत सिचुनि चुनि ॥ बिरदावली बंदति वृंद वंदन बंदी जन ॥
 वेदमंत्र वर विप्र उचारत आयिल मुदित मन ॥ श्री राम सीय पा
 णी ग्रहण निरखत मुनि नर सुर असुर ॥ आनंद ओघ वर्तत भ
 यो उहि अवसर सब जनक पुर ॥ ३७ ॥ दोहा वृत्त ॥ दूलह दुलह
 न दिपत दुहुरति रति पती समान ॥ मंजु मुहूरत जनक नृप दीनो
 दुहिता दान ॥ ३८ ॥ हरि गीतक वृत्त ॥ श्री राम त्रयाम सुकाम अ
 ति अभिराम पीतम पीयके ॥ पाये परसकर सकल सुख निधि
 हीय हरसत सीय के ॥ आनन्द सता वेतरूप भासत योगनिद्र ग
 ता यथा ॥ कंदर्प के बड दप के शर भिन्न भ्राजत है तथा ॥ ३९ ॥ वा
 ल्मीकि गीतम कुशिक नंदन जामदग्नि बसि रहै ॥ येवाह वि
 विध विधान बिरच्यो शातानंद विशिष्ट है ॥ संपूर्ण किय परि

पूरतिरागासीयलकुमनसाथहै॥कीनोंगमनद्रुजआगमन
 निजपुरीप्रतिषुनाथहै॥४०॥ ॥इतिश्रीपिपलोदपत्तना
 धिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि
 टीकारामांगजगोविन्दरामबिरचितेश्रीवरबिलासेसीतास
 यंवरनामपंचमोस्त्रासः॥५॥ ॥अत्रश्रीहनुमन्नाम्ने
 प्रथमोक्तः॥ ॥मनोहरवृत्त॥ ॥आवतअवधपुरीजान
 कीलघनजुक्तबन्दिगुरुलोक रामचन्द्रप्रेमपायेहै॥परस्म
 काहकायरयोगेहगैहनमैदिव्यदेहदेहमैसनेहसरसायेहै॥प
 हलौपहरवीन्योमित्रनमिलनमध्यबाकीतीनजामअतिदी
 र्घदरसायेहै॥दंडकरिताडतनुरंगततिसीतारामचित्रहय
 सालामैविचित्रकोहकायेहै॥१॥ दोहावृत्त॥पियताडतह
 यशालहयसियताडतहयचित्र॥उभयभयेउन्मादधित कि
 हिंकारराकहुमित्र॥२॥तस्योत्तरं॥ ॥धनाक्षरीवृत्त॥ ॥
 परनिपधारेप्रातहीतेपुत्रपुत्रवधूअमितउकाहकायरयोओ
 धमैअपार॥आफताबगिरिमैनिहारिरविरूपरम्यदंपतिह
 दयभ्रांतिजाकोपेधियेनपार॥मंगलमनोहरनिहारनकोनकाज
 आयेअर्कअश्वउनजानिजानिकहुधुनिधारधार॥अस्ताचलयेहै
 कंबअसैउरआन्योतवमेदुरमैमंदुरामैतजैतिनैवारवार॥घटपदव
 तं॥गयेअस्तगिरिअर्कउदयशशधरदरसायो॥रंगपक्कनारिगपिंग
 सुन्दरसरसायो॥गुरुजनआयसपायगईनिजमंदिरअंदर॥सिय
 रस्यरभोरुपतिवृत्तप्रेमधुरंधर॥मुखमंदमंदमुसकनसहितरसिक

शिरोमणिस्वामिप्रति॥आनंदकंदरधुनंदजितरामकामअभिराम
 अति॥४॥प्राचीभागसरागतरीराविरहिराविस्तारो॥नीरजालि
 निद्रालुकुमुदकुलविकसितसारे॥बिगतबिकारचकोरशोकसह
 कोकलोकहै॥सावकाशाकाशाशामितनमततीतोकहै॥कंद
 र्पदर्पअर्पितहृदय प्रवलप्रसर्पणकरिरयो॥शर्वरीस्वामि
 अभिरामअतिसार्वभौमसमुदयभयो॥५॥कैरवकोरकविकसि
 तरागतरागीमनविदलत॥मीलतअलिअंभोजमानमानिनिउ
 न्मूलत॥प्रसरिजुहाईजालतोमतमकवलकरतअतीउर्ध्ववेल
 अंभोधिआकुलितकोककुलनतति॥दिशविदिशसकलधवल
 मधरतहरतनिधिलतनतापहै॥बरबरसहृदयआनंदनिधिउदय
 सुधाधरआपहै॥६॥कुचगिरिशिखरउतंगहीयसीमंतिनिसर
 सत॥अजोमानयहमूढतितैनिवसतनितदरसत॥कुपितक
 लेवरअरुणारूपरोहिरापतिआन्यो॥करपसारिचहुंओरकुमु
 दकुलविकसनठान्यो॥नितरुकीहुतीभूमरावलीबांधियाँति
 निकसीलसी॥मनुमानप्रहारणकारनैअसितअसीनिकस्यो
 शशी॥७॥अस्तभयेदिनताथवेखउहिंकोशशिलीनो॥सहित
 रागअनुरागकमलिनीसपरसकीनो॥पायशीतकरपरसतया
 मुद्रितमुषठान्यो॥परतियरतनिजनाथकुमुदिनीकामितिमा
 न्यो॥परिहासकथनकोतुककियेतबअतिलज्जितहैरयो॥
 अरुणिमागईसबअंगकीइहिंकारणपांडुभयो॥८॥दिच्छा
 गुरुसिंगारमुकुरप्राचीदिशतियको॥कुमुदनकोमुदकरनचकोर

नहखनहियको॥ प्रोढ भयै शीतांगरोदसीवपुसरसतहै॥ राम कहत
 नखिकरहुतके असकसदरसतहै॥ यह किधौ पूरक पूरकत किंवा म
 लयजलिप्रकिय॥ पुनि किधौ पयासो पारदनि अथवा फाटिक मणि
 यचिय॥ ४॥ दोहावृत्त॥ सवी कहत कर जोरि जुगसु नैयै बिनयह जूर
 यासकल संसार मधिरावरजसपरिपूर॥ १०॥ फाटिक नहि पार
 नहो नहि चंदनक पूर॥ श्रीरघुनंदन रावरो सुजस जगत परिपूर॥ ११
 तवनंतरनिरयत भये चुगत चकोर अंगार॥ तिन प्रति रघुवर उच्चरत
 सोधहु सारा सार॥ १२॥ सुधा सुधाधस्वादगहि पुनि अंगारक प्री
 ति॥ करत अन्यथा कौन कहूँ १२० रची विधातारीति॥ १३॥ षट्
 स्वर सं॥ तल्लतिमिरचय चमूँ चक्र संहार चक्र यह॥ चक्र वाक की
 डाकतांत निष्कांत कांतिसह॥ कांता कांत नितान्त वृत संजोग सा
 च्छिह॥ गगनमान सरराज हंसराज तशां कामह॥ पुनि शुचि
 संभोग रंभमाधिकुंभकुमुदतिय सुमुदप्रद॥ गीर्वाण नाहि नीर्वा
 रा प्रद पंचवारा निशारा हद॥ १४॥ सोरठावृत्त॥ बदैँ सारी का बैँ
 न सहचरिगननि सुनायकैँ॥ यह सूचन करि सैन अवसर ठहरन
 कौन अब॥ १५॥ निज निज गर्दनिकेत सकल सहचरी समुझिजि
 य॥ सोभा सकल संकेत सिय सिय पिय हल संतहिय॥ १६॥ इति श्री
 पिप्लोदपत्तनाधिपाल रावत जी श्रीदूलह सिंह जी विज्ञापित कवि
 टीका रामांगजगोविंद राम विरचिते श्रीवरविलासे सहचरी गम
 नी नाम वयोलासः॥ ६॥ ॥ हरिगीतकवृत्त॥ श्रीरामचंद्रकृजान
 की जुगद्वय कियनी सारा है॥ जे चंद्रमंडल शारा तै उतीरति

पतिवारा है॥ ते पंचवारा कवारा तै निकसेकसे आकर्णनी॥ ला
 गे अचानक आयकैँ जुगवच्छ थलवरवर्गनी॥ १॥ दाराग्रभाग
 निजाय प्रीतम प्रीति जुगहि अंकपैँ॥ लीनी निमी नृपनंदिनी आ
 नंदजुत परियंकपैँ॥ रोमांचवपु अतिनम्र आनन नाहिक द्युतनु
 भानकी॥ संकोच करि संकुचित है रइ जानकी प्रिय प्रानकी॥ २॥
 संसार सारौ कहत स्मर शर पंचवानि प्रमानकी॥ कोडा दिक नमै
 काव्यगन मै व्याकरा अनुमानकी॥ विष्यात है सब व्यात मै शरप
 चइति अभिधानकी॥ मोगात मै अगिनंत किम रोमांच लयिक
 ह जानकी॥ ३॥ षटपदवृत्त॥ गाढा लिंगित होय स्वपि हि स्वामि
 निपिय भावत॥ नहि नहि नहि इति वचन जानकी आनन रावत
 कोमल कमल समान स्वामि वच्छ थल राजैँ॥ मम कृत्व कवित
 कठोर चुभन संशय मन छाजैँ॥ पुनि पवन प्रवेशन है नहि तकर
 तरहत मै थिलि शिथल॥ प्रभु प्राण नाथ प्रिय प्राण सिय किय
 आकर्षण बाहु बल॥ ४॥ बाहु पाश अन्यान्य ग्रह गार सभर नल
 भूधित॥ जंयति जुगल किशोर मुहुर्मुहु उपम अदूषित॥ अति अ
 भिमत फल लेत उभय मुख देत परस पर॥ गर्भ सार संसार भयो नृ
 तन इवर सपर॥ महमंजुल मधुरालाय करि हो हो हो रघुवर रत
 ॥ निमि नाथ नंदनी मेद गिर नाना ना कहि कैँ नरत॥ ५॥ षटिर
 सारधन सार पुग चूरान करि आवत॥ नागवेलिदल विमल वीटि
 का निज आनन धृत॥ कहौ लली सी लै उ लियो सिय चार भाग करि
 धर्मादिक फल चार पदारथ तुलित धीय धरि॥ पुनि रामचंद्रमानंद

हुइ भो थिलि मुख निज मिलत मुख ॥ अति मधुर पाइ प्रभु अधर रस
पाये ब्रह्मानंद मुख ॥ ६ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ जब ककु निद्रित नयन भ
ये जुग सीय के ॥ तबै हृदय पर किये पानि पुट पीय के ॥ चित थियत
प्रभु रूप बिनिर्गमन हि चहै ॥ परि हाँ यह उर आशय अमल निरुधि
त ही रहै ॥ ७ ॥ दोहा वृत्त ॥ बिदे ही वरवच्छ यल यच्छ कर्द माघाय ॥ आ
यो अलि अवलोकि विभु उर्हि वरनत चित चाप ॥ ८ ॥ षट्पद वृत्त ॥
कांता कांत निनांत कुचांत स्वन्दन चर्चित ॥ मदन दहन तप शमन हेत
घन सार समर्चित ॥ सिया उस्थल मध्य मधुप निर्मग्न भयो जिहि ॥ पच्छ
रहै वाहरे करन उत प्रेच्छ पेयि तिहि ॥ मनुष्यो पंच शर विशिष्य हियर
हे पुंय अवशिष्ट है ॥ सो सुनत व्याज निद्रित प्रिया अवरा सुधा सममि
रुहै ॥ ९ ॥ प्रथुल जघन घन भार मंद आंदोलन आनै ॥ मृदु चंचल अ
ल काय अवलि अलि आभा भा नै ॥ प्रकटित कृत भुज मूल फुरत शु-
तिकर्ण पूर है ॥ स्तन लीलालित्य बसत वपु पूर नूर है ॥ जान की
व्याज निद्राय है प्रमदत मान सपीय के ॥ हीय को हरन हुल संत है जी
वन जानु हृजीय के ॥ १० ॥ लयि नारी निद्रालु बसन पिय हरि वेला गौ ॥
कांचीर वसुनिका मतत च्छन आवत भारी ॥ तस्कर लुकि वेल गयो
ताहि मरिगण निवता यौ ॥ काम चलाये बान चोर अति शय सतरा
यौ ॥ घन जघन जानि गिरि बर गुहा तित नूरन की नौ सदन ॥ लयि शं
भुजुगल उर ऊपरै है सभित रुकि गौ मदन ॥ ११ ॥ सोरठा वृत्त ॥ प्रगट
पसिनी प्रीति जिम वरन तर संगं य मधि ॥ सो कीनी सबरीति अंत र्यामी
रसिक पिय ॥ १२ ॥ जनक जनक जामात जग जननी जन कात्मजा ॥

शुचि सिंगार की बात उचित नही बहु बरमि वौ ॥ १३ ॥ तदनंतर सुचरि वेसु
नि लीजै सज्जन सकल ॥ पूरन परम पवित्र जब जागी जन कात्मजा
॥ १४ ॥ षट्पद वृत्त ॥ करत प्रेम करि स्पृहा वाल भावन करि भीती ॥ आ
कुंचत निज अंग सुरत संगम पर प्रीती ॥ अह हनाहन हि नही व्याज स
ह बच सरसावत ॥ मधुर समेर कटाक्ष आदि भावन दरसावत ॥ पुनि
निधुवन घन केलि करि स्नान भाव जिय भजत है ॥ अरु शंका तं कित
चारु चित्र रमणार भस भय कृत है ॥ १५ ॥ दोहा वृत्त ॥ अधर दश
न सीतार करि कहत जुगल कर जोर ॥ निर्विशंक मन होय पिय पि
व पि वर सना मोर ॥ १६ ॥ ललित शालि आलाप करि विलसत वाक
बिलास ॥ अविरत निमिचूपनं दिनी पिय हिय करत हुलास ॥ १७ ॥ रं-
भा बीराना दतै मधुर सरस मुख वास ॥ सुरभित सुखुम सुमन समवर
सिय बचन बिलास ॥ १८ ॥ रसिक शिरो मणि साँवरो श्रीरघुवर रमनी-
य ॥ सुनि बैदे ही बचन वर कहत बचन कमनीय ॥ १९ ॥ षट्पद वृत्त ॥ का
न न गये कुरंग कुहर गिरि के हरि गथिऊ ॥ दिग्गज गये दिशान कमल
जल आश्रित भयेऊ ॥ चषक टिकु चबर बदन बिनिर्जित पेय हुप्यारी
पाय पराभव परम भये अतिलज्जित भारी ॥ यहरीति सदा सत पु-
रुष की मान मलान जरूर है ॥ तब मानत तच्छन मरन मन अथवा
जावत दूर है ॥ २० ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ जल अंदर जप करत कमल कुल
जाप के ॥ अच्छ माल अलि अवलि परम पदु पाय के ॥ चहत चित्र
चषतोर नुल्यते हौं न है ॥ परि हाँ धारन कृत इहि हैत बन ज मुख मौ
न है ॥ २१ ॥ सोरठा वृत्त ॥ अँगी अँगी भूरवन बसितृणा भच्छन कर

त॥ चषसमहोनैजरुमृगनेगीतपकरतते॥२३॥ अयिऔरंगी चष
 और अहिऔरंगी बैरंगी लयत॥ तुलितहोतनहिं तोरइहिं कारण
 छिपिरहतनित॥२३॥ चहतवतनुसमतौन अयेचारुचंपकतनी॥
 सुबरनसुवरनहोनैदहनदेहकियदहनमधि॥२४॥ दाडिम हीयदरार
 दरकिदरकिदरसातदृग॥ दंतपत्तिमरिगामार तवनिहारिनिमिन
 दिनी॥२५॥ षट्पदवृत्त॥ कीरसिंधुअरुपुहविजुगलजिहिंपलुवा
 कीनै॥ आयधीराअरुबदन तोरतिनमैरधिदीनै॥ अनिलदंडकरि
 नुलाविधातातिनकोतोलत॥ यहैभूमिकोभूमिवहेगगनांगनडो
 लत॥ तबतोलबराबरहोनैहित नारागनतितमैरयत॥ तउरयो ऊ
 र्दकोउर्दवहगुरुताइमुषमैलयत॥२६॥ चंद्रायणावृत्त॥ कहसी
 ताकरजोरिनाथचितचहतहौ॥ चरनभावनाधारिगिरामुखकहत
 हौ॥ गुरुताभयैनस्वादस्वादमधुराईमै॥ हरिहौकरिनिर्गयनिश्रे
 षअधिकगुनजाइमै॥२७॥ दोहावृत्त॥ गिरामनोहरसुनिसियापू
 रीकामप्रभुतूरा॥ अभिमतआलिंगनकियोकृतमनोरथसंपूरी
 ॥२८॥ शुचितनुशोभासिपकीहरतरमराहियतापा॥ अवधकैल
 आभासियहिआनैददेतअमाप॥२९॥ मनोहरवृत्त॥ ॥ कविरुवा
 च॥ कैसेवैजलजनलितसीकुसुमजैसे कैसेवैकुसुमजैसेनीलम
 रीधामहै॥ नीलमधामकैसेशोभिततमालतैसे कैसेवैतमालजैसे
 दूवदलश्यामहै॥ दूवदलश्यामकैसेजमुनाप्रवाहजैसे जमुनाप्र
 वाहकैसेजैसेतनुरामहै॥ रामसुठिरश्यामकैसेनवधनस्यामजैसे
 तवधनस्यामकैसेजैसेश्यामरामहै॥३०॥ पीतमरीमालकैसी॥

लनिकासुबर्गजैसीकैसीलताजैसीरंगकेसरअमंदरी॥ केसर
 सुकैसीजैसीसोनैजुहीकैसीजुहीजैसीगिरावारिदृष्टिचंदवरबुंद
 री॥ कैसीओपअंबुकीसुजैसीजग्यज्वालजोतिकैसीज्वालजैसीपी
 तपटछविछंदरी॥ कैसीपटज्योतिजैसीसीयछविकैसीसीयजैसी
 विज्जुकैसीबिज्जुजैसीसियसुन्दरी॥३१॥ कैसेनीलपीतपटपावन
 प्रकाशवानजैसीश्रीतमालस्वर्गमालछविधामिनी॥ कैसीवेसु
 मालजैसीनीलपीतपंकजकीमंजुलसुगंधप्रभापूरितसुनामिनी
 कैसेनीलपीतकंजजैसीनीलपीतमरीकैसीमरीजैसीगिराक
 षाआभिरामिनी॥ कैसीनदीजैसेघनविज्जुघनविज्जुकैसेजैसेजु
 गकैसेजुगजैसेघनदामिनी॥३२॥ चंद्रायणावृत्त॥ बिरहदीर्थआ
 गामिजानिजियजानकी॥ चरणायुधधुनिसुनतभोरभइभानकी
 पतिवियोगजिनहोउधारिजियकंजरी॥ अरिहोतासशांतिकेहे
 तप्रपूजतमंजरी॥३३॥ ॥ इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी
 श्रीदूलहसिंहजीबिज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामविर
 चितेश्रीवरविलासेश्रीजानकीविलासेनामसप्रमोक्षासः॥३४॥
 हनुमन्नाटकेद्वितियोंकः॥ षट्पदवृत्त॥ श्रीरघुनंदनआपसीयसं
 नुतसुषसरसत॥ भोक्ताभोगसुरंगसमयकतिपयहियहरसत॥
 गहिंप्रैमकोनैमनिरंतरहृदयलयावत॥ निरयिनिरयिआनंदपर
 मपरपरमपियावत॥ अहुरतेपैअविलंबअतिवहअवसरआ
 तभयो॥ जोदशरथनृपमृगयाकरतमुनीशापपावतभयो॥३५॥
 त्रयतपस्वीजग्यदत्तमुनिश्वरगातातहौ॥ वहनिजतियासमेत

जरु जात्यंधगातहै॥ दशरथनृपके हात मसोतिहि सुत गजभूमतै॥
 शापदियोरिधिअंधतुमहुम रिहोयाकमतै॥ अतिवृद्धअवस्था
 बीचतुम सुतबियोगदुत पायहो॥ वहतरलतापसंतापसहिअ
 पहुसुरपुरजायहो॥ २॥ मलिनकिरणादिनमणीभूरिभूकंपहो
 तहै॥ उलकादंडप्रचंडपतनअंबरउदोतहै॥ घूसरभोगेदिगभाग
 ग्रहगरविशशिबहुदरसत॥ शारमेयरुतअमितफेरुपरचारप्रकर
 सत॥ बहुरुधिरबिन्दुबरसंतनभतमतारादरसंतदिन॥ उत्पातअमि
 तचितकाररवप्रलयसरिससरसातछिन॥ ३॥ दोहावृत्त॥ नितल
 विसवउतपातअतिकैकइकरतबिचार॥ आइगयोअवसरअवे
 लीजैवरनिरधार॥ ४॥ कविरुवाच॥ घटपदवृत्त॥ पहिलैभौ सं
 ग्रामअमरअसुरनअतिभारी॥ सुरसहायताकाजगयेउनृपस
 जुतनारी॥ कठीचक्रकीकीलसुरततिहिंनरपतिनाही॥ तवैअंगु
 रियाआपदईकेकइतामाही॥ गहिबिजयलखीतियअंगुलीकैप्र
 सन्नहैवरदिये॥ तेयापरखेनरनाथमहैजेचितचाहतअबलिये॥ ५
 दोहावृत्त॥ इकवरभरतहिनृपतिलकद्वितियरामवनवास॥ यहउ
 आशयआनिकैगईपुहविपातिपास॥ ६॥ कहनलगीकेकयसु
 तासुनहुनाथममबात॥ जबतेआगमसुतवधूतवतैअतिउत
 पात॥ ७॥ घटपदवृत्त॥ वधूअमंगलरूपभूपइहिंजानहुजीमै॥
 नअमितउत्पातअहरनिशअवधपुरीमै॥ शांतिहेतसहसीयराम
 वसिहैसुगहनवन॥ भरतराजअभियेककीजियैजोमानतमन॥
 जियैथापबरदानदुहजगतिमहाजसलीजियै॥ अतिआपहो

निश्चितअवसुधीहोयइतरीजियै॥ ८॥ सुनतबचनकैकईमाहिपमूर्खभ
 इभारी॥ पुनिकहुहोयसचेतधीयनिजयहनिधीरी॥ मुखनकारजो
 कटैघटैमिथ्यामहपातक॥ सुतबिछरनहयहैघोरममवपुकोघातक
 मनमरनअयेमान्योमाहियनाहिंभलोमिथ्यावचन॥ तियतैतथासु
 कहिदियौतबतिहिविचीविधविधरचन॥ ९॥ सीसजटाविलसंत
 बसनवलकलतनरामजु॥ छत्रचमरदिगभरतविमनमननहिंरा विस
 मजु॥ तातचरनजुगनभतभ्रानजुगमनबचकायक॥ अहहता
 तहामातभरतवदविकूलवायक॥ सहिसकौअवरसंकष्टसबकहु
 हुनमुयतैकहिसकौ॥ गहिसकौसिंहअहिअगनियैरामविरहनहिर
 हिसकौ॥ १०॥ चंद्रायणावृत्त॥ कहतराममोहिपीरनाहिवनवासहै
 कोमलपदसियगमनतथानहिवासहै॥ भरतभ्रातउअरुचिराज
 पररहतहै॥ परिहायहअतिदारुणदाहदेहकौदहतहै॥ ११॥ सुनिसु
 मंत्रबचभूपसुसुवनपयानहै॥ शापसमयभौप्रापआपजियजानहै॥ रा
 मरामरघुनंदरामरतजासहै॥ परिहांफेरनलियोनरेशदूमरोस्वासहै॥
 १२॥ दोहावृत्त॥ अतिआतुरभरतकैबूजतहैनजमाय॥ कैकईकर्कश
 हृदयदियउत्तरसमजाय॥ १३॥ घटपदवृत्त॥ माततातकितपातभवन
 सुरपतिकेभ्राजत॥ किहिंकारणसुतशोककस्यतबअग्रजकाजत॥ क
 हाभयोहेवाहिकियोवनवीचगवनतिहिं॥ काननमाधिक्योगयेहुईओ
 निपआयसजिहिं॥ कहुकाहिभूपआजादईनृपममवाचावदहुव॥
 फलतोहिकहाजबराज्यपदसुनिकरिहाहागिखौमुव॥ १४॥ इतिश्रीपि
 पलोदपतनाधिपालरावनजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका

रामांगजगोविंदरामविरचिते श्रीवरविलासेदशरथनृपस्वर्गसंप्राप्तिव
र्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ रघुवरगहिगुरुगिराज्यपद
तुरागवतजिया ॥ बरप्रतिजाउतभयेबसनवपुवलकलसजिया ॥ सुरभि
संगजिमबालवच्छतिमलछमन सोहत ॥ धारिधनुषशरनूनजुगलः
सबजनमनमोहत ॥ जानकीयेयिगुससारिकासासुचनलगिहुकुम
गहि ॥ प्रियप्रारानाथश्रीनाथकेसाथचलीनिजचितचहि ॥ १ ॥ राम
गवनवनकियेभरतमूर्छाभिइभारी ॥ पायचेतनाककुगिरामुनिजन
धियधारी ॥ कीनौउतकेर्मनिबिलनिगमागमगायौ ॥ दशरथनृपनिज
जनकपुरंदरपुरीपठायौ ॥ पुनिधातशोकपरिपूर्णहियनंदीग्रामनिवा
सकिय ॥ शिरजटामुकुटबलकलबसनबसतसदारघुनंदजिय ॥ २ ॥
दोहावृत्तं ॥ तितैनिवसिपालतप्रजाउरअंदरअसइच्छ ॥ बनेतैप्रमुपगु
धामिकैपेहैप्रीतिप्रतिच्छ ॥ ३ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ त्रिचतुचरणाचलिसी
यपीयसैयौकहे ॥ काननकितनीदूरअवरगासुनिवौचहे ॥ देविदशा
मृदुअंगिनयनजलधारहै ॥ परिहारागबिलोचनप्रथमअश्रुअवता
रहै ॥ ४ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ कहतसुनुसियाकशोदरिप्रथमकहावत ॥ पुनि
कुचकपकेभारनिरंतरनमलखावतचारुचरणाचक्रमराचैत्यकरिआ
मसरसावत ॥ बेलादोलनसमयस्वेदबहुबूंदबहावत ॥ अतिसरितसो
तनिझरनिकरभूमिगतिगिरिभूरहै ॥ मृगसिंहभूतभैरवसहितवनच
लिहोकिमदूरहै ॥ ५ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ पुनिपुहुवीप्रतिपठतरामरंम
नीयहै ॥ नवनलिनीदलअरुनवलकमनीयहै ॥ पदपदपरप्रसय
लतललितगतिनीयहै ॥ अरिहंतवदुहनावनगहनसिधावतसीय

है ॥ दोहावृत्तं ॥ काप्रयपितवयहकन्यकाकोमलतनसुकुमार ॥ त
जियैनुमरीकरनईधुवकोमलताधार ॥ १ ॥ इमकहिकहुकीनौगमन
तिभुवनतिलकतच्छ ॥ अधिकबधूवूनलगीपाधिपाथिसीयप्रतच्छ
॥ ८ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ सविकुवलयदलनीलरावरेकौनहै ॥ यहसुनि
स्मितकरितितैगहतमुखमौनहै ॥ लबिलच्छनपहिवानिलेततेचामहै
॥ परिहारापीतमपरमसुजानसकलगुराग्रामहै ॥ ६ ॥ कमलकोशान
वनीतसुकोमलचरनहै ॥ दर्भसहितअतिकठिनकूरयहधरनहै ॥
सीसवानपदवानसुक्तकलकीजियै ॥ हरिहारासीयदेतपथवधूसुमुखे
सुनिनीजियै ॥ १० ॥ दोहावृत्तं ॥ इमसिधवतनिजनयनभरिनीरपथिक
जनवाम ॥ कमक्रमकरिप्रायतभयेचिक्कटअभिराम ॥ ११ ॥ इति
श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितक
विटीकारामांगजगोविंदरामविरचिते श्रीवरविलासे श्रीरामचंद्र
चिक्कटागमनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ दोहावृत्तं ॥ तितआये
सानुजभरतसहितसैनरनवास ॥ उमगिउमगिअकुलायउरसहत
नविहुरनवास ॥ १ ॥ मरनभलोविहुरनबुरौसवजानतसंसार ॥ वैहै
दुखइकवारहैयहदुखवारंवार ॥ २ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ जटाजूटशिरसोह
बसनबलकलवपुविलसत ॥ प्रणमतभरतपरेषिप्रैमपुलकावलितल
सत ॥ तारसुरनकरिरुदितसकलकलविकलभयेहै ॥ वनविहंगमृगदी
नवैनतितनीरुखेहै ॥ मनुआयवस्योकरुणाकटकचिक्कटकीनीफि
कर ॥ तिहिअश्रुओघनिकसंतयहनाहिझरतनिझरनिकर ॥ ३ ॥ दोहा
वृत्तं ॥ देतसुमिवासिच्छसुतस्वच्छलच्छमनलेष ॥ पुचिसेवनअव

सरमित्येपर अशेष अवरेष ॥४॥ मोहि जान जन कात्मजा जनकजन
कजामाता ॥ अवध सरिस अटवी लषहु जा उजया सुषतात ॥५॥ शिर
धरि आय सभात किय मरत अवध प्रति गेलै ॥ सीयल च्छमन सहित
विभु विहरत गिरिवर तौनै ॥६॥ चंदाय राग वृत्त ॥ वैदेही बच बदन सुन
हुम मपीय है ॥ शिला अंक हुद्र प्रथम सुगोत मतीय है ॥ विंध्य अद्रि
पर अमित उपल पद परस है ॥ परिहाँ करि हौ सुनितिय वंत कितक ॥
पिय सरस है ॥७॥ षट्पद वृत्त ॥ नौ कारोहरा कियो लियो सुष अमित
जानकी ॥ अरज करी कर जोर कंत करुणा निधानकी ॥ गौतम मुनिके ॥
शाप आप अहल्या उद्गारी ॥ यह काहु मुनि शपथोत पुत्री भद्रप्यारि
लीजिये सगया कौ अवस चरन परसनित दीजिये ॥ उद्धार होय तव
लौ बिभौ मम आलवन कीजिये ॥ दोहा वृत्त ॥ जलयान रुथल यान
मैं जानत नाहि अयान ॥ अकरही रागवास मैं दूजे शिशुता जान ॥८॥
देखि देख्यता सीय कीरधुवर दीन दयाल ॥ गोदा वरितट विपिन मधि प
टुकी नीपत शाल ॥९॥ लक्ष्मरा उभा षट्पद ॥ जितै रघु तम कुट
तितै बह पंचवटी है ॥ पंचावटी परेय पाय सुष अंक घटी है ॥ तरल पुर
स्कृत तटी भितिसंस्लेष वटी है ॥ गोदाय वनटी जुतरंगित सरल तटी
कलोल लोल चंचल्युटी दिव्या मोद कुटीरटी ॥ संसार सिंधु शकटी स
दृश स्वल्प धर्म नर दुष्कटी ॥१०॥ जान क्यु बाच ॥ मनो हर वृत्त ॥ कीड
अवतार कल्प वट से विराजमान प्रकटी कृत विश्व वट पिय अंड
ट है ॥ विश्व अंबुज नम वट भक्तन शकट ध्वस्त संकट छमी के कांति व
नत कापर है ॥ लंपट अधर साय भिन्न शत्रु कुंभी घट घंडन शकट वन्दे

राम दुरघट है ॥ सीस जटाजूट पटवल कल राजमान कोटि कोटि क
टै बैग विपदा बिकट है ॥११॥ दोहा वृत्त ॥ विगत परिश्रम होय सि
य पिय अमिवन्दन कीन ॥ पेषिकुटी प्रभुदित भई गई ताप विधती
न ॥१२॥ षट्पद वृत्त ॥ वीसनयन मदनांध सदन मारीच सिधायो ॥
दे बिनीत जुत प्रीति विदित यह बचन सुनायो ॥ तुम मंजुल मृगरूप ॥
धारि दंडक बन बिचारहु ॥ जित मृग नैनी जनक सुता सोहत तित प्र
चरहु ॥ अति अद्भुत अग विलोकि मृग सिय पिय प्रति जांचन करहि
अभिलाष अंगना पूरि वे राम तोर संग अनुसरहि ॥१३॥ हौय ह
अंतर पाय सीय गहि जे हौ निज पुर ॥ तव अधीन है काज करहु म
म आति विनय उर ॥ जोय ह इच्छित मोर सुनहु मारीचन करि हौ ॥
तोइत मैं विनमोत तुरत मेरे कर मरि हौ ॥ है रावन तैं मरत व्यडत
राम हात मरत व्यति ॥ मरत व्य अवश मारीच लखि श्रीरघुवर कर
होहि हित ॥१४॥ दोहा वृत्त ॥ यह बिचार चित चारु चुनि मृगतनु ग
हि मारीच ॥ हरित दूब चुनि चुनि चरत विचरत बन बन बीच ॥१५॥
षट्पद वृत्त ॥ दशरथ दृप कुल दीप पराशाला मधिसोहत ॥ सह ॥
सौमित्र सीय महा मुनि जन मन मोहत ॥ स्वच्छ सलिल पटु पान करत
सुन्दर सरिता सर ॥ ललित कंद फल मूल गहन बीजे बहु वासर ॥
अव अतेयै आयै उतै मृग वपु बनि मारीच है ॥ यह यौजुनी च दश
कंठ कौ विचरत कुटीन गीच है ॥१६॥ सुवान सकल शरीर हरित म
रि ॥ मय अंग हय ॥ विद्रुम मय घुर चार द च्छद मारा क मरि मय ॥
नील तार कानयन पटुल पेषन अति चंचल ॥ सर्वरत्न मय रम्य रूप

सियलख्यो दगंचला ॥ मृगमहा मनोहर मंजुलखि मौथिलिमन प्र
भुदितमइ ॥ उस्साभिलाष अतिहोयकै पियविनती करती भई ॥
१८॥ निशाचार मारीच सांगमाया कुरंग वह ॥ निकट निधन जिहि
केर सचरत धावत छिनमह ॥ गहनगहनमधि फिरत ताहि चह गहन
जानकी ॥ कोटिकाम अभिराम राम प्रति गिरागानकी ॥ शरनिशि
तधनुषधारन कियै मृग पाछै प्रभु अनुसरे ॥ बहुवेर भई जिय जानि
कै तदनु लच्छमन संचरे ॥ १९॥ सोरठा वृत्त ॥ सिय संरच्छन हेत ल
च्छन धुरेधारची ॥ हिय हुलसत बिभु हेत तदनंतरा तिसंचरे ॥ २०॥
॥ ॥ इति श्री पिपलोदयत्तनाधिपालरावतजी श्री दूलह सिंहजी
बिज्ञापित कविटीकारा मांगज गोविन्दराम चिरचिते श्री वरविलासे
मणिमय मृगमारीचागमनो नाम दशमोऽस्त्रासः ॥ १०॥ ॥ श्री हनु
मन्नाटके वृत्तियों कः ॥ ३॥ षट्पद वृत्त ॥ आंदोलत शर अक अपर
कर धनुष धुनावत ॥ पुहुपलताल खिललित जटाग्रंथी सरसावत ॥
कोटिराम अभिराम राम शुभउपमालायक ॥ विपिन वीथिका वीच
स्याम सुन्दर सुखदायक ॥ अति अद्भुत गति मृगरूप वह इत उत तित
चितवत फिरत ॥ मायाधिराज रघुराज मनि इक छिन नहि कित थित
थिरत ॥ १॥ कबहु कधर पद धरत कबहु सनातुरा चाटत ॥ कबहु
होत अस्त्रस्य कबहु गुल्मन उदघाटत ॥ कबहु काकिसलय सुं धिः
कबहु तनु सततापतै ॥ देवत दिशि दिशि कबहु करत कडूति आप
तै ॥ इम कबहु कधावत वेगनै कबहु कथिरता गहत है ॥ वह माया मृग
मारीच इम अद्भुत गति चितवहत है ॥ २॥ राम कहत भोलच्छ आपअ

वलोकहु आकै ॥ श्रीवभंग अभिराम मुहु र मुहु हेरत पाछै ॥ धावननै
धिय ध्यान चपल चित चितवत चमकत ॥ परतनु बीच प्रविष्ट पूर्ववपुः
धारत धमकत ॥ मनमानि मोर शरप मन डर प्राप्नर्ध मुवतै गिरत ॥ क
त बहुतर वियति प्रचार है किंचित पुहवी पै फिरत ॥ ३॥ चंद्रायणा वृत्त ॥
मृगवच्छत्यल लच्छ कियौ प्रभु आप है ॥ दिव्य बाणा संधान ठान द
ढ चाप है ॥ परम प्रचंड प्रहार कस्यो जब इहिं इतै ॥ परिहो होय
तपस्वी गयो दशानन तब तितै ॥ ४॥ चुनि मृगया मारीच गये जुग
भात है ॥ इत आयो दशकंधत पस्वी गात है ॥ मय सजुत जिम मृगी
तथा सियनै नै है परिहो तेल खिहो यह ठानि कहत मुय वैन है ॥ ५॥ धर्मि
णिभिच्छादेउ अहो इत आयकै ॥ लच्छन लच्छन लांघि देत सि
य जायकै ॥ धूरत धुवधिय धारि धरी धरनी सुता परिहो परम पति वत
तीयतौ मत तिनितवता ॥ ६॥ जब गहि चल्यो जस्तर जानि जिय जान
की ॥ तबर धुनंदन पीउ गिरा गुन गानकी ॥ अहं राम हालच्छ
दुख ले जात है ॥ परिहो सिंह भाग शांश गहत यहै का बात है ॥ ७॥
॥ षट्पद वृत्त ॥ ॥ अति आतुर सिय बोल सपदिसुनि जुगल अ
वनतै ॥ जरठ जटायू गिद्ध कुट्टि कह वीस अवनतै ॥ रेतस्कर प
रदार अरे अति द्रुत कयौ जावत ॥ तिष्ठ तिष्ठ मतिमंद तोर
चास कहौ आवत ॥ तज सीय परम पति देवता नातर जैहोश
मनपुर ॥ ममचंड तुंड करि षंड तब गिद्ध पियेगे रुधिर उर ॥
८॥ जन्म ब्रह्मकुल बीच कंठ कंतन करि करिकै ॥ कियौ समर्च
न शंभु सीस आंगे धरि धरिकै ॥ शक हुयै है शक्ति चंड उ दंडन

दंडन ॥ कंदुक इवकै लाश धारिकी नै कर मंडन ॥ के परम
 पराक्रम पुंज जुत यहै कर्म अनुचित करत ॥ हरि धर्म पति
 रघु वीर की तन कन मन लज्जा धरत ॥ ४५ ॥ रावन मुनि वह बच
 धीय लागी निरधारन ॥ यहै किधौ मैनाक करत मम मार्ग निव
 रन ॥ शक्र बज्जतै डरत काहि मम सन मुख आवत ॥ नाहि गरुड
 निज नाथ सहित मोहिन बिसरावत ॥ अब जानि लियौ शठज
 रठ वह गिह जटा यूनाम है ॥ इत आवत निज वध काज जड जे
 है द्रुत जम धाम है ॥ १० ॥ पुत्रि सीय जिन डरहु दुष्ट जे है नहि आ
 गै ॥ रै निशि चरनी च काहि मम भय करि भांगै ॥ गहिरघु कुल
 मरिग दार किनै जे है रेत सकर ॥ करि कै चंचु प्रवेश तोरि हौं ध
 मनी धसकर ॥ द्रुत दशहु दिशा दिग देव दश करौं सद्य संतु सस
 दश मत्स्य काटि दश मत्स्य तब ऊरन नृप दश रत्न अब ॥ ११ ॥ कर
 त अछ बिच्छे प दलत धुज चक्र चूर्ण कृत ॥ मर्दत युग हय हन
 त रच्छ पति किय दृगा आवत ॥ गर्जत तर्जत रुंधितिर स्कृत करत
 ताहि अति ॥ मगरो कत छिन मध्य छिन कता डंत गिह पति ॥ इम
 छिन आकर यत शस्त्र तिहि छिन अब लुपत बस्त्र वर ॥ पुनि प्रच
 लत नमतरु ऊर्धगत अति अद्रुत कीनौं समर ॥ १२ ॥ गिह रा
 ज जब जुह निरयि सह कुह निशाचर ॥ चुनि चपेट शिल सदृश
 गहन पीस्यो पंखी बर ॥ कछुक प्रान अवशिष्ट पच्छि परियो उर वी
 पर ॥ राम राम श्री राम होत धुनि गिर गुरवी पर ॥ चित चहत चारु
 रघुवर दरस तिहि तै तजत न प्रान है ॥ धुव ध्यान धरत विभु चरन जु

गनहि अभिलाषा औ न है ॥ १३ ॥ जिय किय शोच जटायु कछु न
 मोतै बनि आई ॥ मुधा गयो मम जनम प्रथि पप्रीती न निभाई ॥
 नहिर छन बैदेहि बीस भुज भुजान मोडी ॥ अकहु मुड्यो न मत्स्य सा
 वती पाचहु जोडी ॥ निरख्यो न नयन भरि राम मुख नाहि कछु की
 नौं सुकृत ॥ हौं भाग्य रहित का करि सकौं को मम गिनि सकि
 हैं कृत ॥ १४ ॥ दोहा वृत्त ॥ इम मूर्छित करि गिह कौं कियो गौं न
 लंकेश ॥ विविध भाति बिलपत सिया व्याकुल हृदय विशेष ॥
 ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिपली दपजनाधिपालरावतजी श्री दूल
 ह सिंह जी विज्ञापित कविटीकार मांगज गोविंद राम बिरचिते
 श्री वर बिलासे जटायु मूर्छा वर्णनो नामे काव्यो ज्ञासः ॥ ११ ॥ ॥
 ॥ ॥ षटपद वृत्त ॥ ॥ अहं हारम हारम रा नाथ हारघु पति
 सुंदर ॥ हाजग वीर सुजान प्रचुर पुह वीरा पुरंदर ॥ हादश रथ नृप
 नंद सच्चिदानंद बृन्द निधि ॥ हा प्रिय पीतम परम रम्य विपरीत भ
 यो विधि ॥ हा कृपा सिंधु संकट हरन दीन बन्धु अशरन शरन ॥ व
 र विदित विमल बारिज बरन चरन चारु मंगल करन ॥ १ ॥ दोहा
 वृत्त ॥ कुंदत निमि नृप नंदिनी जगत वंदनी सीय ॥ कुररी इ
 व कूकन करत धरत न धीरज धीय ॥ २ ॥ अति अविलंबिन ग
 गन मगल लै जात लंकेश ॥ लखि वानर गिरि सिंघर पर निजा
 भरन अशेष ॥ ३ ॥ सैर ध्वजी उतारि द्रुत अलंकार निज अंग ॥ डा
 रिविये गिरि सिंघर पर उचरत गिरा अभंग ॥ ४ ॥ मारुति प्रति इम उ
 चरत ये आभूषन लेउ ॥ राम पीउ देवर लघन ति नै तात तुम देउ ॥ ५

॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ माया मृग मारी च होति हिंमना कम-
 धिमारि ॥ पुनरागमन करंत तब कछुक कुचिन्ह निहारि ॥ ६ ॥
 दाहिन दिशि दुमडिष्य पर करट रट तरव कूर ॥ प्रान प्रयान सा-
 मान कछु है संकष्ट जरूर ॥ ७ ॥ लवन धान अनु जात जुत लवि अ-
 पलवन करूर ॥ करत अमित अनुमान मन हरन हार मुद मूर ॥ ८ ॥
 ॥ छिन छिन छिन माधिविअमत धरत धीयन हिं धीर ॥ पराशाल म-
 धिभात जुत पहुँचे श्रीरघुवीर ॥ ९ ॥ सियन लवत बिलवत हिया
 किया कोरा त्रय शोध ॥ सूर्य कोरा तिन तजि दिया किया हृदय अ-
 वरोध ॥ १० ॥ शोक भीति धूजत हृदय सदय सदा रघुवीर ॥ कोरा च-
 तुर्य हुजौन सियता कस धरि हौं धीर ॥ ११ ॥ ॥ अत्र श्री हनुम-
 नाटक चतुर्थी कः ॥ ॥ षटपद वृत्त ॥ ॥ महा धीर तर सम-
 य प्रान उत्क्रमण अधिक है ॥ सिय वियोग अधिगम्य असवन
 नुत जतन धि कहै ॥ पराशाल सब अंतराल आलोकन कीनौ ॥
 कितहुन पतिवृत सहित सीय अवलोकन लीनौ ॥ हा हृदय वि-
 दीरन होत है इहिं अध्या असुकहत किन ॥ मम प्रान नतै प्यारी
 प्रिया तिहिं बिन नहिं रहि सकत छिन ॥ १२ ॥ दोहा वृत्त ॥ अने पै-
 अवलोकि उत उतरी यशु चि सीय ॥ सुधिर मनीर मनीय मन करि
 करि पिय कमनीय ॥ १३ ॥ पुनि पुनि पट जोवन लगे रोवन लगे अ-
 धीर ॥ नैन नीर धोवन लगे लगे निचोवन वीर ॥ १४ ॥ षटपद वृत्त ॥
 द्युत समय उद्योत होत इहिं को परा कीनौ ॥ प्रणय केलि अधिक
 ठपाइ इहिं करि करि लीनौ ॥ बरव्यंजन सुरतांत समय अमहर

सुभसरसत ॥ शैया सरस निशीथ सैं मैं इहिं दृगदरसत ॥ इत विधि
 बसैं तैं प्रायत भयो उतरी यर मनीय अति ॥ कमनीय कलेवर सीय
 के बस्यामानि मुहु मुहु गहति ॥ १५ ॥ चंद्राय राग वृत्त ॥ नहिं अंदर
 पद चिन है न वाहर धारियैं ॥ पराशाल यह मोर कि अन्य निहारि
 यैं ॥ मैं यह वह हौं राम कि अथवा और है ॥ परि हौं सिय बिन नहिं
 सकत जु अबध किशोर है ॥ १६ ॥ षटपद वृत्त ॥ केहरि हरि लेग
 ये कटी स्मित हिम रुचि लीनौ ॥ दृग हरि गये कुरंग कांति चुनि
 चंपक चीबौ कैलरव को किल गद्योगमन जुग भाग कियौ है ॥ अ-
 र्ध गद्योग मातंग अर्ध हरि हंस लियो है ॥ कातार बीच पशु हनि
 जथा सब बिभाग करि लेत है ॥ कांता तथैव मम मैथिली ल-
 ई हाय दुरवदेत है ॥ १७ ॥ ॥ इति श्री पिपलोद पननाधिः
 पाल रावत जी श्रीदूलह सिंह जी बिज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि
 टीका रामागज गोविन्द राम बिरचिने श्रीबर बिलासे राम बि-
 लापारं भोनाम द्वादशो ज्ञासः ॥ १८ ॥ दोहा वृत्त ॥ युक्त यही के
 कय सुता मुहियठयो बन बीच ॥ यह मम मति कित कनक
 मृग अवगान नयन नगीच ॥ १९ ॥ षटपद वृत्त ॥ अत्रा लिंगित
 ललित कमल कोरक चयवारी ॥ पीताधर अति मधुर सु-
 धा कर सम मुखवारी ॥ कलक्रीडा बिर भाव मंजु मकरन्द
 बिमर्दित ॥ शुचियह सुमन समूह देष दयिता बिन दर्दित ॥
 कित गई बचन बद रस मयी गज गमनी मृग लोचनी ॥ हासि
 ये प्रिये मम वल्लभे संतत सोच बिमोचनी ॥ २० ॥ गाहि गाहि

कांतार वनांतर विपुल विलोके ॥ बल्ली दर्य क भल्लि सदृश सब
चय अवलोके ॥ स्मार स्मार गड दूर प्रिया बहु बार बार है ॥ गि
रिवर ऊपर अटत विलोचन वारि धार है ॥ हासिय प्रिये कित
में गई कछु हुन मुख तै गई ॥ मम सर्वस सुख संग ले गई अ
ति दारुण दुख दे गई ॥ ३ ॥ भूरजरंजित सर्व वपुष विभु विलस
त के सैं ॥ दस्य मान विरहागि धरा लिंगित किय जे सैं ॥ मन्यु
बिदारित चित्त दुचित है उ चरन बानी ॥ हासीते हा जनक नंदि
नासिय सुख दानी ॥ लयते रौ आनन चंद्रमा मेरे नयन चकोर ॥
है ॥ पुनि मेरो हृदय पपीहरा स्वाति सलिल वपु तोर है ॥ ४ ॥ इहि
विधि बिलपत विविध परा शांता चहुँ ओरन ॥ फिरत धरत धु
वधीर बीर श्री अवध किशोरन ॥ हा जानकि कल कमल न
यनि सीते सुख देनी ॥ मम मन बारिज बिपिन राज हंसिनि
आहवैनी ॥ बहु विरह बन्हि अति दग्ध उर दीन भयो हृग ज
ल भरो ॥ किहि ठोर जाय कासों कहों किहि दिशि अवलोक
न करों ॥ ५ ॥ गिरिशिवरथित वृच्छ लतावर बायुन बीजित
कौन गयोगहि सीय लखी काहू कहू नुम इत ॥ चारु चषी वि
म्बोहि विपुल जघना रसना रदि ॥ सीता नीता केन वह ना
गिन्द्र काचिकटि ॥ तेतरु बूझत तुम कौन हो आप कहत
हों राम हों ॥ नृप अवध ईश दशरथ तनय शोक अनल धिय
धाम हों ॥ ६ ॥ हे गोदावरि पुन्य वारि पुलिने तै दूखी ॥ कम
ल लैन मृग नैन इतें आवत न बिसेयी ॥ बर बिनोद क

छुकरन बिमल वारी बिच विलसी ॥ अमे वूझत फिरत रई मूरति
हिय थिलसी ॥ इम प्रतिपाद पप्रतिनग पठत प्रत्यापग प्रत्यगरत ॥
पुनि प्रति वरहिण प्रत्येण प्रति जानकि जाच ततित अटत ॥ ७ ॥
दोहा वृत्त ॥ पुनिल कमन प्रति प्राप्नुवै विल्लव वचन वदंत ॥ विपु
ल विरह उन्माद वस बाधर सम विलसंत ॥ ८ ॥ षट् पद वृत्त ॥ को
हो तुम कहू कहा यह हे नाथ नाथतर ॥ दास लच्छमन नाम आप
में कौन आर्य वर ॥ ॥ आर्य कोन श्रीराम बिजन बन कहा करत इ
त ॥ देवत देवी दिव्य कोन देवी सिय संझित ॥ सिय नाम अव
न सुनि बिकल है विविध भाँति बिलपन लगे ॥ हा जनक रा
जतन ये प्रिये विरह पयो निधि माधि पगे ॥ ९ ॥ दोहा वृत्त ॥ इ
म बन बन डूँडत फिरत सहसो मित्री राम ॥ विलयत बिलपत
चकित चितनहि जित तित विश्राम ॥ १० ॥ अतेयें निरखत भये
गिह जटायू अचेत ॥ अरु रावन रथ भग्न लयि उचरत राम स
चेत ॥ ११ ॥ दशरथ नृप को मित्र वर शत्रु निसूदन हार ॥ ता प्र
ति प्रभु उचरन लगे मूर्छित नयन निहार ॥ १२ ॥ पूछत प्रभु प
च्छेन्द्र प्रतिकरी घोर घन घात ॥ कौन कुटिल वृत्तांत सब मोहि
सुनावहुनात ॥ १३ ॥ तब बिलोकि विभु वदन वर बदत जटायू वै
न ॥ बर नत अब ऊदत सो सुनियें नीर जनैन ॥ १४ ॥ निश दि
न शशिरवि अर्ध सब रावन निज चित चीन ॥ साम लयच्छ
सितायमी बैदेही हर लीन ॥ १५ ॥ किरीट वृत्त ॥ देवन को
दिन अर्ध लखो यह लेख कियें चित चेत चितावत ॥ पिउन

की निश अर्ध कहैं जिहितैं अधपच्छ प्रतच्छ पियावत
 ॥ आठ कला जुत अर्ध शशी पुनि मध्य दिने रवि अ
 लयावत ॥ निर्मल पच्छ भयैं भृगु वासर अष्टमि योस
 री सिय गावत ॥ १६ ॥ दोहा वृत्त ॥ चैत शुक्ल तिथि अष्टमी
 भृगु वासर वरतंत ॥ मध्य दिवस माधि मथिली रावन हरी
 असंत ॥ १७ ॥ षट्पद वृत्त ॥ यह सुनि बोले राम भग्न
 किम कियो महारथ ॥ बज्रां कूर इव कूर तुंड धनु यडे गि
 पथ ॥ हे सीर ध्वज राज पुत्रि तू धन्य लयावत ॥ पंचानन
 पच्छी न्द दशानन कुंजर यावत ॥ अतिभयो भूरि संग
 म इत सौतैं निराव्यो नयन भरि ॥ संचार दशानन मथ
 पर भोज टायु समरथ करि ॥ १८ ॥ पुनि जटायु प्रतिक
 हत राम भो तात सुनहु मम ॥ तुमरे तेज प्रताप स्वर्ग पद
 पावत हो तुम ॥ भलैं सिधावहु स्वस्ति सहित पै अंक
 कहत हों ॥ कांता हरन वृतांत तात ढिगन कहु चहत
 हों ॥ हे राम नाम जो मोर तो कहु थोडे से दिन न मैं ॥
 तित रावन ससुत संबधु जन अहे कहि है छिन न मैं ॥
 १९ ॥ ॥ इति पिपलोद पत्र नाधिपाल रावत जी श्री दूलह सि
 ह जी विज्ञापित कविटीकारा मांगज गोविंद राम विरचिते
 श्री वर बिलासे जटायु स्वर्ग संप्राप्ति वर्णनो नाम त्रयो दशो
 सः ॥ १३ ॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ ॥ तदनंतर श्री राम विपिन वि
 चरत मृग देये ॥ इन दुयन के वपु प्रपंच मारीच विसेये ॥ प्राण

बल्लभास्लेख विपुल विस्लेख कियो है ॥ मृगी चक्र वध ठानि च
 हत मृग बिरह दियो है ॥ अतिमम अमोघ नालीक सब दूर घा
 त नित करत है ॥ पै प्रिया सदृश सोहत नयन इहिं कारन जिय
 डरत है ॥ १ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ अने पै गिरि अस्त गये रवि
 आय है ॥ उदय भयो शशि तस्य सदृश वपु थाप है ॥ देन
 लख्यो संताप कमल दल नैन है ॥ अरि हाँ उचरत है श्री राम
 लच्छ प्रति बैन है ॥ २ ॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ ॥ चल तरु त
 ल सोमि त्रितरंग तै ननु तापत अस ॥ लच्छ कहत भो ना
 थ निशामधि मिहिर कषाकस ॥ चंद्रोदय है यहै सुनत प्र
 भु पुनि बच बोले ॥ बच्छ लच्छ मन ललित कथं वच्छ थ्य
 ल तोले ॥ सोमि त्रिबदत सुनिये बिभो लषिकुरंग लच्छ
 नल सत ॥ हाहा कुरंग लोचन सिये चंद्राननि तव बिन न
 सत ॥ ३ ॥ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ ॥ मंदिर गिरि करि मथि
 त भंयो नहिं पात की ॥ जास्यो नहिं तम तुच्छ तोहि घन घात
 की ॥ हों तरे सत टूक करी इक छिन क मैं ॥ परि हाँ जो होत
 नहिं बदन बिदेही बन क मैं ॥ ४ ॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ ॥ दाव द
 हन तरु शिखर निवारहु निर्झर जल कर ॥ नाहिं दवानल
 नाथ उदय गिरि समुदय हिम कर ॥ वच्छ सुधा कर स्वच्छ
 धूम धारन किम कीनौ ॥ नाथ नाहिं यह धूम छौं निछाया
 चित चीनौ ॥ हाधर निसुते सीते प्रिये कांते कुत्र गता असी
 तब विरहानल संदग्ध हिय तदु परि जारत यह शशी ॥ ५

॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ रामचन्द्रकरुणा सहित बदनवचन
 अतिरम्य ॥ प्राणप्रियापदुमेयसीपरमप्रेम अधिगम्य ॥ ६॥
 चंद्रायणावृत्त ॥ ॥ अंक कहत कविकेपि कहत केउप
 कहै ॥ कितनै कहत कुरंग बिंब निरशंकहै ॥ प्रवदत बिदु
 षकितेक छाये यह भूमहै ॥ परिहैं हौं जानत जियविरहदह
 न धुवधूमहै ॥ ७॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ रेरे निर्दय दुर्निवार कंद
 र्प मनोभव ॥ पंकेरुह प्रोत्फुल्ल बाण संवराणु संवराणु तव ॥ त
 जुधनुषधरिधीय कहा पुरुषास्मो प्रति ॥ कांता संग वि
 योग जातहुत भुकज्वाला अति ॥ वपु होय रयौ संदग्ध अति
 ताहि प्रहारत है कहा ॥ सब शूर पुरुष पावत नहीं मृतक मारि
 कै यशमहा ॥ ८॥ ॥ आठवां प्रणिमग्न तोर शर पंच पंच शर ॥
 मदग्नाग्नी निर्दग्धय है वपु होहु निरंतर ॥ निपट निरायु
 काम जीति सकि है न अपर जन ॥ सुखी हूजियो सर्व दुख
 इक हौं हि रहै मन ॥ अति उत्तम तैं उतम अधिल यह द
 त अवलो कियै ॥ इत अेक आपसंकष्ट सहि दुख विलां
 को गे कियै ॥ ९॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ तरु असोक विकसित विम
 तिहिं तल गहि विश्राम ॥ चुपरहि कछु किंचित समय व
 दत वचन श्रीगम ॥ १०॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ ॥ नू नव पल्लव
 कर कर्म प्रिया गुनन कर ॥ आवत अनिश अभंग ति
 ली मुसद गनतो ऊपर ॥ तथा काम धनु मुक्त शिली मु
 मो प्रति आवत ॥ कांता यद तल हती हीय उभयन हर स

वत ॥ समभाव मोरत बसकल है भिन्न भाव इक यह बसन
 लख मुहि सशोक विधि नैं कि यौ तव अशोक अभिधाल स
 त ॥ ११॥ ॥ सोरठा वृत्त ॥ हिय परध स्योनहार सिय वियोग भ
 य मानिजिय ॥ तरुवर सरित पहार अब अनंत अंतर बसन
 ॥ १२॥ ॥ षट्पद वृत्त ॥ चंद्र चंड कर सदृश पवन मृदु गति पवि
 ओयम ॥ मलयज लेप फुलिंग सुमन मम सृचि अग्र सम ॥
 रात्रि कल्प शत तुल्य प्राण भासंत भार इव ॥ यहै बेदेही वि
 रह सैं संहार काल मिव ॥ हाहत कितक संकट सैं कौन
 सुनै कासैं कहैं ॥ हिय हटकत हटकत फटत है अटतरटत
 जकि थकि रहैं ॥ १३॥ ॥ वपु भृश कृश तापायमो सविरलाय
 गयो है ॥ नैन निरंतर नीर चलैं वारी नरयो है ॥ दीर्घ दीर्घ
 निस्सास लियैं सब श्वसन अस्थो है ॥ हरन होत ही तीय
 तेज तर तोम घस्थो है ॥ इम चारतत्व भौगवन तनु रयो भृ
 न्य अवशिष्ट है ॥ यह कहा राम जीवत जउ कुलिश कठिन
 अति क्लिष्ट है ॥ १४॥ ॥ इति श्री पिपलीदपत्तनाधिपालराव
 तजी श्री दूलह सिंहजी बिज्ञापित रत्नपुरस्थ कविटीका ॥
 रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री वर विलासे श्री राम चं
 द्रविरहदशावर्गानिनाम चतुरदशोल्कासः ॥ १४॥ ॥ ष
 ट्पद वृत्त ॥ लच्छ सहित श्रीराम महा बनविच विचरत
 उत ॥ गौरगवय मातंग शरभ शार्दूल कोल रुत ॥ कोला
 दल आहूत भूत वेताल पालहैं ॥ समुत्ताल कंकाल काल

नीहारकलितकाश्मीर फटिक रिता ॥ सुख शंभु कर्पूर कुं
 द खवदात अपरि मित ॥ महामुजंगम परम स्फीत फुत्कार
 प्रफुल्लित ॥ फणामणि नमधियंजरीट क्रीडंत बिलो कित ॥ हु
 व वामनयन सकरुण सजल इतर स बिसमय मोद मय ॥ उभ
 चिन्ह अशुभ शुभ सूचना भये संगमन प्रीति भय ॥ १० ॥ सं-
 स्थित कोल कपोल काकरव वाम भाग हुव ॥ कहत व्यस
 न अति दुयित उयित संतत सब जन भुव ॥ वरत तहै दिन रैन
 कहा अब अग्र दिषा वहि ॥ पुनि दच्छि न दिशि यंजरीट शु
 भ लच्छ लया वहि ॥ आधिरूढ भुजंगम फणान पर क्रीड
 त यह है राजप प्रद ॥ मम अंक संग दोनो भये हे यह अतिः
 आचर जपद ॥ ११ ॥ ॥ सोरठा वृत्त ॥ ॥ भरे नयन जुग
 नीर किन विश्रमि करि चिंतवन ॥ सकरुण श्री रघुवीर
 वृजन लगे भुजंग सौ ॥ १२ ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥ तरु
 पल्लव इब लोल जिह्व बंधुक सुमन सम ॥ तरे नीर जनय
 न भूरि भ्राजंत भुजंगम ॥ हौं बूझत हौं तोहि पवन भुक क
 हु करुणा करि ॥ कोमलांगि शर दिंदु मुयी देयी कोउ सु-
 न्दरि ॥ इम सुनत वचन रघुवीर वर रचन रम्य सुकरुण
 सने ॥ बोल्यो बिनति हुड वै न सुभ भुजंग राज हिय हित धने
 ॥ १३ ॥ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ ॥ गर्ड गर्ड वपु चंप वर्गा-
 श्रीन सनी ॥ कुंकुम चर्चित अंगि करुण रसमें सना ॥
 शीतलांगि आकाश गंग डव भ्राजिता ॥ हरि हौं तारा गन

मधि चन्द्रेय समराजिता ॥ १४ ॥ कहत राम इहि व्यसन
 अधिक काञ्चौर है ॥ कहा होय गो अग्र अभ्युदय मोर है ॥
 मरन शरन वर मोहि नाहि वह राज है ॥ परि हौ वह लख मन
 कौ होउ सुसुखद समाज है ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिपलोद पत्त
 नाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापित रत्नपुर स्थ
 कविटी कारा मांग ज गोविंद राम विरचिते श्री वर विलासे
 शुभा शुभ शकुनावलोकनो नाम पंचदशो ल्लास ॥ १५ ॥ ॥
 षट् पद वृत्त ॥ ॥ वामतिरस्कृत कियो कियो दाहिनी पुर स
 कृत ॥ धन्य सुवन्य शरण्य अन्यानी गाहन भृत ॥ किस कं
 धाद्री गेद्र रुद्र अवतार मारुती ॥ दीनी सकल सुनाय ता
 हि निज गरसि आरती ॥ लेख्यो सीय हरि कोउ कित तुम
 ता को देखी सुनी ॥ कपि दृष्ट होय संकष्ट हर वदवानी चेत
 सिचुनी ॥ १॥ सुनियै कृपा निधान कापि रामा अंबर मग ॥
 हौं थित हौ तिहि समय अहोइ तमें याही नग ॥ पापरजनि
 चर प्रवल कियै आकर्षण अति द्रुत ॥ जावत हौ जिहि बेर अ
 वण धुनि आई अद्रुत ॥ हाराम प्राणायति जहिरि पुं मुख उचर
 त डारत भई ॥ मणि भूयित भूयन भवते अवलोकन करियै
 सई ॥ २ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ आजनेय इम कहि गिरा भूय
 न मव्य समग्र ॥ अबिल वितत आनि कै रवे राम के अग्र ॥
 ३ ॥ राम सजल चय सह करुण गद गद गिरा गंभीर ॥ भूष
 न निरखे नयन भरि बाढे पुलक शरीर ॥ ४ ॥ हे भूषन वैदेहि

के निश्चय मेरे जान ॥ तमहु लच्छमन निरयि रैं करि लीजें
 पहिचान ॥ ५॥ ॥ लक्ष्मण उवाच ॥ ॥ नाथ न जानत ओ
 र मैं कुंडल कंकन आदि ॥ पहिचानत नूपुरन कौं अनिज
 अंगि अभिवादि ॥ ६॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षट् पद वृत्त
 ॥ ॥ सिय आभूयगा आयिल राम निज हृदय लगायें ॥ जु
 गलनयन भरि नीरवयन गदगद गिर गायें ॥ इतर आभर
 न धरत हुती नहिं हार हीय पर ॥ इत कहु अंतर सहिन सक
 त जान कीजीय पर ॥ फलपंक्ति भेद कौं प्राप भौ यह कीनों
 निरधार है ॥ अवहारन की गिनती कहा अगिनत परे पहा
 र है ॥ ७॥ मुद्रा मुय मैथिली लये बिन गमन चहत चित ॥ प
 रम हंस यह जीव तदपि नहि जाय सकत कित ॥ बैदेही बहु
 विरह बन्धि ज्वाला बिदग्धतनु ॥ तिहि नैं भौ परवश्य पंगु प्र
 चरत न बनत जनु ॥ पुनि पवन पुत्र प्रापत किये आभूयन अव
 लोकि उन ॥ खुवि गये प्रागान पयान किये आजनेय आलाप
 सुन ॥ ८॥ अनुनय सह हनुमान बिनय वर वचन उचारत
 पुहु मिपाल श्री राम हीय नहिं हजै आरत ॥ त्यजनि जटायु
 शोक अंकल केश लोक सह ॥ जीतन कौं समरत्य कहू संशय
 नहिं यामह ॥ यह गिरि सुग्रीव निवास थल तित मै प्रभु पगु
 धारि रैं ॥ रघुवंश नाथ नर नाथ उत बानर नाथ नि हारि रैं ॥ ९॥
 ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तदनंतर हनुमान लच्छमन राम स-
 हित तित ॥ गवन किये अविलंब सभय सुग्रीव हुते जित ॥

तीनहु कौं कपि नाथ लयत भौ उत मै कैसैं ॥ मूर्ति मंत मनु अ
 नि अंग धरि आवत सैं ॥ है गार्ह पत्य डक अनल अरु द-
 च्छिदहन द्वितीय है ॥ अभिधान अमल विल संत उहि आ
 हव नीय तृतीय है ॥ १०॥ अनिल ज्ञानन अक निराम का
 ताद्वि वृत्त ॥ बानरेंद्र वरनंत प्रवल वाली कृत कृत ॥ विद्यमा
 न पति होत यहै अति अकृत कियो है ॥ मारन कारन ताहि
 राम पन नुरत लियो है ॥ श्रीरघुवर कियो अधिज्य धनु सुबहु
 ल रोयान ल प्रवल ॥ कांता पहरन की ताप अति हुती अनुभ
 वित भाति भल ॥ ११॥ ॥ चंद्रायण वृत्त ॥ ॥ नमन ससं
 धम कियो अवध के इंद्र कौं ॥ आलिंगन करि प्रचुर प्रेम सु
 क पीद कौं ॥ द्रुत भावि निकंदर्प के लिम विलास है ॥ परिहो
 विस्मृत पुनरभ्यास करत मनुताम है ॥ १२॥ ॥ दोहा वृत्त ॥
 कपि पति वृद्धत मारुती दशरथ नृप सुत चार ॥ ताटक अं-
 तक कौन कहू बोले पवन कूवार ॥ १३॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥
 राम भरत अरु लयन शत्रुहन सुवन चार चुन ॥ दशरथ
 नृप के विदित विश्व कपिराज अवन मुन ॥ दिन कर कुल संतान
 बल्लिवर गुच्छ सुमधुकर ॥ राज पुत्र सुवि राज मान तिन मध्य
 धीय धर ॥ ताटका काल रात्री हुती राम चंद्र प्रत्युष यह ॥ जि
 हिं चरित कथा कल कंदली मूल कंद सम स्वाद गह ॥ १४॥
 इति श्री पिपलोद पन्न नाधिपाल रावत जी श्री वृलह सिंह
 जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि टीका रामांगज गोविंद राम

विरचिते श्रीवर विलासे श्री राम सुग्रीव समागमो ना॥
 मयोडणो ज्ञासः॥१६॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षट् पद
 वृत्तं ॥ ॥ सुनत प्रतिग्या परम राम मुख वारिज विकसी॥
 वाली पछये सप्रताल अवली उन निकसी ॥ देख सात तरुता
 ल सात अंतर्गत अति द्रुत ॥ प्रकृतिकुदिल करि कुह जुह ॥
 कारन आये उत ॥ सो मित्रिकिये ते सरल जिन शेष पृथु थि
 त मूल किय ॥ निज चरन भार करि लच्छ मन दिव्य अस्वर धु
 राजलिय ॥१॥ ॥ सारखा वृत्तं ॥ ॥ सुनिये कृपा निधान व
 दत लखन साशंक वच ॥ इन पै शर संधान सावधान कै ॥
 कीजिये ॥२॥ कीजै सात निपात अक साध डक विशिष्य
 करि ॥ करत प्रहार क घातया मै कै जो अन्यथा ॥३॥ जिन
 शां किये सुजान राम कहत सावग्य हुइ ॥ हरत अस ज्ञान प्रम सज्जन
 सज्जन रहत ॥४॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥
 राम लियो कर वान बानि मुख लगे उचारन ॥ कियो होय दृढ
 भाव कुशिक नंदन पदधारन ॥ अरु पुनि जो मै होउं निस्कृ
 त विप्रगेय विन ॥ अन्य अंग नाम अग्यो मम मनन अक
 छिन ॥ तो सप्रताल कौ भेदिके प्रविशहु शर पाताल मह ॥
 इम कहि करि धनुषहिं सज्ज करि कियो बाण संधानतह ॥५॥
 कदली बाल प्रकांड भंग सम सत्वर कीनो ॥ अक बान म
 धि सप्रताल तरु वेधन चीनो ॥ सप्र सप्ति गज सप्र सप्र मुनि स
 प्र सरित्यति ॥ सप्र द्वीप अरु मानु सप्र भयभीत भये अति ॥ स

ग्यान सांम्यता ताल सम हनि तिन कौं हम कौं हनै ॥ जेसा
 तसात जितनै हुते ते सब धवगनै घनै ॥६॥ कृत्यो बाण क
 वान ताल ताल तरु सात फोरिके ॥ धस्यो धरा तल ले प्रमा
 न तिहिं तरुत दोरिके ॥ भंग भुजंग मभूरि भीत अंबर पुनि
 आयो ॥ पुंष धुनाय धुनाय भाव विधि कौ दर सायो ॥ की
 नौ न पराक्रम प्रवल कछु रथो शेष अवशेष है ॥ निशेष
 षव सुंधर दारिबो यामै कहा विशेष है ॥७॥ सुनत अवन स
 ग्राम राम हत सप्रताल सब ॥ निरपराध वध कियो तरुन
 अस जिय जान्यो जब ॥ कोषानल प्रज्वलित हृदय निक
 स्यो वह वाली ॥ गिरि चत्वर बिच चलो निरंतर संगर शा
 ली ॥ फटकारी पुच्छ अति उच्छलत कट कदात किल कि
 ल करम ॥ उच्छाह कव्यो बहु वच्छ थल अति अधीर थी
 रन धरत ॥८॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ तारा भई सहस्र मो
 द मन मै नहिं भावत ॥ पुरुषोत्तम श्री राम परम कृपा पु
 नि पावत ॥ चिर विरही सुग्रीव वच्छ थल लूठि होत रन ॥
 प्रियतम प्राण सुजान काज सिधि है संपूरन ॥ इति मन्य
 मान गिरि शिखर पर आरोहन कीनो कलित ॥ सं
 ग्राम राम अरु वालिको लोयन भरि लखि वेललित ॥९॥
 शैल शिखर संचरत मनोरथ बितरत तारा ॥ पारागत शोका
 धि वीर सुग्रीव सुदारा ॥ प्रभु नारा नाराच प्रवल धारा धिय धारा
 ॥ हारा वलित संत्यक्त स्वस्त धम्मिल्लन भारा ॥ किल किला ॥

प्रालिबाली महाकुटिल कूचाली कूर है ॥ प्रिष संतापी ॥
 पापी परम जमपुर जलादि जरूर है ॥ १० ॥ गिरी गरिम गं-
 भीर महा महि मालाधिवाली ॥ कहन लच्छ सन राम बच्छ
 निरबहु बल शाली ॥ बहल कल कला करत बानराली प्र-
 ति पाली ॥ शिव शिव तुमुलोत्काल चलित अतिकृत घृणि
 माली ॥ लांगुल बलि प्रोषत शिखर कवलित कोशिक कुलि
 शकिय ॥ दौदंड शैल प्रहरण निपुण किहिं करि कै योद्धव्य
 जिय ॥ ११ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ राम धीरता धारिधिय ना
 रायण नाराच ॥ सज्ज कलित कोदंड करि सुरचन बचन उवा-
 च ॥ १२ ॥ ॥ चंद्रायण वृत्त ॥ ॥ पुरा मूर्द्ध अभिसिक्त सगु-
 ण बर विप्र है ॥ वेद मंत्र करि कियो कलित तब छिप्र है ॥ तिन
 के तेज प्रताप करहु उच्छिन्न है ॥ परि हौं दारुण परतिय हा-
 रिमाणा वपु भिन्न है ॥ १३ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ पौरंदरि परदा-
 र को हरन पराभव आप ॥ ब्रह्म तेज परि पूर्ण पटुल सतरा-
 म सर आप ॥ १४ ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ पायो वीर प्रमान
 दानरघुपति वर विलसत ॥ पावक प्रलय समान रोचि विजु
 रंजिम उलसत ॥ हृदय भेद कृत बालित बै पौरंदरि उचरत ॥
 सब के शिर पर काल यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता पुरं-
 दर ता सरि पुरावन अनिहत इतर्यो ॥ यह सत्य हृदय साल
 त प्रवल हौं सशक्त पर पद गयो ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिय
 लोद पत्तनाधि पाल एवत जी श्री बृलह सिंह जी विज्ञापि

त कवि टीका रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री बर बिला
 से बालि हृदय भेद नो नाम सप्त दशो ह्लासः ॥ १७ ॥ ॥
 षट् पद वृत्त ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कै सकरुण सविधा
 द राम उचरत लछमन प्रति ॥ अणु सौमित्र यहै काजकी
 नौ अनुचित अति ॥ गिरिगह्वर माधि विहित योनि निज मानि
 महत सुख ॥ अनपराधि अनुभवत ताहि दीनो महान दुख
 किय महावीर वाली हनन तास प्रवल परिताप है ॥ हौं मं-
 द भाग्य हूँ कहा अब मुहि सिय सुख प्राप है ॥ १८ ॥ सिरधुना
 य पछताय राम कह पौरंदरि प्रति ॥ तू ऊरनर न तात बात य
 ह जग जाहर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ प्रसर हरि दुर्यश दीनो
 गौतम मुनि के शाय नियंत्रित भुजबल कीनो ॥ किय जनक
 जास रावन त्वया कक्षागर्त कुलीर है ॥ हूँ वै विसल्य तब स-
 ल्य हर जाग्रत अंगद वीर है ॥ २० ॥ दोहा वृत्त ॥ मेरी पाय सह-
 यता अंगद हनि है ताहि ॥ कै विसल्य कीजे गवन रावनर
 हि है नाहि ॥ २१ ॥ ॥ बालिरुवाच ॥ ॥ कह वाली सु-
 ग्रीव जो कारज करि है तोर ॥ सो हौं कानहिं कसिकत निरप-
 राध बध मोर ॥ २२ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥
 राम नयन भरि नीर बिमल बर बीले बानी ॥ सुनहु पुरंदर नं-
 द कहत हौं तोहि बबानी ॥ निरपराधि सुख अर्थ तोर बध
 भयो मोर कर ॥ हनहु अबैं तू मोहि शुद्धि हूँ मम सत्त्वर
 मत होहु जनक जाविरह अब अविरत उर इच्छत यही ॥

शालिबाली महाकुटिल कूचाली कूर है ॥ प्रिष संतापी ॥
 पापी परम जमपुर जलदि जरूर है ॥ १० ॥ गिरी गरिम गं-
 भीर महा महि मालाधिवाली ॥ कहन लच्छ सन राम बच्छ
 निरखहु बलशाली ॥ बहल कल कला करत बानराली प्र-
 तिपाली ॥ शिव शिव तुमुलोत्काल चलित अतिकृत घृणि
 माली ॥ लांगुल बलि प्रोषत शिखर कवलित कौशिक कुलि
 शाकिय ॥ दौंदंड प्रौल प्रहरण निपुण किहिं करि कै योद्धव्य
 जिय ॥ ११ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ राम धीरता धारिधिय ना
 रायण नाराच ॥ सज्ज कलित कोदंड करि सुरचन बचन उवा-
 च ॥ १२ ॥ ॥ चंद्रायण वृत्त ॥ ॥ पुरा मूर्द्ध अभिसिक्त सगु-
 णा बर विप्र है ॥ वेद मंत्र करि कियो कलित तब छिप्र है ॥ तिन
 के तेज प्रताप करहु उच्छिन्न है ॥ परि हां दारुण परतिय हा-
 रि प्राण वधु भिन है ॥ १३ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥ पौरंदरि परदा-
 र को हरन पराभव शाय ॥ ब्रह्म तेज परि पूर्ण पटुल सन रा-
 म सर आय ॥ १४ ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ पायो बीर प्रमान
 बानर घुपति बर बिल सन ॥ पावक प्रलय समान रोचि विजु
 री जिम उल सन ॥ हृदय भेद कृत बालित बै पौरंदरि उचरत ॥
 सब के शिर पर काल यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता पुरं
 दर ता सरि पुरावन अनिहत इतर यौ ॥ यह सत्य हृदय साल
 त प्रवल हौं सशत्य पर पद गयो ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिय
 लोद पत्तनाधिपाल एवत जी श्री दूलह सिंह जी बिजायि

त कवि टीका रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री बर बिला
 से बालि हृदय भेद नो नाम सप्त दशो ह्लासः ॥ १७ ॥ ॥
 षट् पद वृत्त ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ कै सकरुण सविधा
 द राम उचरत लछमन प्रति ॥ अणु सोमित्रे यहै काज की
 नौ अनुचित अति ॥ गिरिगहर मधि विहित योनि निज मानि
 महत सुख ॥ अनपराधि अनुभवत ताहि दीनो महान दुख
 किय महावीर वाली हनन तास प्रवल परिताप है ॥ हौं मं
 द भाग्य हूँ कहै अव मुहि सिय सुख प्राप है ॥ १८ ॥ सिरधुना
 य पछताय राम कह पौरंदरि प्रति ॥ तू ऊरनर न तात बात य
 ह जग जाहर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ प्रसर हरि दुर्यश दीनो
 गौतम मुनिके शाय नियंत्रित भुजबल कीनो ॥ किय जनक
 जास रावन त्वया कक्षागर्त कुलीर है ॥ हूँ जे विसल्य तब स-
 ल्य हर जाग्रत अंगद वीर है ॥ २० ॥ दोहा वृत्त ॥ मेरी पाय सह
 यता अंगद हनि है ताहि ॥ कै विसल्य कीजे गवन रावनर
 हि है नाहि ॥ २१ ॥ ॥ बालिरुवाच ॥ ॥ कह वाली सु
 ग्रीव जो कारज करि है तोर ॥ सो हौं कानहिं कसिकत निरप
 राध बध मोर ॥ २२ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥
 राम नयन भरि नीर बिमल बर बोले बानी ॥ सुनहु पुरंदर नं
 द कहत हौं तोहि बयानी ॥ निरपराधि सुख अर्थ तोर वध
 भयो मोर कर ॥ हनहु अब नौ मोहि शुद्धि हूँ मम सत्त्वर
 मत होहु जनक जाविरह अब अविरत उर इच्छत यही ॥

मुनिदैन कमल दल नैन के वाली तब बोल्यो सही ॥५॥
 दोहा वृत्त ॥ जब लौं हौं हनि हौं न तुहि तब लौं शामन सक
 स ॥ व्हे निवास नज दीजिये स्वर्गवास अभिलास ॥६॥
 म कहिके श्रीराम प्रति वाली छंडे प्रान ॥ तिहि वच कौं सच
 करन बिभु रघुबर परम सुजान ॥७॥ ककु ककाल सेवित
 शामन संजमनी पुर बीच ॥ प्रहरि पुरंदर पुत्र कौं निबसे न
 यन नगीच ॥८॥ पुनि बिषाद परि हार करि किय पौरुष
 अवलंब ॥ परम सुहृद सुग्रीव कौं दियो राज अविलंब
 ॥९॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥ आदि किये अभियेक सुहृ
 द सुग्रीव राजपद ॥ यौवराज्य अभिशिक्त वालि सुन की
 नौं अंगद ॥ पवन जनय ले आदि कपिन सैना पति कीनि
 बिन प्रांका प्रस्थान ललित लंका प्रति चीनै ॥ तब वर्षा का
 ल बिनीन की कपि भट मंत्रिन बिनय किय ॥ मुनि माल्य वा
 न गिरि प्रवर परवर निवास जानत जिय ॥१०॥ ॥ चंद्रायण
 वृत्त ॥ ॥ नाहिं राम तै इतर प्रर तर कोय है ॥ तिय हति
 सम नहिं अन्य परा भव होय है ॥ तदपिन कीनौं सपदि समु
 द्र प्रवेश है ॥ हरि हां बंधन सेत करंत आप अवधे श है ॥११॥
 नाहिं राम समबली सकल संसार है ॥ दार हरन सम अहं
 कारन निहार है ॥ तदपि प्रतिच्छा शरद सेत दृढ बंधिया
 परि हां तदनं तर तित जाय निशाचर रंधिया ॥१२॥ ॥
 दोहा वृत्त ॥ ॥ माल्य वान गिरि शिखर चित लखन स

हित श्रीराम ॥ सुमरि सीय कमनीयता बदन बचन गुण
 ग्राम ॥१३॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥ इन्दू अंजन लिप्ता
 लित दृष्टी इव हरनी ॥ बिदुम अरुण मलान स्याम कवि सु
 वरन बरनी ॥ सिया स्वल्प सुर लेश को किला कंठ परुष स
 म ॥ बरहिन के बर बरह गरह जुन हेरत हिय हम ॥ इम ब
 रनि अंग सा दृश्य कौं जान कि गुन कीर्तन कियौ ॥ लखि
 तांडव आंड बर तडित कहन लगे पुनि भरि हियौ ॥१४॥
 ॥ ॥ किरीट वृत्त ॥ ॥ लोचन चारु समान सरोज
 तिनें यह वारि डुबावत पावत ॥ तोर मुख च्छ विछाय
 कटा समकुज्ज कृपा कर मेघ छियावत ॥ तो गति तुल्य
 हमेशा चलै गज हंस हमें दृग दूर दिसावत ॥ यावत ता
 वत मात्र बिनोदन वस्तु सबै लखि देव दुरावत ॥१५॥ ॥
 इति श्री पिपलोद पत्त नाधि पाल रावत जी श्रीदूल
 ह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि टीका रामां ग
 ज गोविन्द राम विरचिते श्रीवर विलासे वालि बधो ना
 माष्टादशो ल्लासः ॥१६॥ ॥ अत्र श्री हनु मन्नाद
 के पंचमों कः ॥ ॥ कबिरु बाच ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥
 श्रीरघुबर कह बचन बर बानर भटन सुनाय ॥ भुचि
 से निक सुग्रीव के सुचित सुनत लगाय ॥१७॥ महत व्यस
 न प्रापत भयै थिर रहत कोउ लोग ॥ लखि निसंकलंका
 पुरी कोइत आवत जोग ॥१८॥ ॥ षट् पद वृत्त ॥ ॥

मुनिदैन कसल दल नैन के वाली तब बोल्यो सही ॥५॥
 दोहा वृत्त ॥ जब लौं हौं हनि हौं न तुहि तब लौं शमन सका
 स ॥ के निवास नज दीजिये स्वर्गवास अभिलास ॥६॥ इ
 म कहि कै श्रीराम प्रति वाली छंडे प्रान ॥ तिहि वच कौं सच
 करन विभु रघुवर परम मुजान ॥७॥ ककु ककाल सेवित
 शमन संजमनी पुर बीच ॥ प्रहरि पुरंदर पुर कौं निवसे न
 यन नगीच ॥८॥ पुनि बियाद पारि हार करि किय यौरुय
 अवलंब ॥ परम सुहृद सुग्रीव कौं दियो राज आवि लंब
 ॥९॥ ॥ यट पद वृत्त ॥ ॥ आदि कियो अभियेक सुहृ
 द सुग्रीव राजपद ॥ यौवराज्य अभिशिक्त वालि मुन की
 नौ अंगद ॥ पवन तनय ले आदि कपिन सैना पति कीन
 विन शंका प्रस्थान ललित लंका प्रति चीन ॥ तब वर्षा का
 ल खितीन की कपि भट मंविन विनय किय ॥ मुनि माल्य वा
 न गिरि प्रवर पर वर निवास जानत जिय ॥१०॥ ॥ चंद्रायण
 वृत्त ॥ ॥ नाहिं राम ते इतर प्रर तर कोय है ॥ तिय हति
 सम नाहिं अन्य परा भव होय है ॥ तदपिन कीनौ सपदि समु
 द्र प्रवेश है ॥ हरि हौं बंधन सेत करंत आप अवधेण है ॥११॥
 नाहिं राम सम बली सकल संसार है ॥ दार हरन सम अहं
 काग्न निहार है ॥ तदपि प्रतिच्छा शरद सेतु दृढ बंधिया
 परिहौं तदनंतर तित जाय निशाचर रंधिया ॥१२॥ ॥
 दोहा वृत्त ॥ ॥ माल्य वान गिरि शिखर चित लखन स

हित श्रीराम ॥ सुमरि सीय कमनीयता बहत वचन गुण
 ग्राम ॥१३॥ ॥ यट पद वृत्त ॥ ॥ इन्द्र अंजन लिप्ता
 लित दृष्टी इव हरनी ॥ विद्रुम अरुण मलान म्याम कवि सु
 वरन वरनी ॥ सिया स्वल्प सुर लेश को किला कंठ परुष स
 म ॥ वरहिन के वर वरह गरह जुत हेरत हिय हम ॥ इम व
 रनि अंग सा दृश्य को जान कि गुन कीर्तन कियो ॥ लयि
 तांडव आंड वर तडित कहन लगे पुनि भगिहियो ॥१४॥
 ॥ ॥ किरीट वृत्त ॥ ॥ लोचन चारु समान मरोज
 तिनें यह वारि दुबावत पावत ॥ तौर मुखच्छ विछाय
 कटा समरुज्ज कपा कर मेघ छिपावत ॥ तौ गति तुल्य
 हमेशा चलें गज हंस हमें दृग दूर दियावत ॥ यावत ता
 वत मात्र विनोदन वस्तु सबै लयि देव दुरावत ॥१५॥ ॥
 इति श्री पिपलोद पत्त नाधि पाल रावत जी श्रीदूल
 ह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि टीका रामां ग
 ज गोविन्द राम विरचिते श्रीवर विलासे वालि वधो ना
 माष्टादशो ल्लासः ॥१८॥ ॥ अत्र श्री हनु मन्नाद
 के पंचमों कः ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ ॥
 श्रीरघुवर कह वचन वर बानर भटन सुनाय ॥ भुचि
 सै निक सुग्रीव के सुचित सुनत लगाय ॥१॥ महत व्यस
 न प्रापत भयै थिरन रहत कोउ लोग ॥ लखि निसंकलंका
 पुरी कोइत आवन जोग ॥२॥ ॥ यट पद वृत्त ॥ ॥

हुइ सहस्र हनुमान भुजन आस्फालन कीनों ॥ निज प्र
चंड दोर्दंड परम मोहत लखि लीनों ॥ देव पश्य मम अंग
असृ अंगुल मय दरसत ॥ द्वादश अंगुल पुच्छ बाहु अ
तिलयुतरसरसत ॥ अति अमित अगाध अपार है रतना
कर किहि विधतरत ॥ यह सुनत राम विस्मित भये जांबु
वानत बउच्चरत ॥ ३॥ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ ॥ देवमा
रुती यहै रुद्र अवतार है ॥ करहु रुद्र को तवन धीय निज
धार है ॥ सुनत यहै बचस्वच्छ रामनुतिकीन है ॥ हरि हाँका
रज मेर अशेष आप आधीन है ॥ ४॥ मुद्रित मन जिन क
रहु कहावपु कुद्र है ॥ लसत रुद्र अवतार कितोक समु
द्र है ॥ अघटित घटना घटन पटीयस पेवियै ॥ हरि हाँ
लंका शंका कहा गिनत मै लेवियै ॥ ५॥ दीहा वृत्त ॥ ॥
सुनत बचन श्रीराम के हिय हरखे हनुमान ॥ मनसि महा
मुद मानि कै बहत प्रवल वलवान ॥ ६॥ ॥ मनोहर वृत्त ॥
कूरम है मूल आलवाल मूल पायो निधि द्यौं दिश शाखा
सर्वशोभा की समाज है ॥ पल्लव समान मेघ सुमन नख सबे
सूर्य सोम फल दोऊ विपुल विराज है ॥ कहै हनुमान स्वामि
करुना निधान सुनो यहै ओम वृच्छ मेर कम गत आज है ॥
सुनि कपिराज की आवाज सिय सोध काज आयस उचारी
ओधपुर अधिराज है ॥ ७॥ हुकम चढ़ाय सीस बोले पुनि हाथ
जोडि इहि की पुलासा पूब स्वामि सुनि पाऊँ मै ॥ लंका इत

लाऊँ जंबूद्वीप लेय जाऊँ उत अथवा अशेष अंबु सागर सु
पाऊँ मै ॥ किंवा कइ लाश मेरु मंदर विंध्यादि आदि अद्रिन उ
वारि सेतु बंधन कराऊँ मै ॥ अहे परि पूर्ण प्रभो कीजियै हुक
म तूरा सीय इत लाऊँ लंका चूर्ण करि आऊँ मै ॥ ८॥ राजन
के राज महाराज अधिराज राम गवरी रजायस ज येव सुनि
पाय हौं ॥ सोविहौं समुद्र कुद्र लंका कौं अलंका करौं ॥ लंका
अधिपाल बेग बांधि इत लाय हौं ॥ पतिव्रत मान कीर्ता जान
कीले आऊँ नाथ अंधि पउवारि अद्रि ओघन उठाय हौं ॥ सागर
पटाय हौं हटाय वारि निधी वारि दुसुन दटाय कै अरिष्ट उचटाय
हौं ॥ ९॥ कहियै कृपा निधान होत है बिलंब मोय मारतंड वंश
के विभूषन अखंड है ॥ संजुत प्राकार सविहार तोरणादि सह
लंकालाऊँ इत केति तेई करौं बंड है ॥ जुद्ध काज कुद्र कै समु
द्रत सकल सैन्य सब कौं उठाय तित जाय करौं मंड है ॥ कबूह
असाध्य नाहि सकल सुसाध्य मम परम प्रचंड चंड मेरे दो
रदंड है ॥ १०॥ ॥ सोरठा वृत्त ॥ ॥ सुनि मारुति बर बोल
श्रीरघुवर प्रमुदित भये ॥ मंजु मुद्रिका बोल यवन सुवन अ
परा करी ॥ ११॥ लंघन करहु समुद्र सिय विसास दे मुद्रिका
॥ पुनि इत आवहु रुद्र मोजीवत अविलंब अति ॥ १२॥ त
ब तथा सु हनुमंत कहि गहि मंजुल मुद्रिका ॥ किय बंदन अ
गिनत श्रीरघुवर सुग्रीव सह ॥ १३॥ यवन पुत्र बड बीर च
पल चले बहु बेगते ॥ पति तरंगिनी तीर चितवत किय

चित चितवन ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री विष लोद पत्त नाधिपा
न गवर्तनी श्री कृष्ण मिंद नी विज्ञापित कवि टीका गंगा
गज योविंद गज विरचिते श्री कृष्ण विलास पवन पुत्र प्रजा
यो नानि कोन विंगे ज्ञासुः ॥ १६ ॥ ॥ कविरुवाच ॥
यद् यद् वृत्तं ॥ ॥ दुरति कम कम मिलित कर्मनिर्मल
द ॥ नुव लोभ का दंड ककुभ संधत गुरु गति भिद ॥ गा
ह संडन रुद घटा घन संघ हुन करि ॥ नील व्योम सुरस
मिद अंबु कण गहन धाय धरि ॥ अति अमे झंझा वातये
कात धोर घन घात है ॥ अवलं विधेय धिय म्वसन मुन
मज्ज कियो सुव गात है ॥ १ ॥ ओद्यत कृत लंगूल स्थान
काली करि व्याकुल ॥ मये गगन चर अखिल पूच्छ फटका
र कटा कुल ॥ संभित अक्षि प्रकारा जलधि जल चरदा
चालित ॥ मये भूरि दिग भाग बीर लंघत जल निधिति
॥ जंघाल चंड उड्डीन अति घग पति अंगीकृत कियो
॥ मन मगन गगन मग संचरत हनुमान हरयित हि
यो ॥ २ ॥ पुच्छ कंतु उज्जाल नभासि पयुगति अंगीकृत
॥ अम्ब हिधा उपतन प्रष्ट कुरोय सत्व वृत ॥ उरू वेग उ
ज्जलित ययो निधिललित लहर किय ॥ अरुणा अंग
रुचि पूर दूर सिंदूर कटानिय ॥ अति तेज भाग करिकें
सकल दिक्कुरि कटितट अरुणा कृत ॥ ते सूर्य विद अंबुद
सदृश अति उत्तम उपमान भत ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥

दोहावृत्तं ॥ ॥ उहि अवसर आयो उतें हिम गिरि सुत
मे नाक ॥ ककु मोपर विज्ञाम गहि गमन करहु पुनि ना
क ॥ ४ ॥ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ ॥ प्रेरित पयोधिर त्वना भ
कल कांच नांग सुवन हिमाद्रि मड नाक नाम धेय है ॥
वचन उचारत भी आये दूर अर्ध आप सुन्दर शिखर मो
र अत्र अम हेय है ॥ सुनि गिरि वाच अंग्रि अंगुली ल
गाय ताहि चले अग्र उग्र गति मारुति अंगेय है ॥ भुज रय
पौन पुंज पुरित ककुभ करि अंजनेय अरिन अजेय मग
अये है ॥ ५ ॥ ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ ॥ माला शाल तमा
ल ताल गन जाल है ॥ वेला तट मारुती लखत सुवि
शाल है ॥ बल्लभ कल्लो लिनी तूणी नुलं घयत ॥
परि हो उच्च बाल धी बलि गगन मुहो लयन ॥ ६ ॥
षट् पद वृत्तं ॥ ॥ अथ दशरथ नृप सूनु अमल आ
यश करि आयो ॥ दन मक्षिद सम रूप पुगी लंकाल
यि पायो ॥ पवन पुत्र हनुमान अदतर तीणि रुप अ
गंहे ॥ मात्रा परिमित देह ताहि जान्यो नहि जगंहे
जानकी अग्र उत आयकें अभि वंदन अगिनत कर
त ॥ कर अंगुलीय रघु नंदकी धरनि सुता सन्मुख धरा
त ॥ ७ ॥ जनक नंदिनी जननि कौन तूही राया मृग
॥ कौन पठायो तोहि राम पठयो इत तो दिग ॥ यह
कहा तब हात मुद्रिका तिनके करकी ॥ तोहि दई यह

नाहिं निसानी है निजबरकी ॥ जब लई जानकी प्रेम
 जुत हृदय लगाई सहित हित ॥ रोमांच कलेवर संच
 रे नयन नीर बरसत अमित ॥ ८ ॥ ॥ दोहा वृत्त ॥
 आयिनतैं अविरल गलत अभ्रुन ओघ अमाप ॥
 सुबरन की जानी नहीं तब मारुति कह आप ॥ ९ ॥
 ॥ नगानि का वृत्त ॥ ॥ सुवर्ग की ॥ सुवर्ग की
 ॥ सुवर्ग की ॥ सुवर्ग की ॥ १० ॥ सोरठा वृत्त ॥ ॥ अ
 वनि अंगजा आप कछु आशा उर आनि कै ॥ पौंके
 अभ्रुकलाप मुद्रिक सौ बूजन लगी ॥ ११ ॥ ॥ षटपद
 वृत्त ॥ ॥ अरी मुद्रिका कहहु कुशल सह श्री रघु नं
 दन ॥ कहहु कुशली है लच्छ स्वच्छ चितसरसत चं
 दन ॥ सुन स्वामिनि जुगभात कुशल पैतव चिंता तु
 र ॥ बिरहन दीजें देव यहै अभिलाष रहत उर ॥ सिय
 तब वियोग जबतैं क्यो मुद्रिक अभिधा भजि गयौ ॥
 प्रभुकरमाधि धारन करत नित नाम धेय कंकरा
 भयौ ॥ १२ ॥ इहिं मुद्रिक मरिगामध्य पीउ प्रति विंववि
 लोकत ॥ करौं दरस अस आस उरसि चितदे अव लो
 कत ॥ निज प्रति विंव निहारि अमित उर अचरज आयौ ॥
 प्रभुमन मेरो ध्यान धरत सोही वपु पायौ ॥ तद्रूपतन क
 हनालघत पेयि परत मद्रूप है ॥ भ्रमभूरि भयद भ्राजं
 त मन सुता जनक पुर भूप है ॥ १३ ॥ कविरुवाच ॥ चंद्राय

णा वृत्त ॥ ॥ पुनिकछु चेतन पाय कहत हनुमान तैं ॥
 अतिकृपापिय वपु जान परत अनुमान तैं ॥ मुद्रिक कं
 कणा भई अवर कहियैं कहा ॥ परिहां दारुण दशा वियो
 ग रची है विधि महा ॥ १४ ॥ ॥ तब बोले हनुमान जुगल
 कर जोर है ॥ पहिलैं ही कृपा परम विरह पुनि तोर है ॥ प्र
 तिपद तिथि नर पदत तास विद्या जथा ॥ परिहां पावत
 तनु ताकंत कलेवर है तथा ॥ १५ ॥ ॥ षटपद वृत्त ॥ ॥
 पुनि बेदेही बदन विरह अधिक कुन सुहावत ॥ दिनकर स
 मदीधित सुधाकर दृगदरसावत ॥ पंकज लगे फुलिंग कु
 लिश कर्पूर परस है ॥ शंखा सम शशिकला वापु बडवान
 लजस है ॥ मनुमल यज दावा नल लगत बहु वियोग
 दुष गाइयें ॥ संदेश मोर गहि राम दिग अविलंबित
 उत जाइयें ॥ १६ ॥ ॥ हनुमानुवाच ॥ चंद्रायणा वृत्त
 ॥ ॥ कछुन राम शरदूर मात मन मानियें ॥ हरि यूथप
 दुर्गम्य कछुन पहि चानियें ॥ कुपित सलख मन स्वामि
 रच्छ कुल है कहा ॥ परिहां सानुकूल तव देवि देव प्रभुदित
 महा ॥ १७ ॥ ॥ इति श्री पिप लोद पत्त नाधि पाल
 रावत जी श्री वूलह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्य कवि
 टीका रामांगज गोविन्द राम विरचिते श्री वर विलासे
 मारुति मैथिली संवादो नाम विंशो ल्लासः ॥ २० ॥ ॥
 कविरुवाच ॥ षटपद वृत्त ॥ ॥ अते पेस प्रपंच पवनः

सुत पूछन लागे ॥ राजवाटिका कहाँ मान कह पच्छिम
 भागे ॥ धास्यो रूप प्रचंड पुच्छ फट कारि गये तित ॥ ली
 लावन उत्पाटि कियो मधुफल भच्छन जित ॥ अभिधान
 अच्छ रावन सुवन मास्यो परिघा घात है ॥ तिहि को धअ
 रुन लोचन किये मेघनाद दरसात है ॥ १ ॥ ब्रह्म दत्त ब्रह्मा
 स्वचलायो मेघनाद जब ॥ रुद्र रूप मारुती ऊपरै ब्रह्मा
 भयो सब ॥ इंद्रजीद उर आनि अमित विधि निंदा कीनी
 तवै बिधाता पवन पुत्र नुति कृत चित चीनी ॥ चुनि चा
 रु चतुर्मुख बिनयतै आये बंधन बीच हरि ॥ बानरवि
 लोकि रावन तदा बोलत रचना बचन करि ॥ २ ॥ रे-
 बानर तू कौन अरे हौं तब सुन हंता ॥ घंड घंडन श्री
 राम दूत अभिधा हनुमंता ॥ मम दौं दंड कठोर ताडना
 दूत गति सो है ॥ त्रिकुटा चल है कहा मेरुका तू पुनि को है
 ॥ को दंड जगत दीक्षा गुरु अवध अधिप अधिकायते
 ॥ लंकेश निशाचरनाथ तू कहा कोटि कीटा यते ॥ ३ ॥
 चंद्रायणा वृत्त ॥ ॥ कथित होय लंकेश चलायो घग है ॥ क
 त्योन कपिको केश सुमन जिप्र लग है ॥ सज्जन मैत्री जथा
 नाहि उच्छि न है ॥ हरि हाँ तथा श्वसन सुत वपुष भयो नहि
 भिन है ॥ ४ ॥ शरा वेष्टित करि वहल चल चय तूल है ॥ ते-
 ल ध्रुत द्रुत कियो ललित लांगूल है ॥ दनुज करत दे दिव्य
 मान दर संत है ॥ हरि हाँ हेरि हेरि हनुमंत हीय हर संत है ५

सियाहिया अकुलाय कहत वरबै न है ॥ चित चिंता नुर महा तन
 क नहि चैन है ॥ अरजी अनल चुनंत अनिल सुत कारे नै ॥ हरि
 हाँ मुह द सुवन जिय जानि कृपा कछु धारै ॥ ६ ॥ आज्य होम क
 र कियो राम तुहिं तुष्ट है ॥ परुष वचन सुनि विप्र भये नहिं रुष्ट
 है ॥ पति भक्ती करि जुक्त मोर जो चित है ॥ हरि हाँ हृजो शीतल
 मद्य मरुत के मित है ॥ ७ ॥ सोरठा वृत्त ॥ सीतल भयो हुतास सु
 निसिय की पद प्रार्थना ॥ हनुमत हीय हुलास चारु चंदना लेप
 सम ॥ ८ ॥ मनोहर वृत्त ॥ निपट निसंकलंक गड को दहन कियो
 बानर के पुच्छ पायो जन्म अग्नि आप है ॥ ज्वाला आसमान लौं
 बिकास मान भासमान दसों दिश पूरि रई अंबर अमाप है ॥ आ
 मुरी असुर बाल वृद्ध तरुणादि सब व्याकुल विशेष हाय अधि
 ल अलाप है ॥ मनो राम चाप शर दाप के संताप तप्त स्वर्ग भौप
 लाप मान रावन प्रताप है ॥ ९ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ पल भच्छ कपल
 भच्छ हुतासन प्रबल है ॥ परम प्राप्ति संतुष्टि भयो अति चपल है ॥
 गिस्सो अंबुनिधि बीच जास प्रति बिंब है ॥ अरि हाँ मनो पिवत अ
 तिनृषित तितै अब अंबु है ॥ १० ॥ दशाग्रीव उहिं वार करत सुवि
 चार है ॥ हनुमान वर विदित रुद्र अवतार है ॥ हौं भ्राजत भव भक्त
 नगर मम किम दसौ ॥ परि हाँ इहिं कौ कारण यही चारु चित मै च
 सौ ॥ ११ ॥ दशशिर करि दश रूप भये संतुष्ट है ॥ रेका दश अब
 शेष भयो यह रुष्ट है ॥ पंक्ति भेद कल्पारा कोन कौं दैत है ॥ हरि
 हाँ नगर दाह हनुमान कियो इहिं हेत है ॥ १२ ॥ वटपद वृत्त ॥ बड

बानलकरि मिंधुविंदिन मरिा करि अंबर ॥ चपला चय करि ।
 लसत कहा अति मेघाडंबर ॥ भालनेव भ्राजत तथानहिं शशि ।
 भुत कर है ॥ प्रलयानल करि काल इंद्रधनु धारा धर है ॥ इमधुव
 मंडल करि मेरुगिरि तस शोभान हिलहत है ॥ देदिप्यमान क
 पिपुच्छ करि अनुप उपमा गहत है ॥ १३ ॥ मंदमंद गिर कहत नि
 णा चरनगर निवासी ॥ मरुत पुत्र इक यहै पुच्छ धुजगगन विला
 सी ॥ रच्छामरिा कपिकटक अहह इत पीछो अहै ॥ चीनि चीनि
 केतकल दुसह दारुणा दुयदे है ॥ इहिं अक कियो उत पात अस
 सगनित वानर आय है ॥ अति हाय हाय धवराय घट कहा कहा
 दुय पाय है ॥ १४ ॥ नभमंडल थित होय कहत कपिबर दशमुख ।
 सौं ॥ हौं इकतूं कोटी शत दपितु हिं जीतौं मुय सौं ॥ जनक सुता जा
 नकी ले जावो तित अति दुत ॥ सब प्रकार समर तथ स्वामि मुहि
 दियन हुकम उत ॥ सुग्रीव अग्ररघुवीरवर भुज उदाय अैंक
 ही ॥ छिनमध्य छपा करनिकर जुतरावन हौं हनि हौं मही ॥ १५
 दोहा वृत्त ॥ इम कहिलं कामस्म करि बनिका शोक विहाय ॥ अ
 भिग्यान याचन करत श्री जान कि डिग जाय ॥ १६ ॥ इति श्री पिप
 लोदपत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापितः
 कदिरीकारा मांगज गोविंद राम विरचिते श्री वर विलास लं
 कापुर दहनो नामैक विंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ कविरुबाच ॥ चंद्रा
 यगा वृत्त ॥ काल ब्याल बर बधूसदृश बिल संत है ॥ धूम शि
 या भमशबु शिवासर संत है ॥ शिरोरत्न सिय लेय दियौ हनु

मान है ॥ परिहां अभिग्यान यह अेक सुप्रथम पिछान है ॥ १ ॥
 चित्रकूट गिरिका कलेवर धारिकैं ॥ शक्र सुवन मम गयो
 सुहृदय बिदारिकैं ॥ इविकास्त्र करि कियो तस्य चय कान है
 ॥ परिहां श्रीरघुवर कौं देउ द्वितिय अभिग्यान है ॥ २ ॥ मन
 शिला ममतिलक सुललित कपोल में ॥ कियो पारिा तल
 मृष्ट करहु जिय तोल में ॥ यह तीसर अभिग्यान पीउ प्रतिभा
 यि हौं ॥ अरिहां जीवन अवधी मास मात्र कीरायि हौं ॥ ३ ॥ क
 विरुबाच ॥ यदपद वृत्त ॥ जल जुक्त गहिरत्न प्रमुख अभिग्या
 न अनूपम ॥ अभिबंदन किय जनक नंदिनी पदवारि जसम ॥
 आय उदधितट आप अटन अंबर मग कीनौं ॥ आडंबर भुज प्र
 बल पराक्रम अद्भुत चीनौं ॥ हनुमंत महामति मंत अतिसाधि
 स्वामिकार जसकल ॥ अतिसत्वर उत आवत मये जित रघुवर
 बिलंत विकल ॥ ४ ॥ चंद्रायगा वृत्त ॥ मारुत चुंबित चारु केस
 गलसत है ॥ प्रमुदित तारा धीश अग्रसर दसत है ॥ बिरहित समा
 लोक सु आतुर वंत है ॥ हरिहां आयो यहै वसंत किधौं हनुमंत है
 ॥ ५ ॥ दोहा वृत्त ॥ सीतापति संभ्रम सहित आलिंगत अवलो
 कि ॥ बिन वन जुग कर जोरि कैं बारं बार बिलोकि ॥ ६ ॥ हनुमा
 नुवाच ॥ यदपद वृत्त ॥ पियो नाहिं अंबुधी नाहिं लंका चुरनीता ॥
 रावन शिर लायो ननापि सीता आनीता ॥ आण्ले चार्यरा पारि
 तोय कारग किहिं पाऊं ॥ लयि प्रभु प्रभुता परम अनुगनि ज तीस
 ल जाऊं ॥ विभुवार्ता हारक दूत में जुग संदेस इत उत कहौं ॥ किहि

॥
 रवि
 पद

लायक हैं करुणा निधे आलिंगन कैसे चहो ॥ ७ ॥ कविरुवा
 च ॥ दोहावृत्त ॥ राम कहत विकलपसहित ओरे कुटिल बिधा ॥
 त ॥ कहा कहा करि है अहो सो जानी नहिं जात ॥ ८ ॥ हनुमानु
 बाच ॥ षट्पदवृत्त ॥ किं तैं अयोध्यापुरी अवर पुनि राम भद्र ॥
 कित ॥ तेऊ दशरथ बचन पाय आये दंड कइत ॥ कौन दुष्ट मारी
 च कनक मय मृग अति अद्भुत ॥ कुत सीता अपहार किं तैं मैत्री
 कपि पति जुत ॥ मुहि कित सीता की सोध कों परयो श्रीरघुवर ॥
 तैं ॥ अतिकूर कर्म सुबिधात यह अघटित अघटित कृतइ
 तैं ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्त ॥ राम रत बिदरत हृदय प्रान
 चहत परलोक ॥ तूरन आवेदन करहु जिम जान कि अवलोक
 ॥ १० ॥ हनुमान सत्वर वदत जगदानंद कराम ॥ तोर प्रान गति
 द्वार की अर्गल कर अभिराम ॥ ११ ॥ इम कहि अप्यो शिर रत
 न तिलक मृष्ट चक्षुर्गा ॥ चित्रकूट गिरि शिखर पर सोवर ॥
 यों संपूर्ण ॥ १२ ॥ राम पाय अभिग्यान व्यसाधु साधु कहैं
 न ॥ प्रिया कुशल पूछन लगे जल भरि नीर जनेन ॥ १३ ॥ हनु
 मानुवाच ॥ षट्पदवृत्त ॥ कृपाता बरनन करौं शशिकला प्र
 तिपद थूला ॥ पठियें पुनि पांडुता मृगा ली मेच कतूला ॥ अ
 शुभोद्य उच्चरौं अंबुनिधि अलप लगत है ॥ लयत सीय संत
 पडुतासन शीत पगत है ॥ लावन्य शेष वपु लगत वह हिय रा
 वर स्मृति मात्र है ॥ हनुमंत कहत मुनियें प्रभो केवल करुणा
 पात्र है ॥ १४ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्त ॥ प्रभु पूछत हनुमंत पु

निलंकापुर के बीच ॥ कहा कथा किय करी गत कहहु उच्चरु
 नीच ॥ १५ ॥ हनुमानुवाच ॥ षट्पदवृत्त ॥ नाहिं कथा सिंगार
 कुतूहल कथानाहिं कित ॥ नाहिं सांगीत कथा कथा विद्या
 न जितैं तित ॥ नाहिं करि न की कथा तुरंगम कथा तथानहिं ॥
 नाहिं धनुष की कथा विशिष आदिक न कथा कहैं ॥ सुनना
 थनि शाचर नगर मधिसुपनहु मधिनहिं अन्यथा ॥ भयभी
 त रावरे भूरिमन प्रबल पलायन की कथा १६ ॥ श्रीराम उवाच
 ॥ दोहावृत्त ॥ विदशन करि दुर्द्धर्य अति लंकापुरी महान ॥ वि
 दमान दशकंठ के किम जारी हनुमान ॥ १७ ॥ हनुमानुवाच ॥
 सीता के बिश्वास करि कियौ लंक पुर दाह ॥ पहिले ही वह दग्ध
 ही को पानल नरनाह ॥ १८ ॥ इक शायतैं कूदैं शाखांतर पै
 जाय ॥ शाखा मृग कौ जोर यह रंचन अधिक लयाय ॥ १९ ॥
 सागर कौ उलंघि बौ तथा लंक पुर दाह ॥ रावर पूर्ण प्रभाव भ
 ल निरखिले उतरनाह ॥ २० ॥ कविरुवाच ॥ लंकामधि शांका
 सहित शरमा प्रतिसिय बैन ॥ कीट भ्रमर के न्याय करि पियव
 पु मोर बनेन ॥ २१ ॥ शरमोवाच ॥ तूँ गहि है जो पीयब पु पियव
 नि है तनु तोर ॥ होहिं जुगल बिपरीतरतियामधिक हो नि होर ॥
 इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्रीदूलह सिंह जी
 विज्ञापित कवि टीका रामांगज गोविंद राम विरचित श्रीदरवि
 लामे हनुमद्विजयो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ हनुमन्नाद
 के वर्योक्तः ॥ कविरुवाच ॥ षट्पदवृत्त ॥ पवन पुत्र जगद

कही कपि पतिते जैसे ॥ राज्य गर्भ करि बिसार गयो प्रभु कारज ॥
 कैसे ॥ बाली दशा विसारि दर्द सब भूल्यो निज दुख ॥ पूरन राम
 प्रभाव अनुभवत इत सारे सुरव ॥ सुग्रीव सुनत मारुति बचन ॥
 सकल सैन सह संचरत ॥ परिहारि प्रारा प्रिय प्रेयसी समर बीर
 ताधिय धरत ॥ १ ॥ विजय दशमी आसौ ज बिशद दल श्रीरघुन
 दब ॥ कियो प्रबल प्रस्थान निखिल निशि चरन निकंदन ॥ ब
 ल अष्टादश महा पद्म संख्या क सबल है ॥ यूथ नाथ ये कहै अ
 पर कपि संख्य प्रबल है ॥ बहु व्याम भयो मूल ल सकल दिशा बि
 दिश आकाश है ॥ कपि कटक बिकटक कटतरद किल कि
 ल शब्द प्रकाश है ॥ २ ॥ हनुमान कह सुनहु निखिल नर नाथ ॥
 मुकुट मणि ॥ आवत यह चहु ओर अमित कपि कटक अनी
 कनि ॥ जिन के भारा कांत भूमि मज्जत तिहिं भर करि ॥ दशन
 टंक करि लिखत शेष अहिक मठ पीठ परि ॥ उत्पतत पतत ॥
 जौं जौं प्रवंग त्यों त्यों नमतरु उत्तमत ॥ फरिाराज प्रयाग प्र
 शास्ति लिखि कैत पुंज अविरत वमत ॥ ३ ॥ रुंधित संधी संधि ॥
 स्वास उर्मिन करि अविरत ॥ हारा वलि गल कंठ रत्न अदया
 लु अमित धृत ॥ कीनों फरा भंजिका भंग कम परम परिश्रम ॥
 अवराग काश निरंतर गल शिरस्तब्ध भुजंगम ॥ ध्रुव धारत धर
 नीधीर धरि भुग्न भयो भासंत है ॥ बानर सुबीर विक्रम न भर
 तल ताप वासंत है ॥ ४ ॥ रटत राम भो मरुत मनु सुनिली जै
 साकर ॥ केश करन कौं कर्म ककु भकुल थगित निखिल कर ॥

धरा धरन धूजंत धूलि भर सिंधु कर्द मित ॥ रज करि रुंधत गगन
 कटक कपि केर अपरि मित ॥ नासीर पुर पुर प्रचुर बल वागा डंब
 र बहु लसत ॥ पै जानत हों यह मोर सब विजय तोर भुज बल बस
 त ॥ ५ ॥ कविरु बाच ॥ दोहा वृत्त ॥ अति अद्भुत कपि कटक लखि
 भिल्ल भामिनी भूर ॥ बदन बचन परिहास जुत निरखत सैनानुरा
 द ॥ षट्पद वृत्त ॥ नाहिं शस्त्र कित लखत न कहु अस्त्र न अवलो
 कत ॥ नाहिं रथन की कथा वाह वारगान विलोकत ॥ नाहिं वृ
 षभ नहिं सुतर शिविर नहिं नृपहु जटा धर ॥ बित नाहिं बर वस
 न नाहिं नृपरचन कटा धर ॥ भायत जरठ भिल्लीन सौं हम बैठी डू
 त प्रात है ॥ सुनि कहत सकल समुजाय कै तिन की ते सब मात
 है ॥ ७ ॥ लंका गढ जेत व्यचरगा तरगा य जलधि जल ॥ प्रव
 ल शत्रु पौलस्य सहायक इत मरकट बल ॥ जदपि राम यह अ
 क सकल रिपु प्रति बल दलि है ॥ निशि चरनिकर निशेय परा
 भव पावत पलि है ॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्त्व मधि महत जन
 न की मानियै ॥ आडंबर है उप करन कौ यह अवश्य उर आनि
 यै ॥ ८ ॥ कविरु बाच ॥ अत्रांतर वृत्तांत तत्र लंका लीजै सुनि ॥
 मंत्र शाल उपविष्ट मंत्रि प्रोच्छाहित चित चुनि ॥ वदत विभीषन
 बचन सहित उत्कंठ भटन प्रति ॥ स्वर्गा पुंय शित विशिष वज्र
 सम मनौ वायु गति ॥ जव लौं न गहै शिर सबन के तब लौं हँ कर्त
 य यह ॥ द्रुत दशरथ नंदन दीजियै निमि नृप नंदिनि नोद म
 ह ॥ ९ ॥ मनोहर वृत्त ॥ त्रिवरग धर्म अर्थ काम ये कहावत हैं मो

यकोंमिलाय चतुर्वर्ग पहिचानियें॥धारियें धरम प्रात हीतें मध्य
 घौस जों लों उत्तर अहनि अर्थ समह सुंठानियें॥सायंकाल समें
 काम सेवन जथोच्छ कीजें गावत गोविंद श्रुति वचन प्रमानियें॥
 मोय है महान जिय जानहु जहां वीच आदों जाम सो अवश्य
 मेव उर आनियें॥१०॥ सोरठा॥ अर्पहु सीताराम कहत विभी
 यन भ्रातें॥ नयधारहु धिय धाम अनय कियें विन सत सकल
 ॥११॥ यद्वपद वृत्त॥ पुनिरावन प्रतिकहत यहै नरवानर जाती
 ॥ इन तें रहिये डरत वडेये सब उत्तपाती॥ हयि हयमहि पति
 मनुज वसे कारा गृह अंदर॥ निवसे जाकी कक्ष वहे वाली होव
 दर॥ पौलस्त्य करत हों प्रार्थनारघुवर सीय समपियें॥ वंधना
 गारथित विबुध गनतिन विमर्जि संतपियें॥१२॥ चंद्रायणा वृ
 त्त॥ किल नाशक कुल कीर्तिको पतजि दीजियें॥ बहु वर्धन यः
 शवंश धर्म धियधीजियें॥ के प्रसन्न सब वचें काज सो कीजियें॥
 हरि हो दाशरथी श्रीराम मेधिली दीजियें॥ इति श्रीपिपलोदप
 तनाधिपालरावतजी श्रीदलह सिंहजी विज्ञापित कविटीका
 रामांगज गोविंद राम विरचिते श्रीवर विलासे विभीषणा संभा
 यराणां नाम त्रयोविंशोऽस्त्रासः॥२३॥ रावन उवाच॥ चंद्रयरा
 वृत्त॥ कह सकोप जानकी जीय जानंत हों॥ मधुसूदन रघुनंद
 मनसि मानंत हों॥ वध जानत दशवदन तदपि शिरथि हों॥ ह
 रि हों मेरे जीवत राम सीयन समपि हों॥१॥ दोहा वृत्त॥ रावन
 ऐसे वचन कहि कृत वामांघ्रि प्रहार॥ तबें विभीषन गमन कि

यलिये सचिव संग चार॥२॥ महातंकलंका नगर धूमकेतु नि
 जवंश॥ कंडिविभीषन तर्गातिहि चलयो हुलसी हिय हंस॥
 ३॥ विविध विराजित नितहुं ते श्रीरघुनंदन राम॥ तित अति तृ
 रन आयकें चित पायो विश्वास॥४॥ यद्वपद वृत्त॥ लयत वि
 भीषन भाव परस पर बानर उचरत॥ करि है लंकाधीश प्रगाति
 पद पंकज प्रचरत॥ जिमि कीनों सुग्रीव सकल मर्कट भटराजा
 ॥ तें सैं याहि अधीश अरपि हैं असुर समाजा॥ इहिं सायी तुम
 हम सकल है यामें ककु संशय नही॥ अति उर उदार दातार तरः
 श्रीरघुनंदन है सही॥५॥ दोहा वृत्त॥ जौ विभूति दश ग्रीवकों
 शिर छेदे शिव दीन॥ राम विभीषणा को दर्ई दश होत लघुची
 न॥६॥ प्रनमि चरन वारिज वरन पुनि वर आय सपाय॥ निकट
 विभीषन थित भये क्व विलयि उरन अघाय॥७॥ यद्वपद वृत्त॥
 अथ सौ मित्री मित्र पुत्र दशरथ नर नायक॥ उत्तरतद अंभोधि
 भये थित जन सुख दायक॥ गर्भ दर्भ आकीर्ण अमल उपवेशन
 उपर॥ वेदे रघुवर राम अथरम वभाजत भूपर॥ आयें न अग्न
 जब अंबु निधित व अतिको पारुन वरन॥ आग्नेय अस्त्र आद
 त उन सिंधु सलिल शोयन करन॥८॥ कविरुवाच॥ चंद्राय
 णा वृत्त॥ राम चंद्र दशवदन नाश उद्यम कियौ॥ मांसाहारी
 जीव महामन मुदलियौ॥ मृग कपिवन अरु वैश्य तपोधन
 आदिकी॥ अरि हों महामित्रता मानिल इजु अनादिकी॥९॥
 यद्वपद वृत्त॥ होतो नहि मारी चहिरन वंचन को करतौ॥ हनुम

त कपिवित कौन कहो मन संशय हरतौ ॥ सधन महावन विना ॥
 सीय हर रावन के सैं ॥ विन अपसी केशा पस बें वान क किम खे
 सैं ॥ ये सुहृद वर्य हमरे सबै परम कृपा इन प्राप है ॥ अब करि
 खटन अघाय कैं आमिय असुर समाप है ॥ १० ॥ कविरु वाच
 ॥ सोरठा वृत्त ॥ अति भयमं जुत सिंधु सुर वपु धरि आयो उतैं ॥
 राम दीन जन बंधु तवन करत कर जोरि जुग ॥ ११ ॥ समुद्र उवाच
 यटपद वृत्त ॥ पूर्व पिता मह सगर आप निश्रय अनु मान्यो ॥
 है हमरे गोत्र नृपति दशरथ जग जान्यो ॥ हय मय करि है वहे
 आज्य आहुति बहु परि है ॥ व्याकुल हूँ कमठ शेष किम ध
 रनी धरि है ॥ तिन ताप शमन सागर सकल सुर सरि संजुत प्रा
 द कृत ॥ धिर धैर्य पैं तिनैं उष पत अवे अनुचित उचित न धीय धृ
 त ॥ १२ ॥ श्रीराम उवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ चाप ल्याउ सौ मित्रिम
 सोयों सागर नीर ॥ चरन नैं चलि जायगे विन श्रम वानर वीर ॥
 १३ ॥ कविरु वाच ॥ तबैं विनय किय तोय निधि जो व्हे बंधन सेतु
 जुग जुग लौं जाहर रहहि जग मधि कीरति केतु ॥ १४ ॥ सुनि वा
 रि धि के वचन वर हुकम दियो श्रीराम ॥ करत सेतु रचना रुचि
 र वानर नल अभिराम ॥ १५ ॥ कविरु वाच ॥ यटपद वृत्त ॥ ति
 रत दायि प्रसरन मरुत सुत वचन उचारत ॥ वड अचरज की वा
 त प्रभौ प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन डूवत आप अवर संगीन डूवा
 वत ॥ इहो तिरत सब तेपि अपर सह चरनति रावत ॥ यह मा
 वन कौ गुन हैं नही वारि धि वानर कौ तथा ॥ रावर प्रताप महि

माल सत इतरन की इत का कथा ॥ १६ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ अबग
 पुरोगम सिंधु सलिल मय देधिया ॥ तिन पाठे कपि कटक पंकम
 य देधिया उन हूके पश्चात भागवान रहे ॥ हरि हों जलधि दुतो
 इहि ठोर बचन सैं सैं कहे ॥ १७ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपान
 रावत जी श्री दूल्ह सिंह जी विज्ञापित कवि टीका रामांग जगो
 विंद राम विरचिते श्री वर विलासे सेतु बंधन नाम चतुर्विंशो ॥
 स्तसः ॥ हनुमन्नाट के सप्रमो कः ॥ १८ ॥ कविरु वाच ॥ दोहा वृत्त
 ॥ गिरि सुवेल तट कपि कटक जुत उतरे रघु वीर ॥ अर अनु कंषा
 आनि कैं उचरत गिरगंभीर ॥ १९ ॥ श्रीराम उवाच ॥ महावीर संग
 द वली तुम रावन ढिग जाउ ॥ प्रथम साम कर्तव्य है सो करि द्रुत द
 त आउ ॥ २० ॥ यटपद वृत्त ॥ उभय बंधु असमच्छ होत तैं हरि
 सीता ॥ आधीपत्य अहंकार मत अथवा आनीता ॥ ताहि दी
 जियै तुरत नतर लछमन मार्ग नगन ॥ करहि असुर उच्छिन्ह उ
 च्छलच्छे नित छिति घन ॥ सह पुत्र पौत्र परिजन सहित अंतक
 पुर प्रति जाय हों ॥ जउ वीस श्रवन चय वीस तउ वधिरु अंधक
 हाय हों ॥ २१ ॥ कविरु वाच ॥ कहित थास्तु जुवराज पित्र वध वैर
 विसर्जित ॥ चल्यो चपल गति लंक उर सिरि पुशंक विवर्जित ॥
 गगनांगन उत्पतन करत किल किल रव करि कसि प्रवल पुच्छ
 फटकार उच्च धारा धर धरि धरि ॥ उत पात केतु उद्भट असुर सिं
 हांसन आसीन बहि ॥ उपमान अमित अंगद लसत निर्जर पति
 मुत सुवन सहि ॥ २२ ॥ कविरु वाच ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ मालुम

करि प्रहस्य राम को दूत है ॥ आवन चाहत दूतें कोपि कपि पूत है ॥
 आयस असुराधीश दई अंदरगयो ॥ हरिहा अवलोकत ॥
 साकाश वचन उचरत भयो ॥ ५ ॥ अंगद उवाच ॥ यदपद वृत्त ॥
 रे कौन पकुल कहौ कौन रावन अभिधाना ॥ रतन रवीन्द्र वंश ह
 रे करि नृनिदाना ॥ विजगदहन त्रयनयन त्रिशिष्य शूल हुतें ॥
 अतुलित ॥ प्रयानल प्रभुराम असुर हू है पतंग तित ॥ चित चाह
 त जो तुमरी भलो उत्तम वात बतात अब ॥ सीता समर्पि संतर्पिये
 घटि जे है धन घात सब ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ साभ्या
 सूर्य रावन रटत अंगद उत्तर देत ॥ भयउत्ती प्रत्युक्ति सुत उत्तम
 उपमालेत ॥ ७ ॥ अन्योन्य भाषणा ॥ यदपद वृत्त ॥ रे कपितु है
 ही कौन जो पहिले आयो ॥ जाकी जारी पुच्छ तनय मम जाहि व
 धायो ॥ तानें तो तित कहि निधिल लंका पुर जास्यो ॥ मास्यो तव
 सुत अछ मुधा कपि वचन उचास्यो ॥ यह जूठ बात कै सत्य है
 कै पलाज भय जुत भयो ॥ अंगद वरिष वर वैत सुनि रावन मुख मु
 दित रयो ॥ ८ ॥ पुनि रावन वृत्त अरे कपि गुन कहता वक ॥ राम
 राज लेख्यार्थ दूर प्रापक बहुधा वक ॥ लंका दाहक हनूमान वह
 कहहु कहौ अब ॥ राच्छ समूह वडु अवन सुनित ताडित सब
 ॥ भासत जित सत्री ड अति परम पराभव पायके ॥ वह को जाने किहि
 ठोर है कित भैरवों लुकाय के ॥ ९ ॥ जिहि कपि किय पुर दाह अव
 र कानन कृत भजन ॥ गिरि दरि असुर नभरी अछ सुत की नौ गंज
 न ॥ तुम जानत होतहि कछु वह करि हौं विनती ॥ पै हमरे इहि कट

कै ताकी नहि गिनती ॥ वह दूर दूर धावन विधैं विदित बडो म
 जवत है ॥ संदेशा दूतें उत भेजवेल्या वन कारन दूत है ॥ १० ॥ लंका
 दई जलाय अछ तब सुत संघास्यो ॥ सरुपुनि असुर न सोध
 अमित छिन वीच प्रहास्यो ॥ संभाषन सिय कीन अवि उलंघ
 न दान्यो ॥ उहिं अभिधा हनुमान मान कानन भल मान्यो ॥ ज
 ब काम पडे बड जुद्ध को तितें ताहि भेजत न कित ॥ कछु दूर लेन
 संदेशा है तब तित कौं प्रेयंति नित ॥ ११ ॥ रावन उवाच ॥ राम सु
 दरी विरह विदित बेस्यो वपु हारित ॥ ताम चिंतया लच्छ भयो म
 ल बछ बिदारित ॥ वपो वृद्ध सुग्रीव जथा निर्मूल कूल तरु ॥
 कौन विभीषन गिनत अतिथि अरि भयो दीन अरु ॥ रावन बंद
 त अंगद सुनहु औरन कोउ अनेक है ॥ लंका लगाय पावक प
 रम मोर बध्य कपि अनेक है ॥ १२ ॥ अन्योन्य भाषणा ॥ कौं है व
 न पतित नय को न वन पतित व संगी ॥ को संगी इक दिवस मग्न
 सागर कृत अंगी ॥ कक्षा पुट तुहिलियैं फिस्यो वह वानर वा
 ली ॥ हां जान्यो वह कुशल कुशल कित कर्म कुचाली ॥ श्री
 राम चंद्र जब रुख है स्वस्तिमान कोरहि सकत ॥ अन रन्य भूप
 तर्पणा करन रम्य रुधिर तोतनु त कत ॥ १३ ॥ कहा करत हे राम
 प्र तीपन विजय निरंतर ॥ किहिं प्रतीप जय कियो विदित वाली
 सुदिगंतर ॥ को वाली का विसरि गयो पहिचान कहा कपि ॥ य
 हू विस्मृति तोर अहो बड मोह महान पि ॥ परियंक बड दश
 वदन तूनि जवालक कल केलि कृत ॥ लज्जा प्रहार मम विस

करि प्रहस्य राम कौ दूत है ॥ आवन चाहत दैतैं कोपि कपि पूत है
 आयस असुराधीश दई अंदर गयौ ॥ हरि हा अवलोकत ॥
 आकाश वचन उचरत भयौ ॥ ५ ॥ अंगद उवाच ॥ यदपद वृत्त ॥
 रे कौन पकुल कहौ कौन रावन अभिधाना ॥ रतन रवीन्दू वंश ह
 र करि नृनिदाना ॥ त्रिजगदहन त्रयनयन त्रिशिष्य लहेतैं ॥
 अतुलित ॥ प्रयानल प्रभुराम असुर हू है पतंग तित ॥ चित चाह
 त जो तुमरी भलो उत्तम वात बतात अब ॥ सीता समर्पि संतर्पियै
 घटि जे है धनघात सब ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ साभ्य
 सूर्य रावन रत अंगद उत्तर देत ॥ भयउक्ती प्रत्युक्ति जुत उत्तम
 उपमालेत ॥ ७ ॥ अन्योन्य भाषणा ॥ यदपद वृत्त ॥ रे कपितू है व
 ही कौन जो पहिलैं आयौ ॥ जाकी जारी पुच्छ तनय मम जाहि वं
 धायौ ॥ तानैं तो तित कही निखिल लंका पुर जास्यौ ॥ मास्यौ तव
 सुत अच्छ मुधा कपि वचन उचास्यौ ॥ यह जूठ वात कै सत्य है
 कीपलाज भय जुत भयौ ॥ अंगद वरिष्य वरवैन सुनि रावन मुख मु
 दित रयौ ॥ ८ ॥ पुनि रावन वृजंत अरे कपि गुन कहता वक ॥ राम
 राज लेख्यार्थ दूर प्रापक बहुधा वक ॥ लंका दाहक हनू मानव ह
 कहहु कहाँ अब ॥ राच्छ समूह वद्ध अवन सुनित तताडित सब
 ॥ भासत जित सत्रीड अति परम पराभव पाय के ॥ वह को जाने किहि
 ठोर है कित मैर्यौ लुकाय के ॥ ९ ॥ जिहि कपि किय पुर दाह अव
 र कानन कृत भंजन ॥ गिरि दरि असुर नभरी अच्छ सुत कीनौ गंज
 न ॥ तुम जानत होतहि कहु वह करि हौं वै नती ॥ पै हमरे इहि कट

कै ताकी नहिं गिनती ॥ वह दूर दूर धावन विषै विदित बडो म
 जवत है ॥ संदेशा दैतैं उत भेजे वे ल्यावन कारन दूत है ॥ १० ॥ लंका
 दई जलाय अच्छ तब सुत संघास्यौ ॥ अरु पुनि असुर न सोघ
 अमित छिन वीच प्रहास्यौ ॥ संभावन सिय कीन अखि उल्लंघ
 न गान्यौ ॥ उहिं अभिधा हनुमान मान कानन भल मान्यौ ॥ ज
 ब काम पडे बड जुद्ध को तितैं ताहि भेजत न कित ॥ कहु दूर लेन
 संदेश कै तब तित कौं प्रेषति नित ॥ ११ ॥ रावन उवाच ॥ राम सु
 दरी विरह विदित बेस्यौ बपुहारित ॥ तास चिंतया लच्छम यौ भ
 ल बच्छ बिदारित ॥ वयो दृढ़ सुग्रीव जथा निर्मूल कूल तरु ॥
 कौन विभीषन गिनत अतिथि अरि भयौ दीन अरु ॥ रावन वंद
 त अंगद सुनहु और न कोउ अनेक है ॥ लंका लगाय पावक प
 रम मोर बध्य कपि अंक है ॥ १२ ॥ अन्योन्य भाषणा ॥ को है व
 न पतित नय को न वन पतित व संगी ॥ को संगी इक दिवस सप्त
 सागर कृत अंगी ॥ कक्षा पुट तुहिलियै फिस्यौ वह वानर वा
 ली ॥ हां जान्यौ वह कुशल कुशल कित कर्म कुचाली ॥ श्री
 राम चंद्र जब रुख कै स्वस्ति मान को रहि सकत ॥ अत रत्यभूष
 तर्पणा करन रम्य रुधिर तोतनुत कत ॥ १३ ॥ कहा करत है राम
 प्र तीपन विजय निरंतर ॥ किहिं प्रतीप जय कियौ विदित वाली
 सुदिगंतर ॥ को वाली का विसरि गयो पहिचान कहा कपि ॥ य
 ह ह विस्मृति तोर अहो वड मोह महान पि ॥ परियंक बड दश
 वदन तूनि जवालक कल केलि कृत ॥ लता प्रहार मम विस

रिगो अति सुचरजधुवधीयधृत ॥ १४ ॥ अंगद उवाच ॥ प्रथम
 तिस्रो दुर्लभ्य अंबुनिधिवानर शावक ॥ दैत्यनिबद्ध दुर्मेध
 भेदिश्विस्त्रो पुरतावक ॥ वनरच्छक उच्छिन्नभच्छि फल अ
 च्छहननकिय ॥ प्रदहनलंकापुरी कियो अवलोकनहू सिय
 ॥ इतविद्यमान दशवदनतव अक अल्पकपि आचरित ॥
 मैकौन कौन वर्गान करौ रामभूप अगनित चरित ॥ १५ ॥ राव
 रा उवाच ॥ रावन करि आच्छेप उचारत आनन असे ॥ भग्न
 भग्न शिवचाप बालि आहत हततैसै ॥ सप्तताल हतहतक
 वारि निधिवद्ध वद्ध कृत ॥ कहापराक्रम राम अहंकृतिक
 रिदुर आहत ॥ धुवधनतशैल मागरधरा अहिपति अंगदशि
 वलसत ॥ तिन सहित अचल कैलाशधृत विरहित रुज ममभु
 ज दसत ॥ १६ ॥ इति श्रीपिपलोदपत्त नाधिपाल रावतजी श्रीदू
 लहसिंहजी विज्ञापित कविरीका रामांगज गोविंद राम विरचि
 त श्रीवर विलासे सवरांगदानीय संभाषणो नाम पंचविंशो
 ब्राह्मणः ॥ २५ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्त ॥ सुनि रावन के वचन क
 रिकारि कपिपति कोप ॥ स्वामिभक्ति अभिनीय उरवच उचरत
 सा रोप ॥ १ ॥ अंगद उवाच ॥ बटपदवृत्त ॥ करिकक्षागत तोहि
 बालिनामा बलवारौ ॥ कपिकुलतिलक सुसप्तसिंधुसंध्याचन
 सारौ ॥ कियो आयिल अविच्छिन्न बलिघन उहिं समकोऊ ॥ श्री
 रघुवर रगाधीर हन्यो डंक शरकरि सांऊ ॥ संत्यज्य अहंकृति
 अमित उरवहवानर सुरपुरगयो ॥ तजि देउ गर्व यह सर्वतुमनि

नहिय अंदर जोरयो ॥ २ ॥ जिहि संदेश हरदूत मरुत सुत तिस्रो वा
 रितिधि ॥ गोपद डब उर आनि स्वामिकिय सर्वकार जसिधि ॥
 निज आलय जिम आय प्रवेशन कृत लंकापुर ॥ सिय संभाषण
 दर्शकियो कानन भंजन तुर ॥ तव भूरि सैन गंजन समुत पटु पजन
 प्रदहन द्यो ॥ किहिं भाति राम वर्नन करौ प्रभु प्रताप सब छिति ठ
 यो ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्त ॥ बालितनय वर वचन सुनि
 रावन भयो सक्रोध ॥ अहंकार आरुढ है उचरन लग्यो अवोध
 ॥ ४ ॥ रावन उवाच ॥ बटपदवृत्त ॥ हन्यो कनक मृग मात्र तुच्छ व
 रा चरकानन मधि ॥ प्रवन वृच्छतै वृच्छ करन शाली वाली वधि
 ॥ बीर कहावत राम मोर हिय हास होत है ॥ प्रवल पराक्रम पुंज
 दशानन जग उदोत है ॥ बहु बहि मालज्वाला जदिल अति दृढ़ श
 रसंधान है ॥ जिय जवर जुद्ध उद्योग जुत मम समान नहि आन है
 ॥ ५ ॥ अंगद उवाच ॥ दोहावृत्त ॥ मोको दूत भये सतै संधी विग्न
 ह होय ॥ अछुत सछुत तनु पीछ छिति अवलुंन है तोय ॥ ६ ॥ चं
 द्रायराग वृत्त ॥ रावन जानहु मोहि दूत श्रीराम को ॥ महावीर ररा
 धीर सुगुनगन ग्राम को ॥ यर दूरवन मृग भच्छि तृषित शरभूर
 है ॥ अरिहो पिवहिं कंठ घट रंघरु धिर सुजर है ॥ ७ ॥ रावन उ
 वाच ॥ दोहावृत्त ॥ रें वानर अति अधम कटुक प्रलापत काहि ॥
 शवन लाय सुनिलीजिये इहि विध रावन आहि ॥ ८ ॥ बटपदवृत्त
 ॥ मृत्युभृत्य पादांत तपति दिनकर सुमंदरुचि ॥ लोकपाल पुनि
 अरु मोर भय चकित रहत शुचि ॥ बंदत नित पद रें नु इंद आदिक

निशवासर ॥ चंद्रहासममलयतगर्भस्वसुर अहिति यनर ॥ अ
 तिग्रप्रतापी असुरपतिरहतसकल कर जोरि कै ॥ अब आये इ
 ततपसी जुगल वानर सैन वटोरि कै ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृ
 त्तं ॥ भूतल ताडित पानित लभुज स्फालन कीन ॥ अंगद होइ स
 कोधवपु उचरत वचन सदीन ॥ अंगद उवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ रे
 रे राच्छस वंशघोर घातक पातक चय ॥ समर मध्य श्रीराम कर
 हित वसकल सीस छय ॥ दिशा विदिशा परि पूर्णानिकर नारा
 चन करि है ॥ रघुवर वीर सुधीर जबै करवर धनु धरि है ॥ तब तो
 रमत्य भूपर परहि गिह करहि लुंठित लपटि ॥ समुदाय शिवा
 क बलित करै भयै काग कुंडन रूपटि ॥ ११ ॥ कविरुवाच ॥ दो
 हा वृत्तं ॥ रावन बदत प्रपंच नुत कदु वादी कपितोहि ॥ हौं नह
 नत इहि हंतु तुहि धर्मशीलता मोहि ॥ १२ ॥ दूत यथोक्त वा
 दि दै नरपति हनत नताहि ॥ क्रूर कोप करि करत है वपु विरूपक
 दूवाहि ॥ १३ ॥ अंगद उवाच ॥ परदाग अपहरन मधिलई नर
 चकलनाज ॥ अवेदुत परि शान विच धर्मशीलता आज ॥ १४ ॥
 रावरा उवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ इंद्र माल्य कर मार दार प्रतिहार
 महम कर ॥ गृह ममार्जक वायु वरुन चुन चंद्र छत्र धर ॥ परिनि
 यत पाचक्य पर मयावक पट्ट पाचक ॥ राचक नारद प्रमुख देव
 गुरु आदिक जाचक ॥ मम भवन विभव लयतन कहा तवन क
 रत रघुवर महा ॥ वह मनूज मात्र वपु विदित है वर गुरु मभच्छन
 रहा ॥ १५ ॥ अंगद उवाच ॥ रे रावन हीन दीन कु मती तव दर

सत ॥ राम हि मानत मनुज पुज पाचक चय परसत ॥ कहान दी सु
 र नदी कहा गज अंगवत गज ॥ रवि दय है हय कहा कहा परजा
 पति है अज ॥ रंभा कहाय अवला कहा युग गिनती कृत युग क
 हा ॥ किल काम धनुष धारी कहा ॥ का वानर हनुमत महा ॥
 ॥ १६ ॥ इति श्री पिपलोद पत्त नाधिपाल रावत जी श्री दलह सिंह
 जी विज्ञापित कवि टीका रामांगन गोविंद राम विरचिते श्री वर वि
 लासे रावरांगद योरुतर प्रत्युतर वरानि नाम धिं शो लासः ॥
 २६ ॥ अथ प्रश्नोत्तर ॥ षट्पद वृत्तं ॥ रावरा उवाच ॥ कौतूकिः
 हि कौ सुवन यहाँ आयौ किहि कारन ॥ विष्ट पविजयी प्रष्ट ता
 हितृ राम सम किय धारन ॥ अंगद उवाच ॥ वाली तव बल मथ
 न पुत्र अंगद अभिधाना ॥ आयौ अचल सुवल दूतर रघुवर ज
 ग जाना ॥ बहु बार बार समुजाय कै कहत तोहि जड मति अज
 हु ॥ जान की देहु जग दीश कौ किं वा मस्तक तति तजहु ॥ १ ॥ राव
 न उवाच ॥ सोरठा वृत्तं ॥ धिक धिक अंगद जान जानै तव मासौ
 जनक ॥ वीर वृत्ति निर्मान दूत होय सरिल जत नहि ॥ २ ॥ अंग
 द उवाच ॥ युक्त कियौ श्रीराम जानै मम मासौ जनक ॥ शास्ति ति
 लोकी धाम कृत्य काज सुदुरात मन ॥ ३ ॥ प्रश्नोत्तर ॥ रावन उ
 वाच ॥ राम कहा कृत कार्य यह चित चाहत चीनौ ॥ उत्तर दिय
 नुवराज अवनि धिवंधन कीनौ ॥ रावन उवाच ॥ लंकाना कनि
 काय वेरि वसती नहि जानत ॥ अरु अतरल बल मोहि मनाक
 हु नहि पहिचानत ॥ तब कहि अंगद जानत सबै पै तु मरी नहि बा

तहै॥लंकाधिराजवहविभीषनविदितवीरविख्यातहै॥४॥
 रावनउवाच॥वानरवाँध्योसेतुलकीकौनसीबडाई॥गिरिस
 मानबलमीकपिपीलिकविरचितपाई॥लंकदहीहनुमंतया
 हुमैनहिंअधिकार्इ॥दाहकअग्निसुभावविदितजगजनसब
 गार्इ॥आश्रयशौर्यनिजभुजनकौरामअपरकिंचितकियौ॥
 जुवराजवहवरननकरहुसोसुनिवेहुलसतहियौ॥५॥अंगद
 उवाच॥तिहिंतियनिकटनितांतधिरीरुततनुतितबिलसी
 ॥सियसमानमुखलैनबहिनरावरहियहुलसी॥तिहिंकीना
 सावसायडगकीनौप्रभुपंकिल॥यरदयनत्रिशिरादिरुधिर
 करिकेंधोयौकिल॥परियस्तनयनतवदर्पद्वश्वसानाकछे
 दनकियौ॥श्रीरामवहीविसरतकहाविश्वविदितजिहिंजस
 लियौ॥६॥रावनउवाच॥परिमितमहिमाकुद्रतितहुकृत
 कितिधरधटना॥तिरिक्कैतुच्छसमुद्रलगाईअविरतरटना॥
 अकलितमहतमहत्वदुषददुषारपरमहै॥विंशतिभुजदश
 वदनविंशतीसागरसमहै॥तेअतिअगाधजिनथाहनहिंवृ
 थापरिश्रमकरतहौ॥सबसिद्धकरहुनिजनिजनिलयविना
 मोतक्यौमरतहौ॥७॥अंगदउवाच॥रेरेरावनअसुरअव
 निपररावनकेते॥हमनैबारंवारअवनपुटकीनैअते॥कार्तवी
 र्यदोर्दंडबडपिंडीकृतइकहै॥दूसरगतदैत्येंद्रद्वारदामीदत
 धिकहै॥नाचियौनाचगहिकवलतिततीसरलज्जाजन्यहै॥
 इनवाचकरहुतुंकोनमोअथवाइनतैअन्यहै॥८॥रावः

नउवाच॥कुंभकरनममभ्रातअखिलअरिकुलसंहारक॥का
 लरूपविकरालकलेवरभवभयकारक॥मेघनादममपुत्रपुरं
 दरबंधनकरता॥चंद्रहासममयडगसकलशत्रुनसंहर्ता॥ममहे
 सहायनिशिचरनिकरत्रिभुवनविजईशत्रुसुर॥रावनलसंतअ
 भिधानममराजतराजालंकपुर॥९॥भयेहुतेबलवानमहाक
 पिपतिहैहयपति॥दशकंधरकीकंधप्रतिष्ठाअबछाईअति
 सद्यविपाटितकंठकंदलीकीकसकराकरि॥अंसस्थलिअ
 वकीर्णइमाजिनपल्लवनिजधरि॥धूर्जटीऊटितिप्रस्फोट्य
 तअननउचरेधन्यहै॥ममवालीअर्जुनसमयतैअवप्ररूढ
 बलअन्यहै॥१०॥बच्छत्यलीकठोरमोरसंगरभोसुरपति॥
 शैरावतगजदंतमुसलउन्नतआहतअति॥भग्नभयौमुखक
 रीहृदैममतनकनवासत॥अरुहेलाउच्छिप्रअद्रिकैलाश
 प्रकासत॥संत्रस्तअंगनालिंगनेप्रचुरप्राप्तआनंदहर॥लं
 काधिराजरावनविदितरिपुनअोरहैअन्यतर॥११॥अंगद
 उवाच॥रेरावनहरशैलमथनप्रख्यातपराक्रम॥चहतराम
 तैजुद्धजुक्तनहिलयततोहिहम॥रहनदेउरघुरामलच्छमन
 कृतधनुरेया॥लंघितभईनतुच्छतबहितववलसवपेया॥
 उनलघुकिंकरलंघितजलधिपुरीदग्धअरुअच्छहत॥रन
 घनघमंडतजिदीजियैममबचकीजैअवनगत॥१२॥रावः
 राउवाच॥हिरनकशिपुहिरनाच्छदैत्यदृश्वरभस्मांगद
 ॥अवरअमरद्वयसकलबलकथातुलितनचांगदवाहुसा

रममलं अलंकृत इन अवलोकत ॥ समतालहतनकोपि ॥
 जदपि बहु विष्वविलोकत ॥ जोरामचंद्र रिपुहा कहत भयो
 प्रिया अपहरन अब ॥ अरु संधिवात करवात है जानिलि
 यौ इहिं बीच सब ॥ १३ ॥ अंगद उवाच ॥ मत्थन करि मत की
 ड कहत कैलाश सुभट सुन ॥ शिव गहि गहि पुनि देत तथा
 राम नरावन चुन ॥ अक्षी वंधन देय स्वल्प सरइ वसर सायौ
 ॥ कमल बंधु कुल वधू छंड चह जो सुषपायौ ॥ हम हितू हेरि
 हित की कहत याम धिन कर अचंभ है ॥ मम जनक दिव्य दो
 रेंड जय कलित सुकीरति यंभ है ॥ १४ ॥ प्रश्नोत्तर ॥ चंद्राय
 गावृत्त ॥ कोतूं वाली तनय दूत श्रीराम कौ ॥ कोरषु वर अ
 रु वानर वाली नाम कौ ॥ वांछितो हि चतुर्सिंधु मुहरत मधि
 भूम्यौ ॥ हरि हों वह वाली ममतात हीयें तैं किम गम्यौ ॥ १५
 यट्पद वृत्त ॥ दोरेंड परचंड तोर प्रतिहनन प्रबल गति ॥ सा
 हस बाहु भुज सहस सद्य छेदन कृत भृगुपति ॥ परशुराम ग
 र्वापहारि श्रीराम दूत हौं ॥ अंगद मैरो नाम पुरंदर पूत पूत हौं
 जब भूरि भूमन मूर्च्छित लख्यौ जनक घृणा संजुत भयो ॥ पु
 छाग्र बाल सुनि वास दियत दपितु छवि स्मृतरयो ॥ १६ ॥
 इति श्री पिपलोद पत्त नाधिपाल रावत जी श्री दूलह मिह जी
 विज्ञापित कवि टीकारामांगज गोंविंद राम बिरचिते श्री वर
 विलासे गवरांगद प्रश्नोत्तर वर्णन नाम सप्त विंशो ल्लास
 ॥ २७ ॥ रावगा उवाच ॥ चंद्राय गावृत्त ॥ बालतालतरुह

न साई त्वचते हुते ॥ जर्जर जीर्ण पिनाक भंगन हि अद्भुते ॥ हर
 क्रीड़ा चल कियो कंदु की कीड है ॥ हरि हों सो सुनि सुनि सब
 बीर होत सचीड है ॥ १७ ॥ यट्पद वृत्त ॥ अवन पथन मधि प्रांच
 शर आवत मम कति कति ॥ साम्य शरी उल्लंघ्य जगति जा
 गर्तिलंकपति ॥ जिहिं दोर्मंडल गाढ परम पीडन वर वसैंतैं ॥
 रक्त छटा घन घटा मनौं द्रव धातु दर सैंतैं ॥ अंकुरित कर्म शं
 का अजौ शंकर गिरि कैलाश है ॥ अंगद अशेष मम भुजन
 मधि प्रबल पराक्रम वासैंतैं ॥ १८ ॥ मूरधनि ज उक्ताय हुताश
 न हुत जब तैं अति ॥ स्फुरित बही व्याकीर्ण भाल लिपिलि
 लंकापति ॥ होहिं राम तैं काल अस्य इति वरा वांचितित ॥
 अधिक उमगि शिर आप अस्य लित होय चारुचित ॥ प्रभु प
 ट्पिना कि प्रीति गत किये गिरा जा सगुरा गायते ॥ असल
 सतलंक नगराधिपति कवन तास वैरायते ॥ १९ ॥ इहिं दश मु
 य बड बीर धीर का वर्णन करियें ॥ प्रबल पराक्रम पुंज प्रचुर धि
 यधी वर धरियें ॥ पूजन काज पिनाकि करन चह मस्तक मा
 ला ॥ सूत्र हेत हर कंठ विकर्षन कृत वर व्याला ॥ तब भृकुटी
 की करि सूचना प्रमथ गगन प्रतियेध किय ॥ लंकेश मानि
 तिन कौ कथन लियो अपरिमित हरय हिय ॥ २० ॥ कविरुवा
 च ॥ दोहा वृत्त ॥ इहिं अंतर मधि आइ उत पगत बचन प्रतिहा
 र ॥ सभा स्तार संदोह मधि अधिक उच्च सुरधार ॥ २१ ॥ प्रति
 हार उवाच ॥ यट्पद वृत्त ॥ नैय समय अध्ययन मोन मुखध

रह विधाता ॥ स्वल्प संजल्प नुराज डमति यलु ख्याता ॥ ना
 हिंशक की सभास्तवन गिर संहर नारद ॥ पूर्ण करहु स्तुति
 कथा तुम्बरोगीत विषारद ॥ भल सीतारत्न कभल करि भा
 ग्न हृदय लंकेश है ॥ अश्वत्थ पत्र द्रव स्वस्थ नहि व्याकुल
 बुद्धि विशेष है ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ अंगद होय सकोधक
 हत अरे रावन सुन ॥ तव मथ्यन करि करहि राम दिगदेव ।
 बली चुन ॥ हौं हमार न जोगत दपितो कौनहि मारत ॥ तात
 कक्ष अवशिष्ट बिदित यह बात विचारत ॥ किल कीड़ित
 तव शिर कंदुक निपद प्रहार अगनित किये ॥ निज कीड़
 न की सामगिय यह भंजन करि लज्जत हिये ॥ ७ ॥ सौरदा वृ
 त्त ॥ सत योजन विस्तार तिमितिहि निगलत तिमिगिल ॥
 तिमिगिल गिलहु निहार ताहि गिलत राघव विदित ॥
 ८ ॥ यदुपद वृत्त ॥ अविरल गलदल गलित ललित लोहि
 तरत धारा ॥ धौत विलोचन दृश अंधि अंबुज बहु वारा ॥
 प्राप पिनाकि प्रसाद मुधा जय महिमा जगमधि ॥ अरु अ
 द्री उद्धरन गर्व आरूढ हस्त अधि ॥ दशमस्तक विंशति ।
 करन कौकिल भार उद्यान भल ॥ किल कर्तन फल बहु शि
 रन कौमार उद्धरन भुजन फल ॥ मुंच मुंच मैथिली राम प
 दु पद पंकज भज ॥ करहु राज चिरकाल हविर्भुज होहु अ
 मरत्यज ॥ लंका पुरी प्रजच्छ पराभव पावन जैसैं ॥ उर अंदर
 निरधारि काज वर कीजैं अैसे ॥ नातर चपेट वानरन की ।

मुष्टि वृष्टि हंहे अमित ॥ अतिकूर कीन कुकरम कदिनति ।
 न सब कौ फल मिलहिं तित ॥ १० ॥ निरये नहिं रघुनंद प्रथ
 मनहिं सुनै अवन पथ ॥ कीनों क्यौं न विलंब विपिन विच
 हुतो महारथ ॥ थुव्यो नाहिं छिन मात्र माग मधि भग्यो भ
 यातुर ॥ अजौं न थिर तागही हसत उर अतिशय आतुर
 अव अखिल मानत जि दीजियें लियौं अौं न सुनि वालि ब
 ध ॥ सीता समर्पि रघुवंश निज दास होहु अधिपति अव
 ध ॥ ११ ॥ रावरा उवाच ॥ चंद्रायगा वृत्त हरिष विषाय प्रहा
 र शोथ कछु ही लियौं ॥ उर उदग्र गुरु गगन प्रसभ सव पी ।
 लियौं ॥ सुर श्रिय करिगी काज मार भुज बन कियौं ॥ अरि
 हौं अंगद दशमुख वीर तोहि विस्मृत रियौं ॥ १२ ॥ मैं नैं मेरे
 हत्य मत्य दश छिन्न है ॥ चंद्र हास असि किये अखिल उच्छि
 न्न है ॥ गद गद गिर गलिता श्रुनाहि स्मित वान है ॥ परिहौं
 याके मध्य प्रमान शंभु भगवान है ॥ १३ ॥ छिंधि मोहि मुहि
 छिंधि छिंधि मुहि बोल है ॥ पुनरुद्ध तन निरधिकरत हिय तो
 ल है ॥ नव भव आगें दुन्हें दशानन काट है ॥ परिहौं भूमि पति
 त शिर हसन लगे अट है ॥ १४ ॥ मूल पंच शिर पुष्प रम्य रच
 ना करी ॥ तदु परिलर दसरी चार मस्तक धरी ॥ दशम कहाय
 ह शंक दशम मस्तक भई ॥ परिहौं धर परिकरि कर परसता
 ड छेदत सई ॥ १५ ॥ लंकेश्वर समधीर वीर अतिरम्य है ॥
 जिहि के गुन गन गूढ गिरादि अगम्य है ॥ मत्य हो मिल

विष्णुनलमंदशियभीतहै ॥ परिहां स्वासानलसंदीप कियो
 जुतप्रीतहै ॥ १६ ॥ अंगद उवाच ॥ यदृपद वृत्तं ॥ विक्रममस्त
 कहौंम कथापौलस्त्यबहुत किय ॥ सारो अंगजलायदेतवै
 धव्यभीततिय ॥ अरु शिवगिरि उद्धरन पराक्रम तुमहियहे
 रे ॥ रासभयर उग्रादि भारवाहक बहुतेरे ॥ कछु अपर परम
 पुरुषार्थ कृत होय वहै वरान करौ ॥ बहु बार बार विस्तार
 किय अब यह प्रकरन परिहरौ ॥ १७ ॥ कविरुवाच ॥ सौरा
 ग वृत्तं ॥ विदित वीस चय अंध विंशति श्रवनन करि वधिर
 चहन संधि संवध अंगद उर अँसैं तुली ॥ १८ ॥ स्वामी शौर्य
 मुनाय पुनि अंगद चलिबोचहत ॥ उचरत सीस धुनाय वा
 लिसुवन दशसीस सौं ॥ १९ ॥ अंगद उवाच ॥ यदृपद वृत्तं ॥
 अर्जुन वृषतुहि बहु विदित कारागृह अंदर ॥ मुनिपुलस्त्य
 तव हेतु भये जाचक जिहि मंदिर ॥ तिहि भुजवन उच्छिन का
 र अंतक छत्रिय कुल ॥ परशुराम प्रख्यात पराक्रम बहुबल
 संकुल ॥ श्रीराम तेज बड वागि कृत शौर्य सिंधुतम किय पु
 लक ॥ लंकेश तोर बल तुच्छ सरदुत सूर्य हिलंका मुलक ॥ २०
 रैराक सराज मुंच सहसा वैदेही ॥ धर्मपति श्रीराम चंद्रसत्व
 र वैदेही ॥ मिथ्या निज पुरुषार्थ प्रचुर प्रागल्भ्य रखत उर ॥ वा
 नर भटवाहिनी भयंकर भासत तव पुर ॥ इम कहि कहि अ
 तिउत कटवचन आतंकित लंका करी ॥ निम क्रांत भयौ जु
 वराज दुत कछु दशमुख श्रवनन धरी ॥ २१ ॥ ॥ इति श्रीपि

पलोदपत्तनाधिपाल रावत जी दूलह सिंह जी विज्ञापित क
 विटी कारागमं गज गोविंद राम विरचिते श्रीवर विलासे राव
 शांगद संवादो नामाष्टविंशो ल्लासः ॥ २८ ॥ अब हनुमन्ना
 टके ५४ मोंकः ॥ ८ ॥ कविरुवाच ॥ सौरा वृत्तं ॥ निज प्रताप
 परचंड चंड समर उच्छाह करि ॥ परि पूरन दोर्दंड बिलसत पु
 रलंका पती ॥ १ ॥ यदृपद वृत्तं ॥ मुनिके दशरथ सुवन सुवे
 ला चल कटकोपर ॥ रावनरन उद्योग अमित उच्छव निज
 उरधर ॥ दशकर धनु टंकार ककुभ परि पूरन कीनी ॥ बहुरि
 शिला शित विपुल विमल विशिष्या वलिलीनी ॥ अवशि
 ष्ट रहे दशहत्थ तसतिन करि चित्रा कृतिकरन ॥ अभ्यसत
 अंगना कुचन परमव वल्लिरचना धरन ॥ २ ॥ तदनंतर लंके
 शराज मंदिर शियर स्थित ॥ मंचोपरि आरुह्य लयत वानर
 वाहिनि जित ॥ यह वानर दग्धाग्न पुच्छ लंका विकृती कृ
 त ॥ यहै वालिसुत विदित तस्य आकृति इव वपु धृत ॥ शर
 धनुष धारि कामा कृती प्रयाम होहिं सीता पती ॥ प्रत्येक श
 बु अवलोकि उत मंच स्थित उचरत अती ॥ ३ ॥ तसतियमं
 दोदरी परम सुंदरी बयानत ॥ निशिचर बन स्वच्छंद दवान
 लराघव मानत ॥ पुनि निज पति कौ परम प्रेम सिय प्रतिपहि
 चानत ॥ चहत विजय निज पच्छ अजय प्रतिपच्छ प्रमानत ॥
 वह कबहु कगृह संचार कृत कबहु कपति ढिग प्रापहौ ॥
 छिन पावत नहिं अँक व्रथिति अंतरालगत आयहै ॥ ४ ॥ चं

द्रायरागवृत्तं॥ वंदारकवंदारु वंद अभिवंदिते॥ अति सुंदरं
 दारमालमकरंदिते॥ मंदिर मंदिर मध्यमज्ञानतामंजिते॥ प
 रिहां मंदोदरि चरगार विंदरजरंजिते॥ ५॥ दोहावृत्तं॥ रिपु
 विद्रावरागवराहिकरि करि बहुरि निहोर॥ मंदोदरि अति
 सुंदरी कह अंजलि पुट जोरि॥ ६॥ मंदोदरी उवाच॥ यदपद
 वृत्तं॥ शशि शेषरगिरि आपवाहु उधत जग जान्यो॥ कुंम
 करन निज भ्रात जगत भच्छ कउर आन्यो॥ वासव विजयी
 विदित सुवन घन नादतिहारो॥ तदपि बालि जित वली राम
 रनधीर निहारो॥ दहिं अवला कल बल करि हरी नाथ जान
 की दीजिये॥ निज मंदिर मधि मंदोदरी रहसि विनय सुनि
 लीजिये॥ ७॥ कविरु वच॥ दोहावृत्तं॥ मंदोदरि के वचन सु
 नि सुललित लंका नाथ॥ निज भुज झाड़वर किये वचन बद
 त दशमाथ॥ ८॥ यदपद वृत्तं॥ रावन उवाच॥ भामिनि वयो
 भय करत भीरु बहु निशि चर नायक॥ नसि है रिपु मम महत
 लेख पति नहि रन लायक॥ घन मार्गति गत प्रान हरहि हेरहु
 तपसी के॥ जानहु नाहि विलंब लंब निज उर मधि नीके॥ सु
 निस्वामि वचन वाक्य लसहित भई सभय मंदोदरी॥ क
 हि पाप अमंगल शांत है पुनि आनन गिर उच्चरी॥ ६॥ अ
 क भृत्य सुग्रीव प्रथम कपि इत मै प्रायो॥ वन वन पालक भं
 जि अछ हति नगर जरायो॥ चतुर्गोचर चपचाप लधिर है
 वीर रासव॥ किहि तैं कहु नवनी सकल हे विद्यमान तव

अवदत आयौ कपि बल प्रबल उल्लंघन जल निधिकियो॥ वे
 दच्छत उर नहि आन कहु चाहत चित मै धिली लियो॥ १०॥
 कविरु वाच॥ चंद्रायरागवृत्तं॥ सुनि मंदोदरि कथन सभय
 रावन भयो॥ शुक्र साररा है दूत पठावन मन रयो॥ राम देव
 केशि विरजात आय सदर्द॥ परिहां पुनि निज मंविन सहित
 सहित चिंतत सई॥ ११॥ विरुपाक्ष उवाच॥ यदपद वृत्तं॥
 विरुपाच्छ वर सचिव सुहित वच उचरत ऐसे॥ संप्रति प्रति
 भट उपरि नाहिं प्रोलासन जैसे॥ सीतारच्छन दच्छ लच्छ
 मन कृत धनु रेखा॥ नाहिं उलघी गई भई विस्मय प्रद ले
 खा॥ कपि कटक सहित लंघित जल धिराजन राम महान है
 उन वैदेही वैदेही द्रुत यामह कहु नहिं हान है॥ १२॥ जब
 लौ नाहि निहार राम दशरथ नृप नंदन॥ जब लौ नाहि नि
 हार नयन पाथो निधि बंधन॥ जब लौ नाहि निहार निष्ठा
 ल कलंकापुर॥ कुलांगार ता प्राप्त अनुज सुचरित पवित्र उ
 रा॥ तब लौ विचारि असुराधिपति अनघा सीता अपि यो॥
 इत होय न कोराप कुल कदन दहिं विध अरि संतर्पिये॥ १३॥
 रावन उवाच॥ ये अंते मम बाहु शक दोर्दंड कंडु हर॥ सो हंस
 कानाथ सकल संसार विजय कर॥ वाध्यों वानर सेतु हमहु
 प्रवनन सुनि लीनों॥ देखत हे निजनयन लंक गढ आवत
 कीनों॥ जो जन जीवत है जगत मधि कहान देखत सुनत है॥
 पुवर्धै वीर्य जुत होय सौ तित चित अवि बल चुनत है॥ १४॥

विरुपाच्छ पुनिपठत शक्रशिरपर प्रभुञ्जायस ॥ सकल
 सस्यधरमत्परहत रावरी राजायस ॥ भक्तिभूतपतिशंभुर
 हनलंकापुर आस्यद ॥ द्रुहिगान्वयसभूतिशेकतै अवि
 कशेकहद ॥ दुर्लभहरेकइनगुरागनमै सबजनकौ सर्वत्रहै
 ॥ विलसत असेयहु आयकै आपवीच श्रेकत्रहै ॥ १५ ॥
 इति श्री पिपलीदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजी
 विज्ञापित कविटीकारामांगजगोविंदराम विरचिते श्रीव
 रविलासेरावन विरुपाक्षसंवादो नामै कौनविंशोऽध्यायः
 ॥ २६ ॥ रावन उवाच ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ पंडितमंत्री शुद्धवु
 डि विलसंतहै ॥ विलासीन कौरती सविमुलसंतहै ॥ मा
 नौ मनुज महानपराक्रमसारहै ॥ परिहांतिन कौ मंत्री मह
 दशैक असिधारहै ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ मंत्रिमहोदर अ
 भिध उच्चरत यौतवै ॥ मुयमुय मधुरी वीचलगत प्यारीसवै
 ॥ व्यासनाधीन धरेणधीय उद्योतहै ॥ परिहांतिन नियेधके
 वचन सुदुष सह होतहै ॥ २ ॥ प्रियारूमधुरावाच सदनमधि
 स्वच्छहै ॥ कर्कश सुनय समेत वचन श्रीरच्छहै ॥ प्रियवा
 दीधिति विभव सुभोजन दानमै ॥ परिहांसाधुवादिनररहै
 विपति केथानमै ॥ ३ ॥ जिहिंनिय रायोनिधन मूकता गुन
 महा ॥ तदपि भक्त प्रभु मुयर होय केहम कहा ॥ व्यसनपंक
 माधिमग्न स्वामि कौ करतहै ॥ परिहां कैन फेर उद्धरन मूक
 प्रनधरतहै ॥ ४ ॥ नदीपूर यलप्रीति लच्छमी लेयियै ॥ विन

कारन देयीन नियति पुनिपेयियै ॥ सरु वनिता सुकुमार उ
 रसि आनै सवै ॥ परिहां अस्थिर जोवन जगति आप जानहु
 सवै ॥ ५ ॥ दतोच्छाह अकार्य मध्यहूजैरहै ॥ ठकुर सुहा
 तीवात सकल संतत कहै ॥ चितगृहनमधिचतुर विदग्धा
 बधानियै ॥ परिहां मधुकर इव करंगति महीपति मानियै ॥
 ॥ ६ ॥ दिनमधिपयिनिप्रभाकुमुदतिरै नहै ॥ संततरहत
 नचैनतथैव अचैनहै ॥ क्रमकरि संपद विपद सबहु कौआ
 पहै ॥ परिहां यह उर अंदर अवस आनियै आपहै ॥ ७ ॥ नी
 तिशास्त्र यह विविधधीय धुवधार्यहै ॥ वर्गान किय गुर्वा
 दि अघिल आचार्यहै ॥ इहां सुषदहै श्रेक द्वितिय परलो
 कहै ॥ परिहां उभयलोक मधितृतिय घनानंद ओकहै ॥
 ८ ॥ अतिउत्तम उभयत्र सुषद उर अनियै ॥ पुनिउत्तम पर
 लोक मोदप्रद मानियै ॥ अधमाधम आनंद प्रदायक अ
 व्रहै ॥ परिहांतिहिं तै कारज सरत नाहिक कुतत्रहै ॥ ९ ॥
 स्वामिनिधन करि सचिव शस्त्रविष आदितै ॥ सरुअप
 नौ प्रिय परम करत राज्यादितै ॥ वहहै ऐहिक शास्त्रपा
 पसब मूरहै ॥ परिहांतिहिं सुरव पर बहु वार डारियै धूर
 है ॥ १० ॥ निगममार्ग उच्छिन्न करत जो पापहै ॥ प्राग्याभं
 ग महीपकियै सो प्रापहै ॥ ताके वधमधिलहत नुकलुष
 अपारहै ॥ परिहांदिसह सरसनाशेष पावन नपारहै ॥ ११ ॥
 विन अपराध प्रधान प्रभु पीडित करै ॥ तनकनतिहिं वैरु

एकदाधियमैंधरें ॥ वह आमुष्मिक शास्त्र सुयद पर ।
 लोक है ॥ परिहां उत्तम उहि उचरंत विदुष अवलोक है ॥
 १२ ॥ राज्य गृहन सामर्थ्य सनिवमधि है सही ॥ तदपि स्वा
 मिबध कदा मनहु मानें नही ॥ वह आमुष्मिक ऐहिक
 वचन उचारियें ॥ परिहां उत्तम उत्तम वहै धूवधियधारियें
 ॥ १३ ॥ शुकसारगातवसचिव जुगल ऐहिक कहे ॥ ग
 तवानरवपुधरि अजौं जित हीरहे ॥ आमुष्मिक विरु
 पाक्षि महीदर दोय हैं ॥ परिहां सीय समर्पहु नतर संग च
 र होय हैं ॥ १४ ॥ इति श्री पिपलोदपत्तनाधिपाल रावत जी
 दूलह सिंह जी विज्ञापित कविटीका रामांगज गोविंदरा
 म विरचिते श्रीवर विलासे महोदर मंत्री वाक्य वर्णन ना
 म त्रिंशोऽंशः ३० ॥ कविरु वाच ॥ दोहा वृत्त ॥ रावनम
 यशिर कंय सह करत स्वबुद्धि विचार ॥ नीति शास्त्र निज
 अवन सुनि सोधत सारा सार ॥ १ ॥ रावरां गत रगत विचार
 ॥ कुंभकराभाता बली राजलो मन लाई ॥ जो कदापि यह
 मुहि हनै पहिलै पठवौं याई ॥ २ ॥ कविरु वाच ॥ विरुपा
 क्ष अरु महोदर विभु अंतरगत भाव ॥ जानिलियौ शिर कं
 प करि बुनि पठ सचिव सुभाव ॥ ३ ॥ विरुपाक्ष महोदरा वृ
 चतुः ॥ वदत धर्म नित नीति विद केवल नरपति अग्र ॥ यु
 वराजादिक केनिक दन कह कदापि समग्र ॥ ४ ॥ षटपद
 वृत्त ॥ हालं केशवर नाथ शुद्ध अधिकारी हम है ॥ किय

शंका अंकुरित कहा वै रूप्य विसम है ॥ नाहिं सर्प मुयरक्त
 लयत नहिं दुष्ट कलेवर ॥ तथा न धन नृपनि कट न पुनि वि
 तरहत प्रजा कर ॥ बहु द्रव्य दुरधिकारी सदन ते निज प्रति
 प्रति देखत ॥ हो स्वामि आप नहिं मूढ धीनाहि उभय हम
 दुष्ट भत ॥ ५ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ दुष्ट सचिव कर अपि राज
 सब भार है ॥ महि पति रहत प्रमत्त सुखैर विहार है ॥ जिम
 विडाल के अग्र राशि पय पात्र है ॥ परिहां सोवत ते नृप मू
 ढ सु संशय नात्र है ॥ ६ ॥ षटपद वृत्त ॥ किये अवनि उत
 यातति नैरोपत औरैं थल ॥ कुसुमित तरु सुमचुनत कुद्र
 लघु वर्धत नित भल ॥ बाहर कृत कंदकी सुतर संहत वि
 श्लेसत ॥ नम्र करत अत्युच्च नीच दुम उच्च सतत कृत ॥
 जिम माली निममहि पालहू करत रहत चित चिंतवन ॥
 वह चतुर चक्र चूडा मरागी नृप पावत आनंद घन ॥ ७ ॥
 दोहा वृत्त ॥ संग रह करत अशुद्ध जद्यपि महि पति शुद्ध
 ॥ कछु कारज वस होय कै मदन प्रदाइ विरुद्ध ॥ ८ ॥ क
 चित प्रयोजन हीन हू दैत प्रयोजन पूर ॥ इत प्रमान निज दु
 ष्ट सुरशंकर जान जरूर ॥ ९ ॥ षटपद वृत्त ॥ सकल सुश
 क्ति समेत सदा शंकर समलंकृत ॥ जदपि जीरी किय जह
 र तदपि मस्तक सुधांशु धृत ॥ किय भस्म कंदर्प तदपि
 गिरित नयाधारत ॥ सुर शरिता शिरधारि भाल दृग अत
 ल दवावत ॥ नित नृपति नीति मधि निपुण शिव संतत

तबरच्छा करौ ॥ जगविदित विरोधी वसु बहु काजः
 निरयिसंगनह धरौ ॥ १० ॥ दिपतदिगंवर देवधनुषधारन
 किहिं कारन ॥ धरोशस्त्र जोहस्त क्यौन किय भस्मनि
 बारन ॥ धरीभसित तौ काहि संगनारयत निरंतर ॥ रबी
 प्रियातो काहि कामतैं दैय करत हर ॥ अन्योन्य विरोधी
 कर्ममधिनिरत निरयि निजनाथ कौं ॥ वपु अस्ति शेषमूं
 गीभयौगावत स्वामी गाय कौं ॥ ११ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥
 नृपदुर्योधन नाम भविष्यति अग्र है ॥ ब्राह्मण मंत्री वी
 र द्रौणासु उद्गम है ॥ तिहिं के वचन उलंघि व है भविता
 जथा ॥ परिहां नाहिं निशाचर नाथ हजियौ तुम तथा ॥
 १२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ इम कहि कै मंत्री निधि
 ल निज निज गये निवास ॥ रावन मंदोदरि सहित वितर
 त विपुल बिलास ॥ १३ ॥ कीनौ गवन अशोक वन वस
 त जान की यत्र ॥ रावन सौं मंदोदरी कहन लगी कछु त
 व ॥ १४ ॥ मंदोदर्युवाच ॥ मम अरु मै थिलि वपुष विच
 भासत कितनौ भेद ॥ सो निज बुद्धि विचारि करि उचरहु
 आप अयेद ॥ १५ ॥ रावन उवाच ॥ वरवे वृत्तं ॥ तव त
 नु गंध मनोरम मीन समान ॥ परिमल सीय कलेवर क
 मल प्रमान ॥ १६ ॥ बिलगन मानहु प्यारी मम सुनि वै
 न ॥ रूप अनूप मउभयन कछु भिद है न ॥ १७ ॥ शब्दा
 लंकारे यम कालंकारः ॥ सीता धर्मधुरीनारामनजो

ग ॥ सीता धर्मधुरीनारामनजोग ॥ १८ ॥ कविरुवाच ॥
 मंदोदरि सव सुनि कै रावन बोल ॥ करन लगी निज जिय म
 धिलंका तोल ॥ १९ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ पाप कथामधिम
 गन विभीषन भात है ॥ कुंभ करन प्रस्वाप वीच दिन रात
 है ॥ अभिमानी असुरेश निमग्न कलंक मै ॥ परिहां लं
 का डूबत हाय अपरि मित कंप मै ॥ २० ॥ कविरुवाच ॥
 दोहा वृत्तं ॥ तदनंतर तिहिं दोरतैं भये सकल निसक्रांत ॥
 बांह बांह वरनन करत असंभवित वृत्तांत ॥ २१ ॥ इति श्री
 पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्रीदूलह सिंह जी विज्ञा
 पित कविटीकारा मांगज गोविंद राम विरचिते श्रीवरवि
 लासे मंत्रिवाक्य नामैक त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ अत्र हनुम
 नाटकें नवमोऽंकः ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ तद
 नंतर लंकेश सानुचर मंदिर सुंदर ॥ करि प्रवेश उच्चरत उई
 इच्छा उर अंदर ॥ भौ अजुजी वीमोर अखिल सुनिले उवच
 नमम ॥ मायारचन प्रपंच कियौ चाहत है चितहम ॥ मनरु
 चै देव सो कीजियैं इम असुरन उत्तर दियौ ॥ सो सुनि सुखसर
 सावन लग्यौ रावन हर सावन हियौ ॥ १ ॥ तछिन रजनि चो
 शराम सौं मित्री मध्य दुई ॥ माया विरचित किये रूप ललि
 ताइ परत चुइ ॥ गलद विरल रत धार प्रेत परियस्तनयन व
 र ॥ जनक नंदिनी निकट कटिति धर कटे अग्र धर ॥ शिरः

जुगल जोय जुगभात के सजल नयन हुय जानकी ॥ सुधिर
 ईकछून सयान की विसरि गई गति प्रानकी ॥ २ ॥ अहह
 निमीनर नाथ नंदनी गदगद बयनी ॥ चुवत चारु चयनीर
 फुल्लनवनरिजनयनी ॥ स्वामि मरन भयभीत उच्चरत आन
 नसीता ॥ हृदय दहन नहिं दहत मृत्युना पिचनहिं नीता ॥
 हारामरमन संकट रामनहा लक्ष्मन यह का भई ॥ अतिः
 शर वीरता धीरता राचर सब कित कों गई ॥ ३ ॥ कविरुवा
 च ॥ दोहा वृत्त ॥ रामचंद्र शिर कमल ढिग बहु बिध करत
 विलाप ॥ हा प्रभु पीत महारमन विश्ववीर वर आप ॥ ४
 ॥ सीतोवाच ॥ यदपद वृत्त ॥ सुललित सरयूनीर तीर वा
 नार कुंज मह ॥ कामकेलिकमनीय मध्यवर वदत वचन
 वह ॥ सुमधुर अधर मदीय पान पीयूय मनत तित ॥ भयों
 शीर्षा परि पूरा गयो सब उहिं प्रभाव कित ॥ जिम अंबर
 विन सत अर्कतम तिम करियैं अरिगनहनन ॥ मम देवि
 देवि अति दुर्दशा मनमधिकछु कीजैं मनन ॥ कविरुवाच
 ॥ दोहा वृत्त ॥ शिर विलोकि सिय उर विरह शोक मोह
 अरु कोह ॥ प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित दुसह दुख्य संदो
 ह ॥ ६ ॥ गवन मधुरालाप करि देत विपुल विश्वास ॥ ति
 नैं सी प्रतन कन सुनतर हीन जीवन आस ॥ ७ ॥ सीतोवा
 च ॥ यदपद वृत्त ॥ चहत प्रानपरित्याग कहत करुणामय

वचना ॥ पीतमप्यारे प्राननाथ कैसी यह रचना ॥ उत्तर कैं
 नहिं देत वदन वारिज मधुवानी ॥ नयन निहारत नाहिं
 कहा मो कों न पिछानी ॥ वर वि बुधवधू वल्लभ भये वि
 सरि गये सुधि मोर सब ॥ आलिंगि मत्थ हंसा उडहि डहि
 अवसर अविलंब अब ॥ ८ ॥ कविरुवाच ॥ इम कहि
 मस्तक कमल जवैं आलिंगन लागी ॥ गगन गिरा गंभी
 र भई करुणारस पागी ॥ नयलुनयलु यह सीय राम भू
 पाल मुकुट मनि ॥ समर शिर सिनहिं वध्य तोर प्रिय कदा
 काहु छिन ॥ मत परस मात इहिं माथ कों धारहु धिय निर
 धार है ॥ हा हर हर हर हर भक्त कौ यह माया अवतार है ॥
 ९ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ अस अकाशवाणी सुन
 तरावन जुत जुगमथ्य ॥ करि अंबर उत्पतन द्रुत किय निम
 क्रमरा अकथ्य ॥ १० ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ संजुत लज्जा हर्य
 भई तब जानकी ॥ इक शर्मा राकसी पियारी प्रानकी ॥ ता
 सों बूझत सीय यहै अद्भुत कहा ॥ परिहां प्रत्युत्तर वह देत
 होय सकरुणामहा ॥ ११ ॥ शरमोवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ तून
 हिं जानत जानकी रावन माया ध्यात ॥ भयजिन आनहु भा
 मिनी जीवत राम सभात ॥ १२ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ काहल
 मर्दल आदि कुलाहल होत है ॥ सज्जतुरंग महेसन नाद
 उदोत है ॥ आकराय आकरा विलोचनि वार्त है ॥ परिहां

रामसमागम सोर निशाचर स्यात है ॥ १३ ॥ बट्ट पद वृत्त ॥
 विरम विरम कोपतें कहा अपमान विचारत ॥ रावन सत
 नयबंधु विमर्दन रघुवर धारत ॥ इंद्र नील मणि नील राम
 कोमल इंद्र दीवर ॥ करि हैं त्वद धरपान कोमलांगी जुनि
 रंतर ॥ सुनि शरमा के वर वचन दुमजिय जानी पियजिय
 त है ॥ तनु विरह ताप में लोम बैल जित दिय छिन किय
 त है ॥ १४ ॥ कविरु वाच ॥ दोहा वृत्त ॥ यदि लै लखित ॥
 स्यात मच कटेन पापी प्रान ॥ सभिप्राय यह आनि उर में
 छिनि लज्जावान ॥ १५ ॥ इति श्री पिपली दपत्तनाधिपा
 ल रावत तीर्थी दूलह सिंह जी विज्ञापित कवि टीकाराम
 गजगोविंद राम विरचित श्री वर विलासे माया मस्तक
 निर्मोरा नाम द्वाविंशोऽक्षरः ॥ ३२ ॥ कविरु वाच ॥ चं
 द्रायगा वृत्त ॥ भिन्न मार नाराच भयौ अशुरे शां है ॥ पुनि
 अशोक बाटिका कियौ परवेश है ॥ परि वृत्त सुर सुंदरी अ
 मित संदोह है ॥ हरि हां हिय विकार सिय करन महामन
 मोह है ॥ १ ॥ रावन उवाच ॥ बट्ट पद वृत्त ॥ अस्मत् चंड च
 पेट घात स्वर्दंति पतित है ॥ कुभप्यल अति धूल रक्त मु
 तियत तितित है ॥ तिन करि अर्चित अंघ्रि उर प्यल अवि
 रत दून के ॥ तव पद पंकज निकट नमत अलिनी शिर जि
 न के ॥ जानकी अद्य सब लो कियें भामिनि भाग्यावलि भः

ली ॥ इक संग अहो इत आप की सती चरित बली फली ॥
 २ ॥ लख में छिनि मम मध्य दूनें शंकर शिर धारे ॥ पद संशि
 तते भयं अवेइत आद तिहारे ॥ कहा अवग्या करन रते
 कर भोरु विनय सच ॥ सुनि मुनि सभय सकोप भट्ट परति
 मलं पट बच ॥ वैदेहि वदत रे मंद मति शिवो जी गो निमो
 ल्य सव ॥ धिक तोहि तोर आनन नधिक है अति गाय स
 स्पृश्य सब ॥ ३ ॥ कविरु वाच ॥ दोहा वृत्त ॥ सिय साध्वी
 सुंदर बचन सच्छर अलप अमोल ॥ रच्छा करि हे गवरी
 टारहि विघन अतोल ॥ ४ ॥ रावगा उवाच ॥ चंद्रायगा
 वृत्त ॥ हू हे भोरं भोरु बिदश मुय म्लान है ॥ स्थाता स्वामी
 राम न संगर थान है ॥ सैना शाया मृगी विपद पुनि जाप है
 ॥ परि हां यथा च्छर परलोपि अर्थ थिर थाप है ॥ ५ ॥ बट्ट
 पद वृत्त ॥ काहि अवग्या करत यहें दश मुख तव पदनत
 ॥ जवैं किये शिर छेद तवें मो प्रति दुम उचरत ॥ रंगें लंके
 श छेदि हम कौं शं करतें ॥ मत मागहु वरदान न कहुं हमें
 गन नरतें ॥ अरु हरतें सैमी कही गुह सौं पन जिन देउ
 वर ॥ जउत उस कुडु शिर धरे शिव बूढि विधि गवन स
 सुरवर ॥ ६ ॥ राम अर्धचित सीय अर्धचित रावन खंद
 र ॥ आधें मैं विरहागि अर्धगोखान लमंदिर ॥ शीत द
 ह है अक अपर अति उषा दाह है ॥ दग्ध करे जा भयो

जानकी तोर नाह है ॥ अब तास आस उर छंडियें मोमधि
 मानस मंडियें ॥ जिन देह दुसह दुय दंडियें हिय दृढ हटय
 लुं डियें ॥ ७ ॥ मुग्धे मैथिलि चंद्र विंव सुंदर मुयि सीते ॥
 ओयधि प्रान प्रयान प्रान रय प्रान पिरीते ॥ मन्मथ नदी मृ
 गाच्छि असुन दुश्वरी रच्छ अव ॥ मुंच मुंच मुंचाशु उर स्थि
 त यह आग्न हसव ॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर राम
 चद्र है अक मुय ॥ हौं असुर नाथ निज थान थित इत गहि
 है दशवदन सुय ॥ ८ ॥ जानक्यु बाच ॥ चुपरहु चुपरहु
 असुर मुधा जलित नहिं कीजें ॥ मेरे निश्चय बचन वी
 स अवन न सुनिलीजें ॥ उत्पल श्यामल कांति राम भुज
 भिरहिं कंठ मम ॥ विंशति पारिा कृपारा करहि कंतन
 निर्दयतम ॥ इन उभय वात तै तीसरी तीन काल मधि हो
 हिना ॥ वड विंशति गल्ल बजाइ कै वचन सुनावहु मोहि
 ना ॥ ९ ॥ दोहा वृत्त ॥ मोर निरंतर ध्यान धरि राम लियौ म
 द्रूप ॥ तै सैं तव कुल कदन कौं मम निरयहि तद्रूप ॥ १० ॥
 कविरुवाच ॥ रावन भौनिस क्रांत तव सुनि वेदे ही बैन ॥ नि
 ज मंदिर अंदर गयो चडतन कित चित चैन ॥ ११ ॥ ककु क
 समय तित थित रयो पै न चैन मन रंच ॥ पुनिसिय हिग
 जावन निमित्त विरचत महा प्रपंच ॥ १२ ॥ यट्पद वृत्त ॥
 नाना वादित वजत तुरग स्यंदन गज गज्जत ॥ कपि भट

कटक सुभुजा स्फाल कोलाहल छज्जत ॥ रघुवर विजय व
 जाय कियौ पूरित लंका पुर ॥ राम रूप गहिवन अशोक
 प्रति गयो उमगि उर ॥ लिय पंच पंच शिर कर जुगल निशिच
 र पति के पकरि कच ॥ जानकी हेरि हर थित भई मानि मन
 सि निज स्वामि सच ॥ १३ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ लंका भट रघु
 नाथ वेद्य वर धरिलियौ ॥ जनकात्मजा ममी पगौं न तूरन
 कियें ॥ नाम लेत विभिचार हीय जिहि हटत है ॥ परिहां
 रूप धारि रघु वीर कि दुर्घट घटत है ॥ १४ ॥ निरधि निर
 धि निमि नृपति नंदिनी नैन है ॥ रघु नंदन वर वेद्य विराज
 त अैन है ॥ भामिनि भयत जि भई सह रित हीय है ॥ अ
 रिहां रुचि करिता ससमीप गई शुचि सीय है ॥ १५ ॥ यट्प
 द वृत्त ॥ निरधिराम साच्छात इति कुच तटी भारनत ॥
 तदपि तूरा उष्याय अग्र चलि गई सीय तित ॥ प्राण नाथ
 हौं धन्य रजनि चर मस्तक तजियें ॥ शात होय विरहागि
 गाढ आलिंगन सजियें ॥ इम मिलन मनोरथ मैथिली क
 रन चही किंचित जंबै ॥ वह राम वेद्य धारी असुर भयौ क्री
 वत छिन तबै ॥ १६ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ सीता सती समी
 प निशाचर यंड है ॥ सत्वर भयौ विशोर्गा जास मरिा दंड
 है ॥ इच्छा मात्र करंत यहै फल प्राप है ॥ परिहां शिव शिव
 अंतर्धान असुर पति आप है ॥ १७ ॥ कविरुवाच ॥ कह श

जानकी तोर नाह है ॥ अब तास आस उर कंडियें मोमधि
 मानस मंडियें ॥ जिन देह दुसह दुय दंडियें हिय दृढ हटय
 लुं डियें ॥ ७ ॥ मुग्धे मैथिलि चंद्र विंव सुंदर मुयि सीते ॥
 आंयधि प्रान प्रयान प्रानरय प्रान पिरीते ॥ मन्मथ नदी मृ
 गाच्छि असुन इश्वरी रच्छ अव ॥ मुंच मुंच मुंचाशु उर स्थि
 त यह आग्न ह सब ॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर राम
 चद्र है एक मुय ॥ हौं असुर नाथ निज थान धित इत गहि
 है दशवदन सुय ॥ ८ ॥ जान क्यु बाच ॥ चुपरहु चुपरहु
 असुर मुधा जलित नहि कीजें ॥ मेरे निश्रय बचन वी
 स अवन न सुनि लीजें ॥ उत्पल श्यामल कांति राम भुज
 भिरहि कंठ मम ॥ विंशति पारि कृपा रा करहि कंतन
 निर्दय तम ॥ इन उभय वात तै तीसरी तीन काल मधि हो
 दिना ॥ बड विंशति गल्ल बजाइ कै वचन सुनावहु मोहि
 ना ॥ ६ ॥ दोहा वृत्त ॥ मोर निरंतर ध्यान धरि राम लियौ म
 द्रूप ॥ तै सैं तब कुल कदन कौं मम निरयहि तद्रूप ॥ १० ॥
 कविरु वाच ॥ रावन भौनिस क्रांत तव सुनि वैदेही बैन ॥ नि
 ज मंदिर अंदर गयो चडतन कित चित चैन ॥ ११ ॥ कछुक
 समय तित थित रयौ पै न चैन मन रंच ॥ पुनिसिय हिग
 जावन निमित्त विरचत महा प्रपंच ॥ १२ ॥ यट्पद वृत्त ॥
 नाना वादित वजत तुरग स्यंदन गज गज्जत ॥ कपि भट

कटक मुभुजा स्फाल कोलाहल छज्जत ॥ रघुवर विजय व
 जाय कियौ पूरित लंका पुर ॥ राम रूप गहि वन अशोक
 प्रति गयो उमगि उर ॥ लिय पंच पंच शिर कर जुगल निशित
 र पतिके पकरि कच ॥ जानकी हेरि हर धित भई मानि मन
 सि निज स्वामि सच ॥ १३ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ लंका भट रघु
 नाथ वेद्य वर धरि लियौ ॥ जनकात्मजा समीप गौं न तूरन
 कियौ ॥ नाम लेत विभिचार हीय जिहि हटत है ॥ परिहो
 रूप धारि रघुवीर कि दुर्घट घटत है ॥ १४ ॥ निरयि निर
 यि निमि नृपति नंदिनी नैन है ॥ रघुनंदन वर वेद्य विराज
 त सैन है ॥ भामिनि भयत जि भई सहर्षित हीय है ॥ अ
 रिहो रुचि करिता स समीप गई शुचि सीय है ॥ १५ ॥ यट्प
 द वृत्त ॥ निरयि राम साच्छात झटि कुच तटी भारनत ॥
 तदपि तूरा उथ्याय अग्र चलि गई सीय तित ॥ प्रारानाथ
 हौं धन्य रजनि चर मस्तक तजियें ॥ शात होय विरहा गि
 गाढ आलिंगन सजियें ॥ इम मिलन मनोरथ मैथिली कि
 रन चही किंचित जंबै ॥ वह राम वेद्य धारी असुर भयौ क्री
 वत छिन तबै ॥ १६ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ सीता सती समी
 प निशाचर बंड है ॥ सत्वर भयौ विशीरा जा समारि दंड
 है ॥ इच्छा मात्र करंत यहै फल प्राप है ॥ परिहो शिव शिव
 अंतर्धान असुर पति आप है ॥ १७ ॥ कविरु वाच ॥ कह श

रमा जानकी यहै नहिं रामरी ॥ रावन असुराधीश सुमाया
 ग्रामरी ॥ सीय भई सविद्या उचारत वैन है ॥ परिहां परिहै
 किम पहिचान सु नीरज नैन है ॥ १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हाहा
 हा आकाश धरनि हा वरुन है ॥ हाहा वायो अर्क करहु मम
 करुण है ॥ रहि है कौन प्रकार आत्मगत धर्म है ॥ ॥ ॥
 परिहां परिहै किम पहिचान प्रान प्रिय पर्म है ॥ १९ ॥ कविरु
 वाच ॥ तब बानी आकाश अमल सैसी भई ॥ चतुर शिरोम
 शि सीय सिंदराणी यह सई ॥ राम शराहत राच्छ सेंद्र स्मो
 यहै ॥ परिहां चुंबहि मंदोदरी ताहि अति रोय है ॥ २० ॥ तब
 परिहै पहिचान सिये तव पीय की ॥ शमन होय गी दुसह दु
 व्यत तिहीय की ॥ सै सै सिय समजाय गगन गिर चुपरई ॥
 परिहां मै थिलि मान समध्य सकल दुविधा गई ॥ २१ ॥ क
 विरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ रावन निज केली सदन धित हुइ कर
 त विचार ॥ मया प्राप्त राम त्व पुनि किय त सचरित प्रचार ॥
 २२ ॥ रावरा उवाच ॥ पाप मूल प्रवृत्ती विदित निपट निरु
 धन कीन ॥ कौन समय मधि क्रीब पन दुष्ट दुसह दुष दीन ॥
 ॥ २३ ॥ यट्पद वृत्त ॥ जन स्थान मधि भ्रांत कनक मृगतृणा
 हत धिय ॥ वचन सुवैदे ही तिसा शुप्रति पद प्रलपित किय ॥
 ॥ कीनौ लंका भर्तृ वदन परिपाटी धटना ॥ मया प्राप्त राम त्व
 कुशल वसुता सुनिकटना ॥ इहि मध्य प्रलेय त्रय चीन है प्र

थम कीन रावन रचन ॥ पुनिर्द्वि तिय राम प्रवचन पठत ॥
 तृतीय काहु मिच्छुक वचन ॥ २४ ॥ इति श्री पिपली दयत
 नाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापित कवि
 टीकारा मांगज गोविंद राम विरचिते श्री वर विलासे राव
 रा प्रपंचो नाम त्रय विंशोत्तासः ॥ ३३ ॥ अत्र श्री हनुमन्ना
 टके दशमोंकः ॥ कविरुवाच ॥ यट्पद वृत्त ॥ गिरि सुवेल
 पित कटक वीचर घुराज विराजत ॥ सहित भ्रात सुग्रीव
 विभीषन जुत छवि छाजत ॥ लंकाधिप प्रतिजाय जवै सं
 गद उत आयौ ॥ विभुवल्लभ वैदेहि वाहि निज निकट वि
 ढायौ ॥ युवराज दूत वर्गान करहु है संधी उपकारिणी ॥
 दशग्रीव निकट तुमरी गिरा भई अथवानुपकारिणी ॥ १
 संगद उवाच ॥ संगद जुग कर जोरि अरज कीनी इहिं री
 ती ॥ अनुप करिणी भद्र पुलस्त पोते पर प्रीती ॥ उदाहरण
 हरिणांक भाल तिहिं गुरु भवभासत ॥ उद्धारय अरु अ
 स्थिमाल भूषन परकासत ॥ अरु संग राग भल भस्म जि
 हिल सत वस्त्र गज चर्म है ॥ ऐकालय स्थधन पति सबाज
 सगुरु त सशिष्य धर्म है ॥ २ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि विहसे रघुन
 दहु कम पुनि ताहि सुनायौ ॥ भो संगद जुवराज समर वर
 अवसर आयौ ॥ सब सैनिक सुग्रीव दीजिये आय स
 सै ॥ रहै शर्वरी वीच सकल सावध हुइ जै सै ॥ पुनि प्रात प्रभा

करके उदयसंगर उत्सव है महा ॥ तब कहित था सुतारा तन
 य कपिन कपिन कपि वर कहा ॥ ३ ॥ सरस शर्वरी समबरा
 मलछ मन देखे भाता ॥ कियौ कटक मधिशयन तहां विभु
 वनजन वाता ॥ रावन पठे प्रबल प्रभंजनि नाम राकसी ॥
 छार्दिल बल सकल छ की मद अछ कछा कसी ॥ निर्भर
 शयान लविराम कौंति छन छुरिका कर लई ॥ गुरु भ्रम
 रा सुदर्शन चक्र लखि चकित बरा की तकि रई ॥ ४ ॥ कवि
 रु वाच ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ तिहिं अवसर प्रतिबुद्ध सु अंग
 द वीर है ॥ प्रभंजनी अधिगम्य सु अधिक अधीर है ॥ पुन
 र्गंतु मुद्यता गर्व गति गोप है ॥ परिहांत व अंगद उच्चरत वच
 न साटोप है ॥ ५ ॥ अंगद उवाच ॥ यदृपद वृत्त ॥ तिष्ठ तिष्ठ
 निशिचरी छिन करहि जाउ अत्र है ॥ फिर जावहु निज स्वा
 मि असुर अधिपाल यत्र है ॥ आर्द्र अंगद बाहु पाश मधि
 आक्रंदत अब ॥ हरिणी सिंहाधीन तास को है वाता तब
 ॥ इम कहि उहिं अभिमर्दन कियौ भैर वर वचि द्वार कि
 य ॥ सो सुनत सकल कपि कटक के जागि उठे अकुला
 य हिय ॥ ६ ॥ कविरु वाच ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ अकूपार
 द्वार यामिनी पाय कैं ॥ प्रात होत कपि वात चले सब धा
 य कैं ॥ दोर दंड आस्फाल केलि अभिनीय है ॥ अरिहां उ
 त पादित साटोप शैल कमनीय है ॥ ७ ॥ दोहा वृत्त ॥ गिरि

वर तरु वधारिकर करि कोला हल चंड ॥ लंका की नी आ
 कुलित वानर ओघ उदंड ॥ ८ ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ लंकाम
 धिलं केश उदयर विहोत ही ॥ सुनि वानर वाहिनी कुला ह
 ल श्रोत ही ॥ अमरय मुर्छित होय सुभट बुलवाय है ॥ परि
 हां दीनो उत कटक कटक झटिति पठवाय है ॥ ९ ॥ लंका च
 ल शुभा शिखर मंचयित आप है ॥ मंत्रि महोदर पुरे भाग महि
 याप है ॥ रघुवर वर वाहिनी विलोकत मान है ॥ परिहां म
 हिमा महद महान करत अनुमान है ॥ १० ॥ जल निधिये ल
 त हुते इतैं वानर सबैं ॥ जातु धान की फौज उतैं आर्द्र जवैं ॥
 लीनैं झटिति उयारि वृच्छ बहु वृंद है ॥ परिहां छिन मधिकि
 यौनिकंद निशाचर कंद है ॥ ११ ॥ सचिव विभीषन उर नल
 गे कपि वासतैं ॥ बाहि बाहिर घु वीर उचारत आसतैं ॥ तब
 तूरन हनुमान जितैं जावत भये ॥ परिहां सकल दिये सम जा
 य भेद गावत भये ॥ १२ ॥ लंकाम धिलं केश महोदर तैं कहैं
 कव आये इत गम समैं सुनिवौ चहैं ॥ अविदित आगम दि
 वस मोहिर घुराज कौ ॥ परिहां बैदी वस नहि कियौ समर के
 काज कौ ॥ १३ ॥ सीय समर्पहि गम यही उर आनिकैं ॥ मंत्रि
 महोदर नाम सु कहत वधानिकैं ॥ वानर वर वाहिनी नयन
 लखि लीजियैं ॥ परिहां रामा गम दिन कहत श्रवन गत की
 जियैं ॥ १४ ॥ महोदर उवाच ॥ यदृपद वृत्त ॥ धरहि गई नम्र

धराधर धूजन लागे ॥ कुम्भित अखिल अंभोधिकरणा गि
र कूजन लागे ॥ बर्यागम समवैरिव धूवर वतन यन पथ ॥
वाहिनि पद प्रच्छेय धूलि अछा दितर विरथ ॥ लंकेश
आप जान्यौं न किम राम जैत्र यात्रा दिवस ॥ धुव धोल धा
म धूजन लागे शेष कमठ संकुचित अवस ॥ १५ ॥ सम
स्या ॥ सूर्योदय के समय रुदन चकई कियौ ॥ चंद्रायणा
वृत्त ॥ जय प्रयागर धुनंद भयौ हो जास मैं ॥ अति शाय धू
लिक दंव उड़े हे तास मैं ॥ प्रभु छत्र निहारि नैन फाट्यो हि
यौ ॥ परिहां सूर्योदय के समय रुदन चकई कियौ ॥ १६
॥ दोहा वृत्त ॥ सहायार्थ सुरपति दिये छत्र तुरग गज आ
दि ॥ तिन करि शुभ शोभित भये रघुवर राम अनादि ॥ १७
॥ कविरुवाच ॥ पुनि रावन वृजन लग्यो कहहु महोदर कु
त्र ॥ किहिं किहिं ढिग का का करत रघुवर दशरथ पुत्र ॥ १८
॥ महोदर उवाच ॥ यदृपद वृत्त ॥ कहत महोदर ग्रीवल सत
सुग्रीव गोद मैं ॥ अच्छ निहंता अंक अघि विलसत वि
नोद मैं ॥ चारु कनक मृग चर्म उपरि अखिलांग विराजत
अनुजार्पित धनुस जस शर कर धर छवि छाजत ॥ अति
तिच्छन अच्छी कौरा करि वीच्छ मानत बलंक पुर ॥ संद
त करणा त्वदनुज वचन राम धीर रगा वीर उर ॥ १९ ॥ बह
सेतु भूमंग वंदि आवेदित रघुपति ॥ तव मातुल त्वचिवि

रु अनुज मंत्रन दत्त शुति गति ॥ वारा दत्त दृष्टान्त लयन ल
विकृत समित मुय ॥ ग्रीव बाहु सुग्रीव गोद सम पित समस्त सु
य ॥ अरु अंगद के हनुमान के अंकन मैं अंधी उभय ॥ लंकेश
निहारु नयन तैं लसत राम निज जन अभय ॥ २० ॥ दोहा वृत्त
॥ गगन गिलित भूमी गिलित गिलित दशहु दिश देय ॥ ल
वंग पुंज पीता सरित सीता पति भट पेय ॥ २१ ॥ समस्या ॥ व्या
ध सदन समल सत नभो मंडल इतैं ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ देव महा
उत्पात मध्य दिन पेधियैं ॥ क्वचित मीन कहु मेय दृष्टि दे देवियैं
॥ कितलं वित कृतिका सार्द्र मृग शिर कितैं ॥ परिहां व्याध स
दन समल सत नभो मंडल इतैं ॥ २२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृ
त्त ॥ साभ्य सूर्य रावन वदत अहो महोदर पश्य ॥ नहि प्रताप
तप सहि सकत आफता बहूयस्य ॥ २३ ॥ रावन उवाच ॥ य
दृपद वृत्त ॥ मम प्रताप तति तीव्र ताप संत प्रभाकर ॥ पूरव प
श्चिम जलधि बीच डूवत निस वासरा ॥ प्रविशति वारिधि म
ध्य नाथ बैकुंठ निरंतर ॥ निवसत नित हिम गिरी शांति हित
सतत त्रिपुर हर ॥ छिन मात्र कमल छोरत नही कमलासन
आसन कियौ ॥ शिर छौं निछत्र लिय शेष अहिक मठन स आ
श्रय लियौ ॥ २४ ॥ इति श्रीमत्पिलोद पतनाधिपाल रावत जी
श्रीदूले सिंह जी विज्ञापित कविटीकारा मांगज गोविंद राम वि
रचिते श्रीवर विलास रावण महोदर संवादो नाम चतुस्त्रिंशोऽंशः

सः॥३४॥कविरुवाच॥चंद्रायणावृत्तं॥इतनें संतरमध्यसु
विपिनप्रशोकतै॥शरमाचतुरलुकाइलंकपतिलोकतै॥सि
यतवस्थविमानवीचवेरायहै॥परिहोपीतमथारेरामदियेद
रसायहै॥१॥निमिन्नपनंदिनिनैनंकलितकमनीयहै॥रामरू
पप्रभिरामपरमरमनीयहै॥उभयनभयैमिलापसरसशोभा
भई॥परिहोतरुतमालपरजायजथामधुकरिइ॥२॥दोहा
वृत्तं॥इमपियदरसकरायकैशरमाचतुरसुजान॥पुनिअवि
लंवितजानकीपहुचाईनिजथान॥कविरुवाच॥वरवेवृत्तं॥
रामकटकवानरभटलंकनिहार॥करिउतप्रेच्छअलंकृतिव
चनउचार॥४॥वानरभटाऊचुः॥जधनकनकशकारारत
नदुकूल॥त्रिकुटाचलवनिताजनुलंकातूल॥५॥कविरु
वाच॥रावनलंकामधिइमवचनउचार॥अहोमहोदरमंत्री
सुनियैसार॥६॥रावनउवाच॥कुंभकरनसोवतहैजाहिजगाउ
॥निद्रारसिकनिरंतरउहिइतल्याउ॥७॥कविरुवाच॥कहित
थास्तुतितगवनेउसचिवसमस्त॥कुंभकरनसोवतजितनिद्रा
गस्त॥८॥करिअतिउच्चस्वरकूरपुकार॥करारंध्रमुषधरि
कियविकार॥९॥तनकनसुनतनिशाचरहारेहीय॥तवातिन
प्रतिउचरतहैताकीतीय॥१०॥समस्या॥जिहिगलकरंध्रमधि
शकइववानरजृथप्रवेशकिय॥कुंभकरांगनोवाच॥यदृपद
वृत्तं॥कहाकरतउपचारजगावनकुंभकराहि॥कियेसुवारंवार

शककरिपूराकराहै॥कहुलीजैविश्रामयाहिनिद्रानातजतहै॥
यहहृष्टागैजामनिरंतरजाहिभजतहै॥अवसवैकवनउपायव
दसुनिकरिलेउविवेकहिय॥जिहिगलकरंध्रमधिप्रशकइववानर
जृथप्रवेशकिय॥११॥गजाक्रमराअरुघोरसचिवचिकारशब्द
करि॥जवनजग्योवहकुंभकरातवशंकसकलधरि॥अबकिहि
विधजागिहैअमितउरकरतअंदेरा॥विनाजगायैकूरकोपक
रिहैलंकेशा॥गंधर्वयक्षसुरसिद्धवरकिन्नरकामिनिकलित
रुत॥वरगायनगीतासुतसुनतमोविनिद्रैचैतन्यधृत॥१२॥क
विरुवाच॥सोरठावृत्तं॥उत्थापनअवलोककुंभकरनवडवि
कटवपु॥समयभयेकपिलोकलयिमारुतिआशिवदत्त॥
१३॥हनूमानुवाच॥यदृपदवृत्तं॥जिहिजंभासंभारभीमधुकु
रीतभासत॥कुंभकराअट्टाट्टहासव्यकोशविकासत॥अ
द्भुतवदनविलोकिचकितचितप्राणिपुन्यपद॥मृदुलमृगा॥
लीमिथिलसुतासंगराजहंसहृद॥सिद्धपूर्वगिरिशिखरशिरो
रश्मीरघुवरविमल॥भयविकटजुक्तकपिकटककेवरविमू
तिप्रदहोहुभल॥१४॥कविरुवाच॥लंकामधिजवकुंभकरा
सूत्रोत्थितदरस्यो॥कवलितकृतपलशैलजालतीबासवप
रस्यो॥तृप्तभयोनतथापिवचनमुखउचरतसैसै॥गंगाजमु
नासिंधुसुरापूरितहुवजैसै॥तवतृप्तिहोयमेरीकहुकइतनेंका
होतहै॥जिमतप्रायसजलविंदुइवअधिकउद्योतहै॥१५॥कवि

रुवाच॥ निजकरक स्थितरामनिगविषयु अदुतयेमो॥ लंकाशिर
 जिहिं जानु संग संवरलौतैसो॥ वातात्मजतैवदतमारुतेयैहैक।
 हाहै॥ अयुधानुसंधितकिधौयहयंत्रमहहि॥ तबजुगलहस्त
 पुटजोरिकैपवनपुवउचरनलग्यो॥ यहयंत्रनाहिमहराजकुं
 भकरनमोवतजायो॥ १६॥ चंद्रायणावृत्तं॥ कुंभकरनलंकेशनि
 कटजवप्रापहै॥ सियस्यर्पहुयहसभिप्रायउरआपहै॥ जउआ
 यसक्तिपालप्रचरसर्ववहै॥ परिहंशास्त्रदीपसंचारकरतनुप
 सवहै॥ १७॥ आनुवचनसुनिकहजयार्थलंकेशहै॥ निस्संशय
 वचशास्त्रसुदृष्टसशेसहै॥ तदपिनजिहौंसियायहेसभिप्रायहै॥ प।
 रिहंवदतवचनसावग्यसुनावतनायहै॥ १८॥ रावमउवाच॥ अटपद
 रतं॥ फटिकाचलउच्छिप्रशिवरश्रेणीष्टुंगद॥ प्राप्रप्रतिष्ठापरमपी
 नतरभुजविलसतहृद॥ समरसुरासुरभयदकितहुपावतनपराजय॥ न
 रवानरहैकहाछिनकमधिहोयमेरजय॥ सतिनोरभुजाउंवरवृथाभ
 ईत्वदाशाशिथिलसब॥ सतिनिद्राबाधतहैवुमैंजावहुनिद्रानिलयसब॥
 १९॥ कविरुवाच॥ कुंभकरनहुइभीमभनतभारतीभयंकर॥ बलवदि
 द्वियशोकशल्पसंपूरगापरिहर॥ पावहुनाहिवियादरहुहुकल्यानस
 माश्रित॥ अहमहमिकयाअहतनकनहितुहितजिहौंदुत॥ कहकालवि
 धाताहैकहाकासरिकुलभयकहायम॥ यमदूतकहाकोरामहैकेकपींद्र
 रगाकुपितमम॥ २०॥ चंद्रायणावृत्तं॥ सुनिरावनसानंदवचनउचरतभ
 यो॥ सुभटसंगवललेउपराकमप्रबलयो॥ रगाप्रांगरासवतरनुवच्छउ।

कहतै॥ परिहंशीतलकरियैहीयरिपुनकेदाहतै॥ २१॥ कवि
 रुवाच॥ अटपदरतं॥ कुंभकरनसाच्छेपजयारथतिहिबिधकी
 नौ॥ उरसिसमितउच्छाहसमरवरमारगलीनौ॥ जिनभाज
 हुकपिमल्लममयहुइकैसंगरतै॥ कुंभकरननहिंभिरतकदा
 चितहुवानरतै॥ जउलघुजलधरकोपाततउस्वल्मसरितन
 हिंसंचरत॥ पुनिमशककुहुंवनकेशरीकबहुनिकंदननहिं।
 करत॥ २२॥ ॥ इतिश्रीपिपलोदपतनाधिपालगवतजीश्री
 दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकासमांगजगोविंदरामविर
 चितेश्रीवरविलासेकुंभकर्गारगांगरागावतरगीनामपंचविं
 शोत्तामः॥ ३५॥ कुंभकर्गाउवाच॥ अटपदरतं॥ नहिंवाली
 सुबाहुनपरविशिगअरुदूयन॥ नहिंताटकअभिधानतथा।
 तालाकूरुयन॥ नाकहुसेतुसमुद्ररुद्रधनुनामुहिमानौ॥ कुं
 भकर्गाममनामकालमूरतिपहिचानौ॥ रेगमप्रतापानलकवः
 लवीरमोलिनरशात्मसम॥ संग्रामभूमिविचरतफिरतकोपि।
 तुलतनहितुल्यमम॥ १॥ कविरुवाच॥ तदनंतरउत्पत्यगग
 नमधिअविलंवितअति॥ वाहुमूलगहिलियो लपकि सुग्रीव
 प्रवगपति॥ पुनिभुजकरिरविकंददेशदृष्टपीडितकीनौ॥ कुंभ
 करगासानंदलंकपुरमारगलीनौ॥ कपिराजतूरीमच्छनकि।
 येकर्गाधाराअतिहरविहिय॥ कूर्परप्रहारकरिउदरमधिपुन
 रागमनिजशिविरकिय॥ २॥ दोहावृत्तं॥ रघतनिरंतरशूरपन
 शर्पनयाभलभ्रात॥ भगिनीसमअवदतउतैसावतजातलजा

त॥३॥ सैनन कहावतायहों कपिलै नाक कटाय ॥ जगमधि
 जीवनतें जवहि लीनों हियो हटाय ॥४॥ कुभकर्ण विनकर्ण
 कों बहुरि भयो विन नाक ॥ अब जीवन नहिं उचित है उचरत गदग
 दवाक ॥५॥ यत्पद दृत्तं ॥ लंबनिसासै डारि बिलोचन वारि वहत
 है ॥ स्वात्मजलांजलि देय चपलचित मरणा चहत है ॥ छेलोकि
 यो मिलाप होय सकरु गालं कांते ॥ गहि विशूल कर चलेयो स
 मर विराहत शंकांते ॥ कैधो काल मूर्ती नयन प्रलयानल अंग
 रगगा ॥ संछिन्न धारा अरु कर्ण जुग कुंभकर्ण अब तीरार रग
 ॥६॥ तिहिं विलोकि संवस्त चित्त कपि भूरि भये है ॥ जीविताश
 धिय धारि कित क गिरि कुहर गये है ॥ केते प्रचलित चरगा वात
 आकाश उडे है ॥ भूमरा चंड दोर्दंड पर स पुनि पुह विपडे है ॥ मु
 षधारा रुधिर चयव मत तित प्राण धरत संकष्ट है ॥ फूत्कार क
 रत अतिवार बहु मनो महा अहि दष्ट है ॥७॥ कविरुवाच ॥ त्रिन
 यन दत्त विशूल तडित कोटी प्रभ पूरन ॥ मनो केतु संहार कियो उ
 च्छेपन तूरन ॥ घोर प्रज्वलित महा ताकित त उर तारा पति ॥ च
 पल चलायो चंड प्राणहार क अद्भुत गति ॥ जान की कंत जानत
 सैं वै शर करि छेद्यो वीचंते ॥ सुग्रीव सखा निज प्राण सम बचो नि
 शाचर नीचंते ॥८॥ गहि मुदगर कपिकटक वीच घट करन म
 हातुर ॥ क्रीधानल अरु जाठरागि करि भयो कुधातुर ॥ अेक कव
 ल मधिलिये कोटि वानर अति उत्तकट ॥ बदन मध्य रघि सद्य
 अदन कृत भट अति उद्भट ॥ कपि चरन पीसि डारे अमित कर

नगध केते कटे ॥ पुनि पकरि पकरि चिबर्त करत दावि दावि दशन
 न बटे ॥९॥ सव्य स्वकर करि सांठ शिविर कपिकटक विदारन ॥
 विद्यमान वर विपुल वीर वानर वन वारन ॥ घान करन को हरन
 हार सुग्रीव विलोक्यो ॥ कुंभकर्ण अति तूरा जाहि उत्तर करतो
 व्यो ॥ मम वपु विरूप करता यह महा वैर मन लाय के ॥ लेच
 ल्यो चपल लखि गगन मग महा धूत धुब धाय के ॥१०॥ अंगद
 लखि निज तात दुष्ट लेजात लेपटि कों ॥ कुंभकरन प्रति गयो वीर द
 डरति डपटि कों ॥ गरुड़ पाश करि भुवि निपात किय अपरि
 अति तूरन ॥ कहु सचेत सुग्रीव होत उत नैं उहि पूरन ॥ पापिष्ठ
 तन कबिसरत न हीर बलु घिसान पनयी जकों ॥ नर सिंह पा
 श बांधे जुगल काका अवर भती जकों ॥११॥ दुहुन बद्ध लखि
 नील प्रवंग निज अनल रूप करि ॥ कुंभकरन मुख कंध मो
 लि श्रुति घान उदर भरि ॥ तिज ज्वाल किय दाह कुपित वृम
 कल अंग जिहि ॥ बिकल भयो कव्याद कुटिल बल कुंभकर
 न तिहि ॥ सुग्रीव अवर अंगद उभय वानरेंद्र प्रोथित तदा ॥
 कपिकटक वीच आनंद अति जुगल जोय छा योजदा ॥१२॥
 कविरुवाच ॥ लंका वर शिखर स्थ निहारत रावन रन कों ॥ भा
 त जगत लखि सुधा वारि वर साये घन कों ॥ शीतल भयो शरीर
 सचेतन कुंभकरन है ॥ भच्छन चहन लनील जथा अहि जुग
 सुपरन है ॥ गहिलिये लपकि दुडू कपिन कों सब वानर देखत
 रये ॥ जव जांबुवान जर्जर जरठ उग्र वेग आवत भये ॥१३॥ जा

बुवानसतिउग्रवेयविपदाविदरनहै॥निजभुजगुरुमदनुक्तनि
 रंतरकुंभकरनहै॥जानुबंधकियकंठगाढरविअसुरगिरायो
 जिमिगिरींद्रदंभोलिनीलनलजुगलकुटायो॥तवरिच्छराज
 शिरउपरैसुमनरुष्टिकियमरुतगन॥करिकोधनिशाचर॥
 तूर्गातिहिं कियोगुल्फसाघाततन॥१४॥आलच्छितरघु
 वीरसलहमनचलेमरुतसुत॥कालांतकसमशत्रुविशंकि
 तउरजाउतउत॥समरथानअवतीर्यबायबहुधैर्यधुरंधर॥
 रम्यरुद्रअवतारउग्रकपिकटकपुरंदर॥अतिअरुणाअच्छ
 नरसिंहसमनिजकरपरगिरिवरलियै॥किलकलशकरगा
 विकरगानिकटविकटसुभटहरयतहियै॥१५॥यवनपुत्र
 यदुपारिपन्नपर्वतछविकैसै॥मैरुशिखरपरमरसशोभ
 मैनाकजुजैसै॥कुंभकरनकेकरनमंजुमुदगरसोहतहै॥
 मनुमंदिरगिरिअग्नअजनजनमनमोहतहै॥कलपांतस
 मरमधिमरुतमुतगिरिगिरायशिरऊपरै॥मुदगरप्रहारक
 व्यादकरिभूधरपटकेयोभूपरै॥१६॥दोहावृत॥अंजनेय
 करिकोपउतअद्रुतदइचपेट॥द्रुतमुदगरकव्यादकौलिय
 लांगूललपेट॥१७॥कविरुवाच॥यदुपदवृत॥इहिअंतर
 मधिरामविशेषसंधानकियेहै॥इंद्रदत्तशरजुगलतिछ
 नतिहिंसमयलियेहै॥कुंभकरनकेनिधनकाजरनबीच
 चलाये॥अकहृदयअरुद्वितियविशेषशिरछिनकरायै
 नभनमोनमोजयजयधुनीसबसज्जनजनशरनभौ॥लं

केशबाहुबलहरनभौ॥कुंभकरनकौमरनभौ॥१८॥मरु
 तिचंडचपेटगिर्योमस्तकतुहिनाचल॥जिहिंकपालज
 लमध्यइविहैभीममहाबल॥पुनिकव्यादकबंधपुच्छ
 गहिगगनउडायो॥चल्योगयोआकाशपेयपारनको
 उपायो॥आनंदमयोकपिकटकमधिदुसहदुरितदुषद
 रनभौ॥लंकेशबाहुबलहरनभौकुंभकरनकौमरनभौ॥
 १९॥दोहा॥रामविर्यअबिलंविउरवरनतलछमनभात॥
 उच्चस्वरगंभीरगिरकहकबंधबलुव्यात॥२०॥लक्ष्मणा
 उवाच॥यदुपदवृत॥वाजूबिबुधविमानदूरलीजैरविस्वद
 न॥असुराधमअधरंगउच्छास्योअंजनिनंदन॥रेरेवान
 रवीरअसुरचयसुनहुबचनमम॥रगाप्रांगरापरिहरदुर
 हहुअंकांतचहतहम॥जनुअंजनादिप्रतिनिधिअवधि
 विस्मापकजुअबंधहै॥आतंकहेतुलंकागिरतकौमक
 रनकुबंधहै॥२१॥कविरुवाच॥तनुतैभौउतकांतप्रवर
 सुरबधुलियभुजमरि॥बारदादिसंगीतमधुरमृदुसुरजनरव
 करि॥नहिंविमानआरोहकरतजउकव्यमाराहै॥अभिला
 षाउररहीभर्तृपरित्राणाप्राणाहै॥जिहिंपुनरपिसमरअल
 सतधुवसंगरमधिधीरहै॥किमशिवशिववर्गानकौरेकुंभक
 रीवइबीरहै॥२२॥लखिलंकाशिखरस्यबदतरावनविसमय
 सह॥मरुतचंद्रआदित्यइंद्रमुखकनुभुजजैहरह॥उपसर्पत
 अनुदिवसभयसंततजिहिंमोपुर॥सकलसुरासुरकरिअंजय

अविरतलंकापुर ॥ कियकोपविकंपित अधरतट पुटवानरभ
 रविकट करि ॥ अतिममाक्रांतवासितभई शिवशिवशिव
 दशमुखनगरि ॥ २३ ॥ इति श्रीपियलोदपननाधिपालराव
 तजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविरीकारामंगजगोविं
 दरामविरचितेश्रीवरविलासेकुंभकर्णवधोनामयड्विंशो
 ल्लासः ॥ ३६ ॥ अत्रहनुमन्नाटकश्रेकादशोकः ॥ कविरुवा
 च ॥ यदपदवृत्तं ॥ रावनभयौसकोपतूरांमपूरांमैनसह ॥
 समरजग्यअधवर्युइंद्रजीतअंगजकियबह ॥ कुंभकर्णव
 धअकनिभयोआमर्यविमूर्छित ॥ सीतापतिवधबद्धलच्छ
 अवतीरांसमरजित ॥ इतलछमनधनुगुनसज्जकरिदगा
 त्कारधरनीगगन ॥ आपूरितकोपानलप्रवलज्वालावलि
 मालामगन ॥ १ ॥ सुनासीरजिततिंतैलयननासीरअगनइत
 ॥ लंकालंकापालसहितकियकरनकवलचित ॥ ॥ मेघ
 नादुलरिविलच्छवचनमुखउचरतअसै ॥ अल्यहुकारन
 नाहिकोपकरियतइतकैसै ॥ थिरशुद्धबुद्धिबिनहेतुनहि
 कृपाक्रोधकिलकरतकब ॥ कृतसंचितचंचलचितनरनेह
 कोहविनकाजसब ॥ २ ॥ हरिविजहतसंवासभिन्नशकेभकुं
 भधल ॥ लज्जापावतविशियतिहारैवपुयकुद्रबल ॥ तिथ
 तिथमौमित्रित्वमपिनहिंक्रोधपावै ॥ मेघनादममनामवज्रस
 मअरिवलगावै ॥ भूमंगमावनियमितजलधिगमचंद्रधुबीर
 है ॥ अतिनूरांताहिहूँढतफिरतवहममसंगरधीरै ॥ ३ ॥ अंजः

निमुतसुग्रीवनलांगदनीलप्रमुखकपि ॥ घनघमंडुथितमेघनाद
 नहिलयतकिंचिदपि ॥ दियोवरफवर्षायविपुलकियअंधकारहै
 करतघोरशरघातनिरंतरवारवारहै ॥ अधिरुहमहदमायासुरथा ॥
 नमथलथितगंभीरगति ॥ करिकालजलधिधुनिगर्जनारावनवा
 लकरालअति ॥ ४ ॥ दोहावृत्तं ॥ जथाभेरुमंदरगिरीवासववज्रनि
 पात ॥ नागपाससरबद्धतिमरामलरवनजुगभात ॥ ५ ॥ समस्या ॥
 चंद्रउदितचितचकितमुदितमननिर्ततचकई ॥ रोलावृत्तं ॥ इहिंअ
 तस्मधिपूर्ववैरसुमरनकियकोकी ॥ सरवारथितबहदशाभातजु
 गनयनविलोकी ॥ शापतहोममदयितरामराबनिहततकई ॥ चं
 द्रउदितचितचकितमुदितमननिर्ततचकई ॥ ६ ॥ यदपदवृत्तं ॥
 बंधनदशरथनंदअकनिरावनआयसदिय ॥ सुमनविमानवि
 ठायवतावहुपियदेवरसिय ॥ कहितथास्तुलेगईनिशाचरिशर
 मातितकौ ॥ रामलरवनजुगबंधुवधधितरगामधिजितकौ ॥ द्रुत
 देखिदुर्दशादुहुनकीजानकिजियसोचनलगी ॥ वरवारिजसेनुग
 नयनतैनीरनिचयमोचनलगी ॥ ७ ॥ भार्गवगौतमचवनशिष्यक
 श्यपवशिष्यमुनि ॥ लोमशकौशिकप्रमुखगिरामुखजौतिषमतः
 बुनि ॥ सुनिसमीपआपकेमगनचूचुकजिहिंतियतन ॥ संततसध
 वारहैगहैकबहुनविधवापन ॥ तैत्रिकालग्यसर्वयारिषिसत्यव
 चनवक्तासंवै ॥ तिनआशिष्यकिममिथ्याभयेउरअचरजआवत
 अवै ॥ ८ ॥ चंद्रायगावृत्तं ॥ हाप्रारोषवरगामफुरतसबसंगहै ॥ वा
 हुनयननहिअनृतअशेषअभंगहै ॥ तनकनाहिंसुरवदेतमा

धुरीहृष्टिमें॥ परिहांभुजविलासलुकिरहो॥ कहोकिहिंसृष्टिमें॥
 ॥६॥ माततातनुजातरुअग्रजमानिसा॥ मनसितनकमुदले
 तसकलमन्मानिता॥ पावतपरमप्रमोदकिचिंदाश्वासिता॥ प
 रिहांजिमरमणीरमणीयरमणाविश्वासिता॥ १०॥ यदपदद
 तं॥ प्रत्युत्तरनहिंपदलप्राणपतिपीतमप्यारौ॥ हाहालच्छ
 नवच्छमोरअपनयननिहारौ॥ रुष्टभयेहो कहाककुकउत्तर
 चाहतहम॥ भूरिभूमरगाकीनकज्जममभयौभूरिप्रम॥ अ
 वस्वर्गसकलअवलोकिवेसिद्धकरतकिमभ्रातजुग॥ दुर्द
 शादेयिदुहिवीरकीउरअंदरअनिशायितरुग॥ ११॥ लखि
 हेनहिंदिविलोकमोहि विधिलोकसिधेहैं॥ बिनाकियेमम
 सोधउभयकितहुनयितिपैंहैं॥ कीजैंप्रानप्रयानस्वर्गमधिसं
 गमदीजैं॥ कहानिहारतगहप्रानपतिमारगलीजैं॥ लखिइम
 अचेतअतिजानकीशरमासमजावततैंवै॥ वैदेहिबदतकहवाव
 रीजुगमूर्छितजागहिंसंवे॥ १२॥ दोहावृत्त॥ मुनिसरमाशुचिव
 चनसियपुनिनिजनाहनिहार॥ शोचविमोचनकीनककुलंब
 निसामेडार॥ १३॥ रावनकेमयभीतहैशरमापरमुजान॥ व
 नअशोकमधिलैगईसियसहसुमनविमान॥ १४॥ ॥ इति
 श्रीपिप्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञा
 पितकविटीकारमांगजगीविंदरामविरचितेश्रीवरविलासे
 जानक्यशोकवनपुनरागमनेनामसप्तविंशीस्वासः॥ ३७॥
 कबिरुवाच॥ मनोहरवृत्त॥ हाहाकारहोयरह्योत्रिभुवनम॥

अथमहाकीनोर्कर्मघोरघननादछितिकायोंहैं॥ सुपंयोहैसुप
 र्गशोरजाकोविभुभौनवीचक्रोधानलअंगअंगभूरिमभका
 योंहैं॥ पच्छनपवनदृच्छलच्छनसंगेंद्रउडेतमीचरतोमजुत्तरा
 वनित्रमायोहै॥ स्वामीहिजिवायोंसुधावारिवरसायोंसद्यवि
 नताकोजायोंवेगधायधायअप्येहैं॥ १॥ दोहावृत्त॥ रामकृ
 पाअवलोकतैंभयेसचेतसमस्त॥ मेघनादसंकटसहिततीनता
 पतनुबस्त॥ २॥ यदपददृत्त॥ विरच्योपरमप्रपंचरचीमामावेंदेही
 विलपतमुखहारमगाप्राणप्रियपरमसनेही॥ भोप्रवीरपश्यंतु
 पठतप्रवचनमुषपापी॥ कीनोबडगप्रहारमायमैधिलिसंतापी
 करिद्विधाताहिपुनिगृहगाकरिगगनमार्गरथमधिगयों॥ ब्र
 ह्मोपदेशगिरिनिकुंभिलवटमूलावटधितभयों॥ ३॥ संगरच
 त्तरबीचनिधननिरख्योमायासिय॥ उरवीतल गिरिरामपरम
 गुरवीमूर्छालिय॥ रघुवरनिरयिसशोकमरगादुहिताजान्यों
 जब॥ महिहियभयोंविदीर्गागोदलीनैराधवतव॥ शाश्वतपुरा
 गाअजनिनित्यतुमस्मरगा रूपनिजकीजियैं॥ इमअवनिउचा
 रतरुदनकरिसोअवरगानधरिलीजियैं॥ ४॥ विकचनलिनि
 निर्मुक्तमंजुमलयजरसजलकरि॥ सिंचतधाराधारिशंतिहि
 तशुचिरामोपरि॥ सोमित्रीपुनिपठतकहुनिअनयननिहार्यो
 जामदग्निमुनिशापमुग्धपनप्रगटप्रचार्यो॥ लखिवधचकई
 सानंदहुवशापसकलसप्रमाराहै॥ गुरुआज्ञापालनधर्मकि
 यमोसमस्तअप्रमाराहै॥ ५॥ दोहावृत्त॥ मिल्योकरुनाधर्म

फलप्रगटशापफलपेय॥ इमकरिकें आलापकछु विलपत
 लयनविशेष॥ चंद्रायणावृत्त॥ कोपनयनइकलयनक
 मलिनीकांतहै॥ अपर अच्छिप्रच्छेपविरहपतिस्वांतहै॥
 अस्तसमयरविपेधचकई गतिअसभई॥ परिहां रुद्रक
 रुगारसजुगलरूपचयछुबिछई॥ ७॥ यदपदवृत्त॥ तत्र
 निकुंभिलअद्रिमूलनिगोधसवटमैं॥ अतिसत्वरघन
 नादविभीतकसमिधसुधटमैं॥ अर्धचंद्र आकारकुंडनि
 जपलआहुतिदिय॥ शंभुजपरथ अर्द्धकह्येलविभौहर
 यितहिय॥ हनुमंततूरीतितजायकैं असुरजगयभंजन
 कियौ॥ भौमुधामनोरथदुष्टकौसिद्धकाजकछुनालि
 यौ॥ ८॥ रगाप्रांगरामधिअच्छलगायौलच्छस्वच्छम
 न॥ शानितैंलियदशरथनृपतिनैंलियौलच्छमन॥ स्मरन
 कियौसंहारअस्त्रमानंदवचनकह॥ रेरेमायारथासुठसु
 नमेघनादयह॥ करिछिन्नभिन्नमायाविपुलतोहिपठेहौ
 शमनपुर॥ केसावधानसंगरसजउ असुरहजियेंगाढउर॥
 ॥ ९॥ दोस्तभनआस्फालकैलिफुटविकटध्वानकरि॥ ध
 स्तमहातमघोरप्रबलसंहारअस्त्रकरि॥ धनुसंयोजनके
 लिपानिआहतपुहुवीतल॥ धीरवीरकोधांधउदगिरत
 अनलदृगंचल॥ सौमित्रिछेदिघननादशिरहीरकमं
 डितमुकुटजुत॥ लंकेशपारिपुटजुगलमधिअपरा
 कीनोंआपउत॥ ॥ इतिश्रीपिपलोदपतनाधिपालरावत

जीश्रीदलहसिंहजीविशायितकविटीकारामांगजगो॥
 बिंदरामविरचितेश्रीवरविलासेइंद्रजीतवधोनामाख
 त्रिंशोत्तमः॥ ३८॥ अत्रश्रीहनुमन्नाटकद्वादशोंकः॥
 ॥ अटपदवृत्त॥ सुतनिजनिधननिहारनिशाचरनाथकुपि
 तअति॥ अरुणावरणादशवदनवदनदशनयनविंशतति
 श्रेकवीरघातिनीशक्तिप्रच्छेपकियौहै॥ ललितलच्छम
 नवच्छस्वच्छलविबलच्छलियोहै॥ हनुमंतगहिलईवीच
 मैजलनिधिमधिछेपनकरी॥ रावनसकोहकैसद्यतवध
 विरंचिइच्छाधरी॥ १॥ शक्तिगृहनविलोकिमहामनकोपछ
 योहै॥ चतुराननवधकरनदशाननउदितभयोहै॥ सभयभ
 यौपरमेष्टिसुवननारदसुमस्यौतव॥ सुररिषिहाजरहोयह
 त्यदोनोंजरेजब॥ विधिवदतवच्छयहमरुतसुतजबलोंसं
 गरहैथित॥ इकवीरघातिनीशक्तिकीशक्ति कछूनहिंचल
 ततित॥ २॥ शक्तीभयेंअशक्तयहैरावनमुहिमारत॥ इहिं
 दुषकरिभोवच्छहैरयौअतिशयआरत॥ स्थानांतरलेजाउ
 मरुतसुतकौंसुतसत्वर॥ करिलेहैनिजकाजइतैंरावनरन
 चत्वर॥ निजजनकमरनभयमानिमनमुनिनारदरनथलग
 ये॥ पदुपवनपुत्रतिहिंधानतैंतूरनलेजावतभये॥ ३॥ करि
 कृतांतसमकोधज्वलितहृदयानलरावन॥ राच्छसैंद्रअति
 उग्रवेद्यवैरीविद्रावन॥ शक्तिगृहनकरियादसधिकउरभ
 यौअमर्षित॥ उग्रमंत्रअभिमंत्रिनिधनसौमित्रिवहतचित

गहिचपलबलाईसांगसोलच्छवच्छवधतगई ॥ पुनिभेदिभू
 मिमंडलसकलकर्मराजभेदतभई ॥ ४ ॥ गौहउग्ननरतेजप्रल
 यसमुदितअतिकीपित ॥ रावनभुजतैचलीचपलगर्जततर्जत
 तित ॥ दीपितकियदशदिशालच्छवरवच्छविदारत ॥ हाहा
 कारप्रलापमकलजनबदनउचारत ॥ कृतकम्पदेवदैत्यद्रस
 वमूयमानब्रह्मादिसुर ॥ इकवीरघातिनीशक्तिबहुप्रविशत
 पतीभुजंगपुर ॥ ५ ॥ दोहावृत्त ॥ इहिअंतरआयेउतैस्थानांतर
 तैतैरगा ॥ हनुमानहेरतभयेकरुनमगनसंपूर्गा ॥ ६ ॥ अटपद
 वृत्त ॥ पूर्णापञ्चानापविभीषनबलकृतपेयत ॥ छीवतेजसुगी
 वरिच्छपतिमूढविसेयत ॥ भयेअगोचरसदृशसकलसाया
 मृगभामत ॥ शक्तीप्राढप्रहारलखनमूरकाविकामत ॥ रघु
 राजरामदिलपतविविधअतिछायाकरुगाकटक ॥ थिरा
 होयसवैधितरीजियेइमउचरतहनुमतहटक ॥ ७ ॥ भयैसर्व
 रीममयविभीषनचलेसमरमहि ॥ कोसजीवनिर्जीविनिहा
 रतज्वलदुल्लुकगहि ॥ शक्तिज्वालप्रज्वलितमूरकितलवे
 सकलकपि ॥ जांबुवानउपविष्टअेकअबलोक्यैजहपि ॥
 असुरेशनिहातरिच्छपतिधरिधीरजवृजतभयौ ॥ हनुमत
 विपुलवानप्रवरकहहुकुशलजीवतरयौ ॥ ८ ॥ दोहावृत्त
 सुप्रजप्रभंजनअंजनोजिहिजायैजगजोय ॥ कुशलसुनतक
 पिप्रवरकौममहियहरितहोय ॥ ९ ॥ विभीषणउवाच ॥ नसु
 ग्नीवमैराममैरहिअंगदमैरह ॥ हनुमतमधिदर्शितकियौ

हियधितसरसमनेह ॥ १० ॥ जांबुवानुवाच ॥ जोजीवतदुर्धरय
 बहहतवलअहतप्रमान ॥ अरुनहोयहनुमानतोजीवतमृत
 कसमान ॥ ११ ॥ जांबुवानजुतविभीषनतूरनपहुंचेतत्र ॥ प्रस
 भागधितमरुतमुतविलपतरघुपतियत्र ॥ १२ ॥ ॥ इतिश्री
 पिपलादवत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित
 रलपुरस्थकविटीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरवि
 लासेविभीषणजांबुवानसंवादोनामैकौनचत्वारिंशोऽध्यायः
 ॥ ३८ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्त ॥ रामनिरखिलंकेशचयप्रती
 तीयनहुवपीर ॥ यिनयिनयिनविलयतअधिकधरतनकिहुं
 विधिधीर ॥ १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ चंद्रायगावृत्त ॥ भ्रातदिवंगत
 तोरसंगममप्रानहै ॥ सोसुनिकरिहैसीयसुविदिवप्रयानहै ॥ ग
 हिहैगिरिकपिकटकयटकहियहायहै ॥ परिहामहैविभीष
 नवीरकहोकितजायहै ॥ २ ॥ भोजनमोहिकरायफलादिकपे
 लहै ॥ तदनंतरतुमगहैअनुजकीगेलहै ॥ पुनिपिवायपानीय
 तदनुपीवतरहै ॥ अरिहोकिमकीनोंक्रमभंगक्यौनजीवतरहै
 ॥ ३ ॥ मोकौप्रथमसुवायफेरसोवतरहै ॥ क्रमनतज्योकिहि
 ठोरसुमगजोवतरहै ॥ अवेस्वर्गसुखकाजअनुजआगेगये ॥
 अरिहांहमइतअगलीराहचितचितवतरये ॥ ४ ॥ गहौंस्व
 र्गसुखसकलत्रिविष्टपजायहै ॥ इतैविनसिहैरामभयौअस
 हायहै ॥ तुमरीगतिविपरीतपेयिसंतापहै ॥ परिहोप्रगटकि
 योसापलभावकिमआपहै ॥ ५ ॥ तारसुरनकरिसवैतवैरोवन

लगे ॥ रामचंद्र मुखचंद्र सकल जीवन लगे ॥ भये विपुल बेहा
 ल कछु नहिं अटक है ॥ परिहां छाय राखो कपिकवक करुण ॥
 रसकवक है ॥ ६ ॥ अटपद वृतं ॥ पुनि पुनि रोवत राम कहत हा ॥
 वच्छ लच्छ मन ॥ सेवन कियौ सदैव अह निश मोर स्वच्छ मन
 पवन पुत्र अधिकार तोहि तजि भयो पराडू मुख ॥ तिहि तैं संगरम
 ध्य प्राप भौ अति दारुण दुय ॥ मम अनुज भ्रात उद्धत धनुय ॥
 इहि रसा होतै जो भरत ॥ तो शक्ति पात घन घात तैं सौ मित्री कव
 हुन मरत ॥ ७ ॥ दीहा वृत ॥ मुधा जुधारन शास्त्र भर जोवन वृथा
 हमार ॥ तजन चहत सविशिव धनुय ॥ हिय निर्वंद निहार ॥ ८
 कविरुवाच ॥ चंद्राय रागा वृतं ॥ निज अपराध निहारि त्रपास
 करुण छये ॥ साभ्यसूय भुज भरत सबल सुनिके मये ॥ किये
 गारुड स्थान हुमसि हनुमंत है ॥ परिहां पुरो भाग धित होय व
 चन उचरत है ॥ ९ ॥ अटपद वृतं ॥ श्रीहनुमानुवाच ॥ सात संवु
 निधि दिशा दशंगिरि गोत्र सप्रमित ॥ भुवन चतुर्दश प्रथिवि
 आदि नभ मंडल डूक डूत ॥ अतावत परिमारा मात्र ब्रह्मांड
 कटक है ॥ इन मै तैं किंत जाय निशाचर नीच अटक है ॥ वि
 भुवि नय करत कर जोरि जुग अधिक वदत अनुचर लजत
 ॥ जित जाय तितैं तकि मारि है ॥ आप कहा कसुं कत जत
 ॥ १० ॥ कविरुवाच ॥ चंद्राय रागा वृतं ॥ वचन प्रभंजन सुन सु
 नतर धुवीर है ॥ गदत गिरागं भरि महार राधीर है ॥ श्रीराम
 उवाच ॥ मारुतिक थन यथार्थ जदपि सब तथ्य है ॥ परिहां

जानु धान जागति मोहि उन्मथ्य है ॥ ११ ॥ कविरुवाच ॥ मा
 रुतिक ह यह वात मदा स्मरणीय है ॥ नाहिं नीच नर नेह क
 दा करणी है ॥ दुष्ट करत दुर वृत साधु कै नद है ॥ परिहां हरी
 दशानन सीये वारि निधि वद्ध है ॥ १२ ॥ इति श्री पिपलो
 द पत्तनाधिपाल रावत जी श्रीदूलह सिंह जी विज्ञापित क
 विराकारा मांगज गोविंद राम विरंचिते श्री वरदिलासे श्रीराम
 समीर सुनु संवादो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ श्रीहनु
 मानुवाच ॥ अटपद वृतं ॥ पाय कछु प्रारब्ध जोग जग मधि
 दुर्जन इत ॥ हरत महज्जन मान कथं चित क चित कदाचित
 ॥ पै उनके अनुज नित गुरान धावत पामर नहि ॥ पावहि
 किम अधिक त्व विरलोकहु विपुल सकल महि ॥ स्वर्भानु
 रश्मि शशिर्भानु की समय पाय जघपिग हत ॥ ब्रह्मांड बंड
 मंडल वियै नहि गहेश कोऊ कहत ॥ १५ ॥ चंद्राय रागा वृतं ॥
 रावन किय उन्मथित राव रौ मान है ॥ दैव जोग जउत ऊ होय कि
 समान है ॥ विनै करत करत कर जोरि सुवारं वारं है ॥ परिहां धी
 रज धरि वो सार सकल संसार है ॥ १६ ॥ कविरुवाच ॥ राम कह
 त पुनि वचन समीरन सुत रहौ ॥ कालांतर गत थिया कहा का
 रज कहा ॥ बंधु करत उपभोग नाहिं सुख लेत है ॥ परिहां अरु अ
 रिगन आतंक दुसह नहिं देत है ॥ १७ ॥ वच्छल लच्छन वच्छव
 च्छथल भिन्न है ॥ कृत प्रतिग्य हनुमंत सविस्मय थिल है ॥ सु
 नहु नाथ मरामोर सु रीति सदैव है ॥ हरिहां अयम होय यमरा

जरु देव सदेव है ॥ ४ ॥ यदपदवृत्तं ॥ करि प्रवेश पाताल सुधार स
 सत्वर लाऊं ॥ अथवा चंद्रनिचोय प्रचुर पियूष पिवाऊं ॥ चंड कि
 रणा उड्डंड अखिल ब्रह्मांड निवारौ ॥ करि चूरन कीनाश पाशशा
 मन जमराग ॥ जो होय हुकम सोही करौ कीजै नाहि विलंब अव
 रघुराज रावरी महरतै मेको है आसान सब ॥ ५ ॥ कविरुवाच ॥
 सुनि समीर सुत वचन राम सोचन लागे उर ॥ बदन बदन महवीर
 तथा तैसैं करि हेतुर ॥ महा प्रलय कै जाय अनवसर इम करि वे
 तै ॥ इम उर अंदर मोधि वचन उचतर हरवैतै ॥ ल्याबहु सुयेन अ
 भिधा भियक असुर ईश अनुचर जदपि ॥ करि है न कपट है वैद्य
 बहल विहि चिकित्सा वरतदपि ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ कहितया
 सुहनुमान लंक पुर जाय त्वरित है ॥ पदुपरियंक समेत भियक
 भल ल्या अतित है ॥ सुसोन्धित लयि भियक राम सकरुन वच
 बोलै ॥ कहहु तरुणा उपचार वैद्य सुनि हिय निज लोले ॥ जीवि है
 भ्रातर घुराज तव यह उपाय करियैं अचिर ॥ बली बिशस्त्रि वर
 द्रां गागिरि चंद्र शिमर जनी रुचिर ॥ ७ ॥ चंद्राय राग वृत्तं ॥ कवि
 रुवाच ॥ राम बुलाये दूत वेग का आये है ॥ अपनो अपनो वेग व
 दहु मन लाय है ॥ सुनि गधुवर वरुह कमहु ममि बोलै तवै ॥ हरि ह
 निज निज घल अनुरूप अवधि उचरत सबै ॥ ८ ॥ जावत आवत
 नल कह लगत विगव है ॥ तथा मैदं अरु हि विद कपि द्वि रात्र
 है ॥ अंक रात्र सुग्रीव नील किय कील है ॥ परिहं जाम चार जुव
 राज बदन करितो ल है ॥ ९ ॥ कविरुवाच ॥ समय आतं श्रीराम ॥

सुनत कपि वैन है ॥ संकोचित मुय जल जस जल जुग नैन है ॥ सं
 गर संकट विकट बीच भाशंक है ॥ हरि हौ लयत रुद्र अवतार सु
 वदन मयंक है ॥ १० ॥ मत्वर सकरुग गद्योगा रुद्र स्थान है ॥ जुग
 अंजलि पुट जोरि वदन हनुमान है ॥ छिन कधारियैं धीर सकल
 भल हौ न है ॥ अरि हौ आवत हौ पदुचाय भियक वरमौ न है ॥ ११ ॥
 इम कहिति हिं पदुचायति तै इत प्राप है ॥ आजनेय उचरत विम
 ल वव आप है ॥ प्रभु हित कारक प्रचुर प्रवंगम पूर है ॥ हरि हौ दी
 जे अयम अद्य अद्रि मग दूर है ॥ १२ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधि
 पाल रावत जी श्री दलह सिंह जी विज्ञापित कवि टीका रामांगज
 गोविंद राम विरंचिते श्री वर विलासे वानर वृंद वेग वर्गानी नामे
 कचत्वारिंशोऽस्मात् ॥ १३ ॥ श्री हनुमानुवाच ॥ मनोहर वृत्तं ॥
 साठलाय जो जन तो जावन जहाँ पै वेग साठ लाव जो जन को आ
 वन जरूर है ॥ मारुति बदन नाथ रावर प्रताप पुंज उचरत सैं सैं
 नाहिं मन मगरूर है ॥ अग्नि तप्त तैल थित सरसौं अवाज बीच ॥
 आवौ उत जाय ले विशाल्य वल्लि मूर है ॥ कौन मग दूर दौं न गौं न
 मग दूर नही पौं न मग दूर पौं न पुत्र मग दूर है ॥ १४ ॥ मोरगा वृत्तं कवि
 रुवाच ॥ सुनत मरुत सुत वैन हिय हर धित रघुवर भये ॥ अवध
 कुशल पन लैन अपर अमल आय सदई ॥ १५ ॥ करि बंदन रघुन
 व कियौ चंड उड़ीत कपि ॥ दुहि रा अद्रि सानंद अंजनि नंदन गव
 न कृत ॥ १६ ॥ कविरुवाच ॥ यदपदवृत्तं ॥ अब सुनिये वृत्तांत अब
 धपुर वरन्यो तित को ॥ भयौ सुमित्रा स्वपन वाम भुज भुज गर

सितको ॥ कोसल्याप्रतिकहौं नुरत उरि उहिं वशिष्ठ मुनि ॥ शां
तिकरावत भरत सुपन भय प्रद श्रवणानि सुनि ॥ सब सामग्री
मंगवाय शुचि थल इकंत कीनों गमन ॥ दिगमशर शरासन धा
रिधुब आज्य आहुति कृत हवन ॥ ४ ॥ कविरुवाच ॥ जबै दौं रा
गिरि गये मरुत सुत तित अति शय दुत ॥ प्रभा सुधा कर सहशव
लिमणि सब निहार उत ॥ निप्रयनहिं कै सकत भूमरा चहुं धा
वहुलीनों ॥ तब गिरि कर ले जान मनोरथ मन में कीनों ॥ जब उ
म्यान अद्री आपैं तैं तै तात सुमरंत यौ ॥ पदु पिता पुत्र जुग जो
र करि धरा धरन धारत भयौ ॥ ५ ॥ कविरुवाच ॥ इतैं अवध पुर
वीच भरत अरु मुनि वशिष्ठ है ॥ शांती मंडप कुंड निकट विलस
त बरिष्ठ है ॥ हवन करत श्री बंड कांड सत गर कुसुमादिक ॥ जल
जनाल कर्पूर उशीरा ज्य प्रचुरादिक ॥ कृत नारि केल पुरगा हुती
अतैं पै अवलोकित भ ॥ द्रुत आजनेय आवत उतैं कर गिरि वर ॥
ज्वलन ल प्रभ ॥ ६ ॥ करन लगे सब तर्क कहा यह इतैं मैं आव
त ॥ गृसित सुमित्रा मात वाम भुज वही लयावत ॥ अथवा मरव
संहार कार घंटा सुर आयौ ॥ इम भ्रम करि कै भरत नुरत शर तितैं
चलायौ ॥ भौ वारा भिन हनुमान जब महा वीर धीरन धरत ॥ हारा
मलयन मुख उच्चरत प्रबल बली पुहु वीपरत ॥ ७ ॥ चंद्रायणा
रत ॥ विरंजीवी यह वीर रहै छिति स्वच्छ है ॥ विधिलिखिता च्छर
पंक्ति लोप परत छ है ॥ चंड भरत दौं डकांडनी मुक्त है ॥ परिहां भ
ये मारुती महामूरछा जुक्त है ॥ ८ ॥ लाग्यो पट्टल लाट भरत भटा

वान है ॥ गिरिलियलांगुलाग्र वीर हनुमान है ॥ समृद्धित महि
पैं वदत अभिराम है ॥ परिहां हार धुवर हाल यन गिरा गुराग्रा
म है ॥ ९ ॥ राम लवन वरनाम अमल आनन कहा ॥ तित वशिष्ठ
भरतादि भयौ विस्मय महा ॥ अति आतुर हुइ अखिल नुरत ग
त तव है ॥ हरिहां महद मूरछा सहित मारुती यव है ॥ १० ॥ गिर
त भयैति हिं चरन शल्प किय दूर है ॥ गिरि जो यधिकरि मुनि वशि
ष्ठ कृत पूर है ॥ गइ मूर्छा सावधान हनुमंत है ॥ अरिहां वित को वरा
वृत्तांत स्वल्प वर्णित है ॥ ११ ॥ कविरुवाच ॥ शक्ति भेद उरल च्छ भ
यो हौ जास मैं ॥ राम वडाई भरत करी हीतास मैं ॥ वह करि कै इत
याद हीय हनुमंत है ॥ अरिहां साभ्यसूय करि रचन वचन उचरत
है ॥ १२ ॥ इति श्री पिपलोद पतनाधियाल रावत जी श्री दूलह सिं
ह जी विज्ञापित कविटी का रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री
वर विलासे हनुमद्भरत समाग मोनाम द्विचत्वारिंशोऽस्मात् ॥
४२ ॥ श्री हनुमानुवाच ॥ चंद्रायणा वृत्त ॥ चंद्र चंद्रिका चारु रहेर
जनीय है ॥ गिरि औ यधि गहिरुत तव गमनीय है ॥ हौं थकि ग
यौ दूहैं व आप पहुं चाइयैं ॥ परिहां ललित लच्छमन भात जहां द्रुत
जाइयैं ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ सुनत समर संकष्ट राम अरु लच्छम
स्वच्छ वच्छ भल भरत प्रबल परत छ है ॥ भुजा ठोकि टंकार श
रासन सोर है ॥ परिहां लंका ओर निहार सुमुच्छम रो है ॥ २ ॥
वट पद वृत्त ॥ तितैं समर मधिराम विविध विलपत उचरत हैं ॥
वच्छ लच्छ उतिष्ठ गह दुधनु रिपु प्रचरत हैं ॥ सैन्य हनत तव

असुरताहितनकनतुमजोवत ॥ प्राप्तसीयरिपुजीतितया ॥
 निर्भयकिमसोवत ॥ प्रतिवचनदेतनहिभातकसप्रीतिवि
 न्ननहिकीजियै ॥ कैकईमातपियसाहसेहोयकृतारथरी
 जियै ॥ ३ ॥ कविरुवाचचंद्रायणावृत्तं ॥ इतैसुनतकपिवच
 नभरतसादोपहै ॥ अद्रिसहितसुतमरुतविशियआरोप
 है ॥ कृतकुंडलिकोदंडप्रवगविस्मितभयो ॥ परिहांलगेक
 रनवरतवनगरवमनकोगयो ॥ ४ ॥ उतरिविशियतैभरत
 भुजनपूजनकियौ ॥ कुशललेयततकाललंकमारगालि
 यौ ॥ जिमदरिद्रमनगमनहसंतदिगंतहै ॥ परिहांपहुंचअति
 अविलंबवीरहनुमंतहै ॥ ५ ॥ यदपदवृत्तं ॥ अद्रिरुद्रअवता
 रप्रलयरविहादशसमुदित ॥ सहशद्रोगादोदंडधारिअध
 निशिआगततित ॥ दत्तदृष्टिदिगभागपूर्वसूर्योदयभूमव
 रा ॥ तीरतरलतरसिंधुतारसुरकियरोदनतस ॥ पर्वतउदो
 तरविउदयभूमसरवरथितविकसितकमल ॥ कपिलव
 तसमितलज्जितअवतप्रच्छिनमगआसूअमल ॥ ६ ॥ क
 विरुवाच ॥ तदनुनिरधिदिगभागप्रभाकरउदयनपेख्यौ ॥
 गिरिप्रकाशकरिजलजनुत्यविकसंतविसेख्यौ ॥ भोरहैंन
 भूमभग्यौभूरिहियभयोसहर्षित ॥ गयेवाहिनीवीषराम
 सुग्रीवहुतेजित ॥ पदुपुत्रप्रभजनपंजनीरम्यरुद्रअवतार
 है ॥ गहिद्रोगाअद्रिअविलंबउतआवतकरीनवारहै ॥ ७
 कविरुवाच ॥ मास्योमायमहर्षिकालनेमीरतनीचर ॥ ग

हीरूपउदगकंदकालीमारीत्वर ॥ राकसवलसंमर्दिसर्वरा
 वनप्रेरितहरि ॥ इंद्रपठायेप्रवलकौटिगंधर्वविजयकरि ॥ म
 रिगज्वालजटितआदायगिरिअदितिउतैआवतभये ॥ ८ ॥
 श्रीहनुमानकपिकटक मधिहियसवहसवितभयै ॥ ९ ॥
 भेदद्विविदकपिप्रमुखवमूचयरच्छाकारक ॥ सीतार्तकम
 हांधकारहारकपरभाकर ॥ पवनपुत्रसंप्राप्तहरीहरउच्छ
 वआकर ॥ कपिकटकसुभटसंघटनमेंयहैगल्लगोपालहै
 द्रुतद्रिशातुविशदवरलच्छमीलच्छवच्छथलहालहै ॥ १० ॥
 श्रीरामउवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ अेकहिद्विहिउपकारपरप्राणा
 समर्पततोहि ॥ अवरअखिलउपकृतिनकोमानहुरनिय
 मोहि ॥ ११ ॥ तुमउपकृतआपत्तिवहजीरनममतनुहोय ॥
 पुनिप्रत्युपकारार्थहितकैंनआपदातोहि ॥ १२ ॥ यदपदवृ
 त्तं ॥ हनुमतकृतआलेयअद्रिओषधिकरितूरन ॥ धरनिध
 रनआतमामूरछात्यजसंपूरन ॥ तरनिरामअरविदलंकप
 निकुपितकालसम ॥ आददानधनुसशरक्रोधकरिभयेअ
 रूनतम ॥ प्रोत्कुल्लखदिरअंगारचखटरगात्कारकोदंडकिय
 मुखमारमारउचरंतउतलच्छउठेप्रोच्छाहहिय ॥ १३ ॥ चंद्र
 यणावृत्तं ॥ सहरयसपुलकसाशुभयेश्रीरामहै ॥ लच्छन
 हृदयलगायगहेगुणग्रामहै ॥ हावच्छलहावच्छवच्छथल
 अंकहै ॥ परिहांतअपरिश्रमपरिहारहेतुपर्यंकहै ॥ १४ ॥ शक्ति
 भेदयलुखेदभयोतव रहै ॥ शयनधानममहृदयमहामुद

मूरहैं ॥ मेघनादकुलकमलवर्यप्रालेयहैं ॥ परिहां प्रवलभई ।
 वेदनानआननगेयहैं ॥ १४ ॥ कविरुवाच ॥ कहलकुमनकरजो
 रिककुकममवेदहैं ॥ संपूरनश्रीरामवेदनाभेदहैं ॥ प्रभुउरपी
 डापरमप्रतच्छप्रचारहैं ॥ परिहां किंकरकेवलकथनमात्रछ
 तधारहैं ॥ १५ ॥ इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री
 दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामवि
 रचितेश्रीवरविलासेश्रीलक्ष्मणोत्साहवर्णनोनामत्रिच
 त्वारिंशोत्तासः ॥ ४३ ॥ अत्रश्रीहनुमन्नाटकलक्ष्मणाश
 क्तिभेदोनामत्रयोदशोंकः ॥ १३ ॥ कविरुवाच ॥ यदपदवृ
 त्तं ॥ प्रातभयेलंकेशबुलायोलोहितलोचन ॥ कहहुगाम
 प्रतिजायकरततवमैथिलिमोचन ॥ जामदग्निनिर्जित्य
 परशुप्रमथाधिपलीनों ॥ वहहैतुमरेनिकटचहैरावनकोंदी
 नों ॥ कहितथास्तुलोहितनयनतूरननभमारगलियों ॥ इत
 शिविरवीचकियआगमनरघुनंदनबंदनकियों ॥ १ ॥ क
 विरुवाच ॥ सौरगवृत्तं ॥ रावनदूतनिहाररघुवरवतरावन
 लगे ॥ तितअधिराजतिहारकहाकरतलोहितनयन ॥ २
 ॥ लोहिताक्षउवाच ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ लंकनिशंकजराय
 गयोंअविलंबहैं ॥ लंघनकीनसमुद्रप्रतच्छप्रलंबहैं ॥ ओ
 यधिआनविशिल्यजिवायोंलच्छहैं ॥ हरिहांमारुतिऊपर
 पीसतदंतततच्छहैं ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ वरवेवृत्तं ॥ सुनिवि
 हसतश्रीरघुपतिबोलतवैन ॥ किहंकारनआगतइतलो

हितनैन ॥ करजुगजोरिकहततबलोहितअच्छ ॥ देसदेस
 लकापतिपठवप्रतच्छ ॥ ५ ॥ हरप्रसादपरसातुमभृगुपति
 जीत ॥ वहरावनकूंदीजैरायिसुरीत ॥ ६ ॥ करहिंसमर्परा
 रावरागवरसीय ॥ सबविरोधमिटजैहैंनिरखहुहीय ॥ ७ ॥
 यदपदवृत्तं ॥ विहसिवचनकहरामदूतदैयहुरतलोचन ॥ ये
 थिप्रगायपौलस्यसुमरितवमतिमोदतमन ॥ हरप्रसादय
 हपरशुतदपिनहैंदैनजोगहैं ॥ दियेगलानीगहहिलंकप
 तिलयहिलोगहैं ॥ सबदईवसुंधरद्विजनकोंअसुररसात
 लगीजियें ॥ निर्जित्यनिशाचरलेयछितिकिमबलभिदकों
 दीजियें ॥ ८ ॥ दोहावृत्तं ॥ दूतदशाननअसुरपतिममवचन
 नइमवाच्य ॥ हरप्रसादवरपरशुयहलंकाधीशअयाच्य ॥
 ९ ॥ कविरुवाच ॥ यदपदवृत्तं ॥ अंतैअंतरबीचपुरंदरपदुप
 ठवायों ॥ शत्रुंजयरथप्रवरमातलीमारधिलायों ॥ रघुव
 रहहनुमंतध्वजागरोपनदीनों ॥ अतिउच्छाहसमेतआप
 आरोहराकीनों ॥ तबलोहिताच्छनिसकंतातितलंकाधिप
 सन्निधिगयों ॥ निजपिरनमायकरजोरिजुगसंवृत्तांतवर
 रातभयों ॥ १० ॥ इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी
 श्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामवि
 रचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचंद्रलोहिताक्षरावराइतसंबादी
 नामचतुश्चत्वारिंशोत्तासः ॥ ४४ ॥ कविरुवाच ॥ चंद्रायणा
 वृत्तं ॥ कहलंकाशियरत्यलंकपुरकंतहैं ॥ धुजपरसुतदशरथ

कोन विलसंत है ॥ यह सुनिलोहित खल्ल वचन उचरंत है ॥ परि
हो प्रबल पराक्रम पुंज वीर हनुमंत है ॥ १ ॥ यदपद दृत्तं ॥ लोहि
नाम्न उवाच ॥ हे लो वल्लिखित सिंधुगस्त अशुन मंडल धर ॥ सिय
वियोग सह राम दैन्य उदघाटन पडुतर ॥ निशिचर नायक नग
र निरिवल निरदग्ध अचल चित ॥ संजीवित सौमित्रि औषधी
अद्रि अति द्रुत ॥ उपमा अनेत हनुमंत यह जिहि मग सवरन
अनुसरत ॥ अति प्रबल प्रभंज पुंज वर गधुवर धुज गज्जन करत
॥ २ ॥ कविरुवाच ॥ मंदिर मंदीदरी गयो राबन अति नूरन ॥ वृज
नलग्धौ विचार चारु मतिनय संपूज ॥ विनिहत राघव विशि
ष विबुध पुर करौं मैं ॥ अथवा सीय समर्पि राम संकष्ट हरौं मैं ॥
मम मात्र ह्यौ अवशिष्ट बल कौन पछ है तोरा प्रय ॥ सो सपदि सु
नाबहु स्यामि नीधारन करि हौं हर्षि हिय ॥ ३ ॥ दोहा दृत्तं ॥ वि
हसि बदन मंदीदरी पहले सु नीम अंक ॥ प्रारा नाचलं कापती
अब किम भयौ बिबेक ॥ ४ ॥ मंदीदरी उवाच ॥ यदपद दृत्तं ॥
दैन्य भगिनि कौ देखि बरादिक निधन अवन सुनि ॥ मातुलल
व्यौ विनास ताल भेदन श्रुतिगत पुनि ॥ कपिवर वाली दहन
कहु सुग्रीव सव्य श्रुत ॥ जलधितरन उद्यान भंग बध विदित
अच्छ सुत ॥ पद पुत्र पौत्र परिवार जनन श्रु भये कुल के सबैं ॥ क
त सेतु विनिर्गत नीर सम उर विवेक आयो अवे ॥ ५ ॥ रावरा
उवाच ॥ मनोहर दृत्तं ॥ धिकं धिकं इंद्र जीत जाग्यो कुंभक
रगा दृथा स्वर्ग ग्राम लुंठन विचच्छ भुज वीस है ॥ लायन धि

धिकार मोहि मेरे मुनि शत्रु होय तामें तुच्छ तापस महाय संग
कीस है ॥ सो ह्यत्र आयकै प्रहारै कुल राकस को जीवत है रा
वन निहारे नैन वीस है ॥ एक अंक सीमवार पीस डारे जातु धा
न वीसो विसा अधिक अधिकार दस सैं है ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ चा
द्रायगा दृत्तं ॥ सकरुगामंदोदरी कहत लंकेश है ॥ नहिं पाव
हु कछु शोक स्वभान सले सैं है ॥ वियात दपि छ विया हु कम
हुत दीजियें ॥ परिहा समर मध्य मम नाथ हाथ लयि लीजि
यें ॥ ७ ॥ रावन वदत विदीर्य मरि निज हीयें है ॥ तरु राय क
रुगा नाहिं किंचिद पितीय है ॥ प्रारा कं नहिं पीय तोर जिय
होत है ॥ परि हौं तजलंका निशंक समर उद्योत है ॥ ८ ॥ यद
पद दृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ गहि आयस श्रीराम सकल कपि भ
टनिक से हैं ॥ लंका उत्तर मार्ग रुंधि अति उर विकसे हैं ॥ उरु
थल लुत्य करत दृढ गढ आरोहन ॥ शैल शिखर करधारि छ
टाकाहत छविहन ॥ दिगपाल कुलाहल बहल मद उग्र स
वग्रहतार चय ॥ देदिप्य मान दिशि विदिप्रदिश दश ग्रीव उद
ग्रीवलय ॥ ९ ॥ कविरुवाच ॥ रावरा राम नियुद्ध निहारत रुद्र
निरंतर ॥ संवेष्टित कपिकटक लंक अवलोकि दिगंतर ॥ उच
रत मरुदादित्य शभुशत मय मुख सुरवर ॥ अनुसर्पत अनुदि
वस समय जिहि पुर दुवार पर ॥ वह समा क्रांत वानर भटनि दश
ग्रीव नगरी रुचिर ॥ अतिलखहु काल महिमा प्रबल उर आव
त अचरज अचिर ॥ १० ॥ इति श्री पिपली दपत नाधिपाल रा

मिधावत ॥ पश्चिमार्धयुवगज तुरंगमगह्वी क्रोधकर ॥ कीनों
प्रबल प्रहार असुर शिर ऊपर सत्वर ॥ निजमिविग्वीचपहुँच्यो
नवह अंगदताडित महिष स्यो ॥ शिवशिवशिव अतिसंकट
विकटचमू निशाचर उच्यस्यो ११ ॥ इति श्री पिपलोदयतनाधि
पालरावतजी श्रीदूह मिहजी विज्ञापित कविटीकारामांगजगो
विंदरामविरचिते श्रीवर विलासे ताराहृतमिचरबधोनाम बट
चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ कविरुवाच ॥ बटपदवृत्तं ॥ निशिच
रमहदशरीर अल्पवपुवानर विलमत ॥ किहि प्रकार कैवि
जय राम संसय हिय हुलत ॥ कह अंगद कर जो कि कलश शिशु
पियो अंबु निधि ॥ अद्रीपरम उतंग पुरंदर पव छिद जिहि विधि
॥ अति प्रथुल वपुष किहि काज के कोरा पकुल असमर्थ उत ॥
निज नाम धेय धुव राम इति लसत सकल सामर्थ्य जुत ॥ १ ॥ क
विरुवाच ॥ रावन रघुवर निरखि बचन उचरत हैं ॥ तारक ननु
तिय मात्र राम शुचि द्विज होत हैं ॥ भीति भवन मारी चहिरन वा
ली होवानर ॥ दृष्टाविकथन करत काहि काकुत्थ अधिकतर
कह कोन वीरवर विजय किय रगत गर्ब दोदंड कर ॥ कोदंड
अबैं आरोपियें तोर मोर हूँ हैं समर ॥ २ ॥ कविरुवाच ॥ अंगद
उत्तर देत अरे सुन निशिचर नायक ॥ बंधमहज्जन चरित क
छू नहिं संशय लायक ॥ सुंदतिया किय दमन तौ नंदर सत
कुंठित यश ॥ अरु जिहि विधि हो बालिताहि तुम जानत जिय
जस ॥ पुनि सुनिबौ चाहत औरह विदित वीर जय विमल गि

र ॥ यखंजन दूधन दलन किय विशिख कियो रगाभिन्न शि
र ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ मुनि अंगद के वैन बचन रावन पुनि उच
रत ॥ रैन मानव राम समर लंका पति प्रचरत ॥ शंकर गिरि के
लाश किया कंदुक कीडा डब ॥ मानव निशिदिन दर्प जामदे
वैश्वरह दिव ॥ असुरांत तं सुंदरि कदन शावामृगपति अंत क
त जाघो सकरहु धिय धीर धरि दोदंड कोदंड धृत ॥ ३ ॥ चं
द्रायगावृतं ॥ कविरुवाच ॥ तदपि न रावन हनत सपदि श्री
राम है ॥ अंनन अंबुजन मन्त्र कियो अभिराम है ॥ जब किंचि
त धित लज्ज सहित सिय कंत है ॥ परिहो बिहसित वैलं केश
वचन उचरत है ॥ ४ ॥ रावन उवाच ॥ तव पूर्वज अनर राहु तो
बर जोर है ॥ कीनों मम कर कंदन जंगम धिघोर है ॥ तिहि सु
मरन करि व्यथित परम संताप है ॥ परिहो जिहि तैं लज्जा वंत
होत अति आप है ॥ ५ ॥ श्रीराम उवाच ॥ बटपदवृत्तं ॥ कह
तराम निशंक निशाचर नीच निहारहु ॥ कहा लज्ज अनर
राभूप निज जिय निरधारहु ॥ जय अथवा कै मरत सूरवीर
न कोरन मैं ॥ तिहि कौ हरख रुशोक तन कलावत नहिं मन
मैं ॥ बंधनागार अर्जुन नृपति बहु बासर रावन रये ॥ बट व्य
था होत इहिं हेत तित मुनि पुलस्त्य भिक्षुक भये ॥ ६ ॥ चंद्रा
यगावृतं ॥ मम भुज भृगुपति विजित जाम बध कीन है ॥ ति
हि है हय के हात बंधतु मलीन है ॥ संकट कारागार सहे अ
गिनंत है ॥ परिहात वसन्तुरवधरि शस्त्र सुलज्जा वंत है ॥ ७ ॥

कविरुवाच॥ रावनहिया बसंत सुसंत तसीय है॥ मोरनिरं
तरध्यान जानकी जीय है॥ मम उर निवसत सकल सृष्टि सं
घात है॥ परिहां हनत नशर हिय असुर डरत जग घात है॥ १॥
॥ यदपद वृत्त॥ रावनरोष निहारि विहित अहंकार आप
उर॥ द्रुत दृढ संगर कद दिच्छ बिभुसज्ज भयेतुर॥ शरणाग
त भय हरन बिरद वर विलसत अविरत॥ छायो विपुल उछाह
प्राणा तुरा तुलित विशेषत॥ रघुवंश राज महाराज सुर अव
धनगर अधिराज है॥ बध करन काज असुरेशा कौरन मधिवि
विध विराज है॥ ६॥ दोहा वृत्त॥ कविरुवाच॥ प्रिया बिरह अ
र्दित प्रभूल हत नाहिं रतितत्र॥ सत्यरम्य रमनीयता थिर मन
बिलसत यत्र॥ १०॥ कविरुवाच॥ मनोहर वृत्त॥ वारा दहिं ता
द का केशो रिगत सनान कियो भगिनी के कानन प्राणा प्राणा
याम कीनों है॥ दूयन त्रिशिर सर आहुति अवेष्टा दई हिरन
मारीच बलिदान वेग दीनों है॥ आचमन आन्यों है अनंत अ
बु अं बुनिधि भोजना वकाश अबैं चारु चित चीनों है॥ मार्ग रा
बुधित मोर मार्ग न करत तोर आमिय असुर लंक नाथ चं हैली
नों है॥ ११॥ दोहा वृत्त॥ चित चाहत जो संधितो सीय समर्पहु
सद्य॥ नातर मम नारा चतव आमिय भयिहैं अद्य॥ १२॥ इ
ति श्री पिपली दपत्त नाधिया लरावत जी श्री दूलह सिंह जी वि
स्थापित कविटी कारा मांगज गोविंद राम बिरचिते श्री वर विला
से श्री राम चंद्र गवरा संबादी नाम सप्त चत्वारिंशोऽस्मात्॥ ४९

कविरुवाच॥ चंद्राय रागा वृत्त॥ तउ रावन सावज्ञ बचन उचरं
त है॥ प्रगट प्राणा परिवारा हेतु वरांत है॥ मूर्यन कौं मूकत्व
सभामधि है जथा॥ परिहां स्त्रीवन कौरन वीच संधिवच है तथा
१॥ यदपद वृत्त॥ इम कहि गगन बिलोकि दशानन बदत व
चन है॥ रैर काल अकाल लब्धत व विभवरचन है॥ हूँ जै स्वैर
सकाम शंभु भूषय तूतन तव॥ शिरो माल्य निज अंग भूरि भू
यित भ्राजहु भव॥ रचियैं विरंचि स्वयि अपर लंके श्वर करि व
हु है॥ करवाल गही भीयन भुजन जुहु काज सन्नद्ध है॥ २॥
कविरुवाच॥ चंद्राय रागा वृत्त॥ पुनि करि रामा छेप सुनावत
बोल है॥ मंदिर मोध मैथिली अलाप अमोल है॥ रगा दारुणा
मधि होय पलायन प्रान है॥ परिहां मधुर अधर मम गिद्ध करि
गे पान है॥ ३॥ कविरुवाच॥ त्रिजटा शरमा दोय बिमान
विठाय कै॥ बैदेही ले गई चतुर चित चाय कै॥ रघुवर रावन जु
हु बत आवत सीय कौं॥ हरिहां निमित्त नृप नंदिनी क निहारत
पीय कौं॥ ४॥ चटिलंका चल शिखर उच्च मंदोदरी॥ निरख
त मंगर शोभनि प्राचर सुंदरी॥ अकचरन धित भये अगाध स
मुद्र है॥ परिहां शोभा समिति समग्न निहारत रुद्र है॥ ५॥ वर
विमान आरुढ विबुध वहु वंद है॥ अवलोकत संगनाम सक
ल स अनंद है॥ काल रुद्र समगम कियो अति कोप है॥ परिहां
जनु भैरव संहार सु अहुत ओप है॥ ५॥ श्री राम उवाच॥ यदप
द वृत्त॥ रे निशिचेर पति तीच करत अवतै रौ चूरन॥ वारा स

नशेर त्रिदश दर्पहर गहियें तूरन ॥ वेग बुझावत मीर प्रिया वि
रह गि विलोकत ॥ मंदोदरी जुगनयन नीर करित बझव लो
त ॥ जो करन होय करि लेहु सो मन की मन रह जायगी ॥ लंके
शरिंदगी जिंदगी अकहि सगन सायगी ६ ॥ कविरु वाच ॥ चं
द्रायरा वृत्त ॥ इम कहि कै श्रीराम लिये कर बासां है ॥ सो लखि
मंदोदरी लगी घबरान है ॥ मंदोदरी उवाच ॥ हुते बाल तररु
पतवै ताटक हती ॥ परिहां अवेतरु रात मलयत कितक मेरो
पति ॥ ७ ॥ कविरु वाच ॥ अटपद वृत्त ॥ आकर्षन किय धनुष
ज बैर रा माधिरघुवर ॥ त बै वाम भुज बदन अहो सुनियें द
च्छन कर ॥ दान देन अरु लेन मिलै मन भावन भोजन ॥ अग
होत उहिं ठोर अवेकत पृथु नियोजन ॥ तब दाहन कह मोकेन
भय वृजत निज स्वामी अवन ॥ दश बदन वदन सब सहक दन
किम इक इक करुणा भवन ॥ ८ ॥ कविरु वाच ॥ दृष्ट मंत्र दि
व्यास कुशिक सुत शुचि सेवन कर ॥ योद्धा भृगुपति वीर भुज
गपति भोग द्विभुजवर ॥ बिभु दिनकर कुल केतु कुतक उता
न दगंचल ॥ बहु मतरि पुकृत कर्म कौतुकी राम अचंचल ॥
जो कर्म बसिकर करि करत रावन रन माधिरघुवर ॥ सो
कर्म देख दोर्दंड द्रुत दाशरथी दरसात तित ॥ ९ ॥ राघव करी
प्रतिग्य समर मुर्द्धनि ऐसी उत ॥ रे रावन तब सहित होय गे
अर्क अस्त द्रुत ॥ अस्त अचल अबल बिभ्यौ आदित्य स
में जिहि ॥ मंदोदरी चकोर बधूसमहुइ ओसर तिहि ॥ जान

कीचित चकई सदृश समय भंग भय जानि जिय ॥ अरु निशा
वीच निशि चरन कौ प्रबल होत बल हेरि हिय ॥ १० ॥ इति ॥
श्रीपिपलोद पत्तनाधिपाल रावन जी श्रीदूलह सिंह जी वि
ज्ञापित कविटीका रामांगज गोविंद राम विरचिते श्रीवर वि
लासे सीता मंदोदरी वचन वर्णन नामाष्ट चत्वारिंशोऽध्या
सः ॥ कविरु वाच ॥ अटपद वृत्त ॥ कहत राम लंकेश तोर शि
र बहुल विलोकत ॥ मिलत महा मुद मोय अकबध इक अव
लोकत ॥ विनिपातित इक माध कोय उपशंति कहो किम ॥
निरयत नहि निज निधन भिन्न उच्छिन होत जिम ॥ निज
छिन्न छिन्न मस्तक निरखि बिलयत दुर्नय निबिल फल ॥
जग अक मत्थ केशवु तें दश मत्थन कौ शत्रु भल ॥ ११ ॥ चंद्रा
यरा वृत्त ॥ इक शिर लखि उच्छिन्न अपर इम बदन है ॥ मा
छिंधी माछिंधि गिरा मुख गदत है ॥ अक मत्थ अरि हनै यहै
नहिं लेय है ॥ परिहां दुर्नय फल दश मत्थ परत सब पेय है ॥
॥ १२ ॥ अटपद वृत्त ॥ कविरु वाच ॥ अति द्रुत तर श्रीराम बारा
संघात घात हुव ॥ रावन ताडन व्यग्र गीवनहि गिरन देत भुव
छिन्न धनुष निस्त्रिंश अदि प्रहरा करि कोपित ॥ निज मूर
ध दश बदन राम शर ब्रात दलित तित ॥ कर इक इक शिर ग
हि गगन माधि उछरत इपट भुज वीस भट ॥ जनु अति शायन
संघटन में बड़ा उछरत सुघर नट ॥ १३ ॥ दारा शारा उलीर
समर प्रांगरा माधिरघुवर ॥ सम कल पात कृतांत लिये नव

श्रेकसंगकर॥ नवमूर्धउच्छिन्नकिये पुनरपिनवीनलवि॥
 के मुहर्तचितचकितविपुलविस्मयनिजहियरवि॥ विधि
 दियौवाहिबरदानयहजबलौच्छिन्ननमध्यशिर॥ उच्छिन्न
 कियेहअन्यमथपुनिपुनिप्रगटहिंगेअविर॥ ४॥ कुंभज
 मुनिसंदतविदितब्रह्मास्त्रप्रबलतर॥ अभिमंत्रितकरिवा
 राप्रहास्योददिदशकंधर॥ शोरिगतशोराशरीरविशि
 षवरपंचप्राणागहि॥ अतिशयसत्पुनरतिछनधारशरभौ
 विष्टमहि॥ रारावराविद्रावराविवुधसकललोकराव
 रा रहा॥ भोपतनतासपुहवीप्रबलभयोमोदमंगलमहा
 ॥ ५॥ सबसुंदरसुंदरीसहितमंदोदरीपरिवृत॥ गलदर्विल
 जलधारनयननीरजपुरनिस्सृत॥ सियपतिनिजपतिविर
 हप्रतापानलहिवुझावत॥ बिकुटाचलतैचपलसमरभू
 मीमधिआवत॥ अतिकरतघोरफुतकारजुतहाहाकार
 पुकारमुख॥ संप्राप्तमहानिद्रापतीगिरीचरराचितअमि
 तदुष॥ ६॥ मंदोदरीउवाच॥ सुरसिंधुवरवधुकुंभप्रसूफो
 दननिस्सृत॥ विलियनविजयप्रशस्तिविश्वमंजुलमौक्तिक
 कृत॥ वराविलीविचित्रललितलेखकलंकापति॥ नाकां
 तपुरसरससुंदरीकलकपोलतति॥ वरविरचिततितका
 शमीरकापत्राकुंरशोभाअमित॥ तिहिनासकभुजभीयन
 प्रबलभौकिहिंविधिसंगरशमित॥ ७॥ हालंकेप्रवरप्राणा
 नाथजियजीवनमेरे॥ मंदोदरिपतिवृताबदनबहुचुंवततेरे

आलिंगनभुजभूरिकरतश्रेकांतकांतजब॥ कहतहुतेक
 रि कौलवहेसवविसरिगयेअव॥ वरलंबोदरकलकुंभय
 लमौक्तिकमरिगश्रेकावली॥ करिदेहुं तोहिआवतअवें
 करजदारनिद्राभली॥ ८॥ डककरकरिकैलाशधसौद
 सरविभुवनजित॥ अष्टादशअवशिष्टनाहिंआयोअव
 सरकित॥ भूरिभव्यकव्यादवीररगाधीरमहाबल॥ रिपु
 यहद्विभुजमनुष्यतियाविरहितवानरदल॥ अतिप्रबल
 दैयियेंदैवगतिवहविनिहतनिजनगरन॥ बहुदथाही
 तमामगिसवउलटिजातजवनियतिजन॥ ९॥ इतिश्री
 पिपलोदपतनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञा
 पित्तकविटीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविला
 सेमंदोदरीविलापोनामैकोनपंचाशतमोलासः॥ ४६॥
 कविरुवाच॥ मनोहरवृत्त॥ वल्लकुलजातिजासअग्र
 जकुवेरकैसोकुंभकर्गाभातपुत्रइंद्रजीतपायोहै॥ आप
 दशमत्यसमरत्यहत्थविंशतिहैकामचारदैत्यरथवि
 जयीबतायोहै॥ लंकजेसोगढदृढपरियापयोधिपूरगोवि
 दजदैवदैवदुर्वलदिखायोहै॥ योंसियोंसियायोयूवयी
 जयीजसारोजगकोसलकिसोरताहिथिनमैंधपायोहै
 ॥ १॥ श्रेककालवीचजानैविश्वकौविजयकियोजाहीभुजवीसई
 शअद्रिकौउठायोहै॥ ताकौअग्निदाहसंसकारसमैआयोअबरा
 मविनआयसमोकपिनरुकायोहै॥ गावतगोविंदअतिआचरज।

आवत है अद्भुत अवश्य काल माहि मावता यो है ॥ यों सियों सियायो
 यूवयीजयीज सारोजग कोमल किशोरताहि धिनमें यपायौ है ॥ २ ॥
 दुरगत्रिकृतासपरियापयोधि पूर जोधजातुधानधनधनदधरायौ है ॥ ३ ॥
 संजीवनी विद्या दृष्ट जाके हि मुयायगत काल वशात को ह विनाश दरसा
 जंतुन को पूर्व कृत कर्म विपाक महा विवम विवेश विष्ववीच विलसायौ है
 ॥ जोई शिव सीस दश सीस सीस मंघड़ तो शिव शिव मोई गिड पायन लु
 ठायौ है ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ लक्ष्मी धर वृत्त ॥ लच्छ औ अछ हंता जहा
 जायकें ॥ मानैतें यानमें जान की लायकें ॥ स्वामी श्रीराम के सामने सोर
 यी ॥ लज्ज में मज्ज सीसीय शोभालवी ॥ ४ ॥ मनोहर वृत्त ॥ लंका तें कल
 कीन मैथिली मंगाय राम मारि दशमत्य दशरत्य सूनु सरसे ॥ विपुल
 वियोग बहिज्वाल जल व्याकुल हैं विग्रह विशेष मैं न वारि बृंद वरसे ॥
 नाहि अध ऊरध औतिरछे निहारत हैं मुकुलित दृगमोज दृंद दिव्य दर
 से ॥ धित है समाहित मे चित मैं चकित भये नहि जित जित मे विलोकत स्व
 परसे ॥ ५ ॥ वरवे वृत्त ॥ कविरुवाच ॥ निज कुल परिजन लज्जा मज्जित हो
 य ॥ सजल जल जड वलोयन दरसत दोय ॥ ६ ॥ जकित थकित समस न
 न गहत गलान ॥ उहिं अवसर मधि उचरत वच हनुमान ॥ ७ ॥ हनुमानुवा
 च ॥ मात मैथिली करियें ललित ललाम ॥ प्रभु पुनीत पद पंकज पदुल प्र
 गाम ॥ ८ ॥ मनोहर वृत्त ॥ भंगुर भयौ है अंग चाप के अलिंगन तें उपमा
 अनंग की अभंग मरसत है ॥ न्यस्त स्रै कहस्त अछ अभजल ललित मैदू
 जे करवीच शर पंचदसत है ॥ वागावरा अकित विरजैं वीर राम वपुम
 नो विजै लच्छि के नय च्छत लसत है ॥ लंका भट मथिकें भये हैं धित प्राण

नाथ श्रीमात क्यौं न पद पत्र परमत है ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ वरवे वृत्त
 वायु तनय सुंदर वच सुनि सुनि सीय ॥ चह चित ही मधि चुनि चुनि पु
 नि पुनि पीय ॥ १० ॥ अथ मैथिली मानस विचार ॥ मनोहर वृत्त ॥ त
 नुभूत तीन ताप छेदन छपा कर सों कोधान लसंभोधर उपमा अनूप है
 सार औ अशार के विवेक को रुशोक हको भ्राजत भवन हर्य वीजाथ
 यकूप है ॥ काल व्याल विय कों गोविंद है गरुड मरिग धैये रच्छवन
 भूमि मोव प्रद रूप है ॥ सुकृत समूह तें समागम घटत राम विना पुन्य
 मिलै नाहि औंध पुर भूप है ॥ ११ ॥ दोहा वृत्त ॥ कविरुवाच ॥ इम उर
 अंदर आनि कें मैथिली मत्य मिलिंद ॥ रघु नंदन पद दंड को गहन चहन
 मकरंद ॥ १२ ॥ इति श्री पिपलोदयत नाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिं
 ह जी विज्ञापित कविटीका रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री वर विला
 से मैथिली मान विचार वरानो नाम पंचाशत मोल्लास ॥ ५० ॥ कविरु
 वाच चंद्रायणा वृत्त ॥ अलग होय श्रीराम वचन उचरत है ॥ सुनहु मह
 ज्जन सकल सुसंत महंत है ॥ श्रीराम उवाच ॥ जद पिप्रिया पतिवृता
 विदित विन दोय है ॥ परिहां दिव्य शपथ विन तदपिन मन संतोष है ॥
 १ ॥ परमंदिर मधिसियार ही चिर काल है ॥ दिव्य शपथ विन परस
 करत किम हाल है ॥ यह निप्रय वच सुनत विरंचादिक सबै ॥ अरिहां
 अवर तें अवतरत विदशत तित तैं ॥ २ ॥ दोहा वृत्त ॥ प्रिया विरह अ
 दित जद पित उनल हतरति राम ॥ रम्यन की समनीयता सत्य स्वच्छ धि
 यधाम ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ अट पद वृत्त ॥ जल दिजाय जान की ज्वलि
 त सति जात वेद जित ॥ पावक पावक परम विनंती वर वितरत वित ॥

मनवचननुकरि मोरस्वपनजाग्रतमधिसविरत ॥ भयौ होय पतिभा
 वरामविन अन्य पुरुष प्रत ॥ तो दह दह दह मम देह दुत दहन दुसह
 घुति दाप है ॥ सब सुललित फल भागीन के र्म साविद्रु कथाप है ॥ ५ ॥
 दोहा वृत्त ॥ दुहिता दिव्य विदेह की डम बदि बचन बिशेस ॥ कीनो
 पूरन प्रज्वलित पावक पुंज प्रवेश ॥ ५ ॥ मनोहर वृत्त ॥ कालानल
 जीह ज्वाल सहित है लीलासर ॥ शोभित सरोज सीय बदन बिशुद्ध
 है ॥ हर्य ओ अमर्य सने वानर के वृंद बहु फूफूत्कार शब्द सर्व अंब
 र निरुद्ध है ॥ परम प्रबुद्ध महाराज राजराम चंद्र बुद्धि के निधान जि
 यतानी अबिरुद्ध है ॥ चार हू बदन ते उचारत है चार मुख पति वृत्त
 सीय शुद्ध शुद्ध शुद्ध शुद्ध है ॥ ६ ॥ दोथा क वृत्त ॥ श्रीराम उवाच ॥
 शुद्ध सियामन कायक वायक ॥ देवन ते बर नै रघुनायक ॥ आन
 न कौ उपमान अनुस्मित ॥ पंकज पावक पुंज प्रफुल्लित ॥ ७ ॥ कवि
 रुवाच ॥ यद्रूपद वृत्त ॥ दिव्य शपथ करि सिया प्रबल पावक ते निक
 सी ॥ बहुल वरानन विभावित वारिज वत विकसी ॥ बनिता विपु
 ल विनोद प्रीति प्रगटित प्रसेदकन ॥ आवृता स्थ श्रीराम निकट नि
 वसी समीप मन ॥ भल भक्ति भाव भाजित हृदय करन न पद पंकज
 परस ॥ कर कंकन मनि मुनिरमनि सम मत प्रगट हु सुंदर सरस ॥
 ८ ॥ मल्लिका वृत्त ॥ गीत मांगना प्रकार ॥ चारु चित मै चिहार ॥ जा
 न की रही निहार ॥ बार बार बार बार ॥ ६ ॥ हीय होत है सहस ॥ पै न
 कीन पाद पर्स ॥ माव भा महेरि राम ॥ चित भौ अनंद धाम ॥ १० ॥ इ
 ति श्री पिपलोद पतनाधिया ल रावत जी श्री बूलह सिंह जी विज्ञापि

तरत्त पुरस्थ कविटीका रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री वरवि
 लासे मै धिली दिव्य शपथ वर्ग निना मै क पंचाशत मोल्लासः ॥
 ५१ ॥ कविरुवाच ॥ मल्लिका वृत्त ॥ आद्रु कै इते कबीच ॥ नाथ रा
 म के नगीच ॥ हाथ जोरि होय दीन ॥ वीन ती सुकंठ कीन ॥ १ ॥ सु
 ग्रीव उवाच ॥ हरि गीत क वृत्त ॥ लंकेश कामिनी नेक नामिनि दे
 ह दामिनि सी दीपें ॥ जननी पुरंदर जीत की निधि नीतिकी छिति
 ना छिपें ॥ वृंदार का बलि बंदिता मयनंदिनी बंदन करै ॥ सेवित
 सुर सुर सुंदरी मंदोदरी विनती रै ॥ २ ॥ बर वे वृत्त ॥ मंदोदरी
 निहो रत जुग कर जे ॥ विनय करन गत करियें अबध किशोर
 ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ मुनि सुग्रीव सया के बचन रसाल ॥ बोले
 दिन कर कुल मरिा दीन दयाल ॥ ४ ॥ नम्रानन हुं रघुवर
 बचन बंदत ॥ मह भागिनी मंदोदरि कहा कहंत ॥ ५ ॥
 ॥ ५ ॥ धन्य जन कर घुवर त वजन नी धन्य ॥ धन्य वंश नहिं
 निरयत ना सी अन्य ॥ ६ ॥ साधु साधु सीता वर विन वत तोय ॥
 अब आगे विभु मेरी कस गति होय ॥ ७ ॥ देवि दशा अति दुर्व
 ल भरि जल नैन ॥ कृपा सिंधु करुणा करि बोलत बैन ॥ ८ ॥
 श्रीराम उवाच ॥ पति संग सती न हो नौ निज कुल धर्म्य ॥ भव्य वि
 भीषन भर्ता हर हर मर्य ॥ ९ ॥ अचल राज लंका चल कुरु चिर काल ॥
 प्रबल विभीषन भर्ता तव प्रतिपाल ॥ १० ॥ पद्धरी वृत्त ॥ कविरुवाच
 ॥ तदनंतर रघुवर चित चीन ॥ असुरेश विभीषन भक्तिलीन ॥ किल
 कृपा सिंधु विभु बंधु दीन ॥ लंकाधिपत्य अभिशेक कीन ॥ ११ ॥ तद

नंतर वरपुष्पक विमान ॥ जानकी जुक्त चढि किय पयान ॥ संगमाम ॥
भूमिलागे दियान ॥ पेयहु मम प्यारी पंच प्रान ॥ १२ ॥ इहिं गोंह भयौ फ
रो पाश बंद ॥ पुनि अवनचे कैय कक बंद ॥ बिदि शक्ति वच्छल
छन विदार ॥ इत आयौ हनु गिरि द्रौन धार ॥ १३ ॥ शर दिव्य लयम
डर करि स भीत ॥ प्रापत लोकांतर इंद्र जीत ॥ कीनौ इत कंठाट विनि
हंत ॥ केना पिगत्रि चर पति असंत ॥ १४ ॥ उपहाति हनु मत वरनत
अश्रीय ॥ जिहिं करि रावन भौ भय विशेष ॥ प्रहरत यह सुनि प्रज्वल
त पाप ॥ कृश कपि इतिल जित भयौ आप ॥ १५ ॥ लीला लंघित
वह बाहि नीश ॥ यह सुनत धुनावन लग्यौ सीस ॥ सुनिराम दूत तनु
छ्यौ ताप ॥ कलुषित इर्या जुत भयौ आप ॥ १६ ॥ भौ प्रिये तोर हित
हनूमंत ॥ प्रापत किय दश मुख दुख अनंत ॥ असुरेश अवस्था कौन
छिन छिन मधि प्रापित जौ न तौन ॥ १७ ॥ कविरु वाच ॥ सह बिस्मय
सिय दूषत सुगाय ॥ इत आये किम तुम प्रारानाथ ॥ तब राम सह
रित हीय होय ॥ वृतांतत सुनावन लगे सीय ॥ १८ ॥ श्रीराम उवाच
उपकार सकल सुग्रीव कर ॥ हरयत हौं निज हिय हेर हेर ॥ कान्ते नि
वास कांतर कूर ॥ प्रियजन वियोग उर आधिभूर ॥ १९ ॥ धनुमात्र
वाराग रिपु मनुज मच्छ ॥ तस वास सिंधु दाहि नैकच्छ ॥ २० ॥ घन
अघटित अघटित हुती घात ॥ इत सरि प्रतिकृति की कहा बात ॥
२० ॥ रावन हरि गोंवन राम तिय ॥ इत नी रहि जाती कथा सीय ॥
सुग्रीव सया भम नाहिं होय ॥ मिलतौ किम वदला लैन मोय ॥ २१
॥ ॥ इति श्री विपली दयत नाधिपाल रावत जी श्री दूत ह सिंह जी ॥

विज्ञापित रत्न पुरस्थ कविटी को रामांगज गोविंद राम विरचिते श्री
वर विलासे श्री सीताराम चंद्र संवादो नाम द्विपचाशत मोल्लास ॥
कविरु वाच ॥ यद्वपद वृत्त ॥ इहिं अंतर मधि इंद्र उदय लविराम
कहत बच ॥ देवि दोष दिन मर्या वियोगी मनुज यहै सच ॥ दीक्षा
मरिा सिंगार मदन अहि मस्तक मरिा वर ॥ चूड़ा मरिा चंडी श
काम तिय कांचिम गीर ॥ तिमतरा मोक्ति कहार मधि नायक
मरिा विलसंत है ॥ तरुगी चकीर चिंता मरिा उपमा याहि अनंत
है ॥ १ ॥ कविरु वाच ॥ पडरी वृत्त ॥ इकटक निरखत निशि नाथ
सीत ॥ प्राचीन विरह विभु विधा भीत ॥ काजुग मूँदे दुइ हग सली
ल ॥ कीनी लीला कुतुकाच्छि मील ॥ २ ॥ प्रश्न ॥ मैथिली के नैन
श्रीराम चंद्र ने क्यौं मूँदे ॥ याको उत्तर ॥ पहिले तित दंडक विपिन वी
च ॥ मांग्यो हो मैथिली मृग मरीच ॥ मांगहि मृगांक मृगल विअ
यान ॥ ताको करि हौं का समाधान ॥ ३ ॥ कविरु वाच ॥ इहिं अब स
र सब जन निशा जान ॥ सुष पूर्वक सोये जथा यान ॥ परभात विभीष
न उतै आप ॥ अभिबंदन कीनौ सीस नाय ॥ ४ ॥ विभीषन उवाच ॥
यद्वपद वृत्त ॥ उपकार क संबुधी सदा सेवित आगम गृह ॥ वर विक
मर घु वंश कथा तिहिं बीज यली यह ॥ देव छिन दशम तथ माय द
श अवली अत्र है ॥ शतमय दश शत नयन मुक्ति अति होत ज
है ॥ इम इक इक शिर शत शत नयन प्रभु प्रभु कीनै परम ॥ ५ ॥
लंकानिवास किम सुख है जहां अमित आसु ॥ ५ ॥ कविरु
वाच ॥ पडरी वृत्त ॥ तदनंतर विभु तत काल जोग ॥ वामर छत्रा ॥

दिकराजभोग्य॥ संभाव्यविभीषनप्रेमठान॥ पुरञ्जवधमिधा
वनकियपयान६॥ सुग्रीववदतभौसुनहुदेव॥ रनभूमिदिपत॥
यहदारितेव॥ बहुवाजिब्रातधरधुरप्रहार॥ इतभयेभूरिविभु
वारवार॥ ७॥ जिहिरजकरिछायौआसमान॥ कलकंठकबूत
रजासमान॥ करिकुंभनिकरभौमदश्राव॥ घनदृष्टिमदृशआ
तिदुसहद्राव॥ ८॥ बहुठोरठोरमहंमचीकीच॥ संततइहिंसंगर
अवनिवीच॥ मंदानिलपरिमलमिलितजास॥ अद्यापिमद्य
इवरगाप्रकाश॥ ९॥ इमसुनतविमलसुग्रीववैन॥ चितमधि
रघुनंदनचहोचैन॥ शुभसेतुबंधकियकज्जउत्त॥ बैदेहीवद
तभौअज्जउत्त॥ १०॥ प्रियपारानाथरघुवंशकेतु॥ तुं कितक
रवायोवहैसेतु॥ चितचकितहोयइतउत्तचिहार॥ इतकियउत्त
कियइतिकहनिहार॥ ११॥ कितकियकितकियकहिवारवा
र॥ पूजतबैदेहीवहुप्रकार॥ पटतानितियौमुमकायमंद॥
तबसेतुवतायोरामचंद॥ १२॥ आननबैदेहीपूर्णाचंद॥ लखि
सिंधुभयौआनंदचंद॥ शुभसेतुदाविआयौउफान॥ इहिहेतु
भईनहिंतासभांत॥ १३॥ घुंघटपटमुयशशिछिप्पोअत्र॥ अं
बुधिआयौनिजथानयत्र॥ इहिहेतुसिंधुमधिवहैसेतु॥ नहिं
लख्यौलख्यौरघुवंशकेतु॥ १४॥ तेदीसतहैसियसेतुशैल॥
ओयधिप्रकाशजितनाहिंतैल॥ बिन्यसप्रथमनिशिनशि
समूहबानरनलगेहिकपिविमलव्यूह॥ १५॥ गिरिसिंधुम
लिलमधिकिसनान॥ मुखदरीकियौकीलालपान॥ हुतहि

गुणितनिर्झरइसरतजात॥ पयकारपयोधिपूरतपियात
॥ १६॥ मैनाकबंधुतैभौमिलाप॥ चुवप्रौढप्रीतिचयअश्रु
आप॥ कपिशिविरनीरथितनिरविमोय॥ अगलीसब
बातैस्मरनहोय॥ १७॥ सियरगींरुतं॥ जवैदूरापातीबिबु
धजुवतीनैनसुगहा॥ सरिद्रतीहारावलिबलयशोभाकि
यमहा॥ तवैयेमाराक्यस्फटिककन्काशमनिसनौ॥ अ
शून्यात्मासेतुबिलसतमहानाटकमनौ॥ १८॥ इतिश्री
पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञा
पित्तकविटीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविला
सेनिमिनंदनीरामचंद्रसंबादोनामत्रिपंचाशतमोस्त्रासः
॥ ५३॥ कविरुवाच॥ पद्धरीरुतं॥ इमवर्नतवरनतशोभः
सेतु॥ पहुंचेनिजपुररबिवंशकेतु॥ सबमर्कटभटशुचिसि
यसमेत॥ मगमगमधिअतिआनंददेत॥ १९॥ मन्मुरव
भरतादिकअखिलआय॥ अभिबंदिअंघ्रिलीनैबंधाय
॥ मुनिराजपटुअभिषेयकीन॥ सियसंजुतंकपालअव
लीअनेक॥ उनउत्तमंगिबरअलेकार॥ मनिगनबटोस्कि
चीप्रचार॥ २०॥ धारीकदितसोसियसयान॥ सिंजितमं
जुलगिरकरतगान॥ विक्रमआडंबरहेरहेर॥ लज्जत
नहिंगज्जतबेरबेर॥ २१॥ जिहिंतीनलोककुज्जतप्रताप
॥ अरुभुवनचतुरदशविदितआप॥ जसजहजामजानत
जनेश॥ असरामअमलअभिधानवेश॥ २२॥ कविरुवा

च॥ तोमरवृत्तं॥ करिकोप अंगद आया॥ कपि ओघर्ते अल
गाय॥ उचसो बकारि बकारि॥ निज बालधी फवकारि॥ ६॥
तिहुं लोक केतुमनाथ॥ रघुनाथ तब बचमाथ॥ मुहि आपा
जाता मदीन॥ तस सब कारज कीना॥ जानित हीय मैं लिय हे
र॥ नहिं छंडियें पित वेर॥ सुनिलेहु श्रीरघुबीर॥ अब हूजियें
रनधीर॥ ८॥ अटपद वृत्तं॥ सहस्रकंठ सौमित्रिष्वसन सुत आ
दि सुभट जुत॥ आवहु यहरा रंग रसादर सावत बल उत॥ निर
पराध मम जन कहन्यो तुम ता कौ फल अब॥ प्राप होहु गो आ
पय हो अ बिलंब सपदि सब॥ करिया दबाप कौ बैर बड़ इ कछि
न धिय धीर न धरौं॥ दोर्दंड दूसरो लाउना इक कर करि मंथन
कौं॥ ६॥ समर प्रतिज्ञा परम महत सुनि अंगद आनन॥ छो
मित अति कपि चमू राम लछमन सह सांनन॥ अनपराध व
ध समजि अखिल अनुकंपा आई॥ है गड गद गद गिरा प्रचुर
पुलकावलि छाई॥ सौमित्रि तबै कर जोरि जुग तारा सुत सन्नु
ष गये॥ अपराध छमहु इम उचरि बच उर अनुकंपा कित भये
॥ १०॥ भई गिरा आकाश दाशहू हे वाली वह॥ राम होहि म
थुरावतार निज सब परिकर सह॥ सोहनि है उत इ नैं आप
निज बदला ले है॥ अनुचित कृत जो कर्म प्रभूता कौ फल पे है
असवारी सुनि अंबर उदित उर अंगद प्रमुदित भयो॥ पुनि
सकरुणालयिरामादिसब अविनयतजि सबिनय रयो॥
११॥ पद्धरी वृत्तं॥ होय गौपि बध प्रतीकार सांनंद भयो ता

राकुमारा॥ जुग हाथ जोरितजि को पतत्र॥ आयौ इत मै रघुराज
जत्र॥ १२॥ अति कै सविनय नुति करत राम॥ सुनिले उदया
निधि धर्म धाम॥ जिन जिन के तव गुन परत कान॥ तिन तिन
क मस्तक डुला गान॥ १३॥ चतुरानन चित मधिय ह विचा
रा॥ इक शिर प्रति जुग श्रुति किये सार॥ अहिराज वरानन स
ह सचीन॥ चहिये द्विसहसतित इक न कीन॥ १४॥ गुन रा
म राम सुनि है जुमै व॥ डुलि हेत ब उहि आनन अशेष॥ मस्त
क जिहिं सब ब्रह्मांड भार॥ शिर कंप भये कै भंग सार॥ १५॥
यह अमि प्राय विधि उर सि अस्ति॥ संसार रहौ सब सदां स्व
स्ति॥ इहिं हेत विधाता बुद्धिवान॥ सहसांनन किय नहिं खे
क कान॥ ॥ इति श्री पिपलोद पतनाधिपाल रावत जी श्री
दले सिंह जी विज्ञापित रत्न पुर स्थ कविरीकारा मांगज गो
विंदराम विरचिते श्री वर विलासे तारा तनयस्तवन बरानेना
मचतुःपंचाशत मोल्लासः॥ ५४॥ कविरुवाच॥ पद्धरी वृ
त्तं॥ तदनंतर नुति किय हनूमान॥ सुनिले उराम करुणानि
धान॥ बरविनय बदत बिभु जुत बिनोद॥ त्रय इक होत है पी
ल सोद॥ १॥ आनहु उहिं कछु प अधोपात्र॥ अरु मध्य दंड
अहिराज गात्र॥ ऊपर भाजन भल भूत धावि॥ मच्छर मोहा
दिक महारात्रि॥ २॥ शुभ सिंधु सकल तित तैल पूर॥ बरमे
रु वर्तिकाहे जरूर॥ चडां शुरोचि उहिं अर्चि आन॥ कज्जल
अंबर स्यामता मान॥ ३॥ अरि ओघ अमित उपमा पतंग॥

इतः प्रायकरत निज अंगभंग ॥ रावर प्रताप प्रभुपदु प्रदीप
 ॥ विख्यात निरंतर सकल दीप ॥ ४ ॥ अथ कीर्ती वर्णनं ॥
 कैलाश निलय शिवमया स्वच्छ ॥ उपवेशन थलहि मागिरि
 प्रतच्छ ॥ स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूप ॥ चंद्रोपल दर्पण ॥
 अति अनूप ॥ ५ ॥ क्षीराब्धीन वपुर्तक निहार ॥ शुचिशेष देह
 दीपति चिहार ॥ करि तितटा क किल कोशलेश ॥ विस्तार
 नाम बहु देश देश ॥ ६ ॥ दसवदन दमन सियर मनराम ॥ कीर
 तिहं सीत बधाम ॥ भूमि भूमि सकल पाइन धाप ॥ सब लोक
 होय विधि लोक प्राप ॥ ७ ॥ तित ब्रह्म हंस को भयो संग ॥ गर्भि
 णि हृद् अर्द्ध व्योम गंग ॥ विश अंकुर वर कुंदा वदात ॥ जा
 यो सुत हिम करन भदियात ॥ ८ ॥ श्रीराम राम अरगु महावीर
 ॥ हम किम गुन वर्नन करैं धीर ॥ कल कितिका मिनी भव्य भा
 ग ॥ कस्तूरि तिल के समन भविमार ॥ ९ ॥ निवसति नित प्रति
 त्व निलय लच्छ ॥ पुनि वचन बचि सर सुती स्वच्छ ॥ किं हिं
 कारन कीरति कुपित कंत ॥ नित भ्रमतर हत दशह दिगंत ॥
 १० ॥ दोट्टे सुडिं डि भड मत कार ॥ जिं हिं जुक्त प्रताप निल ज्वा
 र ॥ तर्जर कीरति पारद घटी जु ॥ फुटि बुंद वृंद अवली अदी जु
 ॥ ११ ॥ भोगेंद्र कित कतार क कितेक ॥ कति क्षीर सिंधु प्राले
 य कंक ॥ कति पांचजन्य कति कर क कुंद ॥ कर्पूर कित कश
 शि कितेक बुंद ॥ १२ ॥ अत्युक्ति प्रक निजिन कुपित होहु ॥ म
 मानु मिथ्या वचन सोहु ॥ तब तरुण प्रताप नल ज्वाल

॥ शोधित सब सागर जल विसाल ॥ पुनि पूरित अरि तिय नय
 नधार ॥ अति वार सलिल भौ इहिं प्रकार ॥ कोसल किशोर
 ओज स अपार बहु विबुध चन्द्र पावेन पार ॥ १५ ॥ सवि
 ता यद्योत धुति मात नोति ॥ जीर्णोर्न नाभि गृह शशी ज्योति
 ॥ मच्छर सम तारा गन अपार ॥ इम बरनत न भत वयश चिहार
 ॥ १५ ॥ अंबर अनेक भूम राय मान ॥ इहिं विध अनंत जस जूह
 जान ॥ मुद्रित मुख बारा गी रही मोर ॥ रघुवर बर महिमा मह
 त तोर ॥ १६ ॥ सानंद होय दिग बधूं वृंद ॥ गिरि मेरु उलूखल
 किय स्वच्छंद ॥ सुरगंगा मंजुल मुसल लीन ॥ तब कीरति शा
 ली निचय चीन ॥ १७ ॥ कंडित कीनो बहु बार बार ॥ तिहि गशि
 यह है गिरि तुयार ॥ ताके गन तारा गगा अनंत ॥ प्रोद्यत सुधांशु
 प्रांशु भनंत ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्त ॥ इहिं प्रकार निज हिय हु
 लसि तवन कियो हनुमंत ॥ अंगद अमित अनंद जुत रघुव
 र भुज बरनंत ॥ १८ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल गवत जी
 दूलह सिंह जी बिज्ञापित कविटी कारा मांग जगोविंद राम वि
 रचिते श्री वर विलासे श्री मद्धनुमत कृत श्री राम चंद्र स्तवन वर्ण
 नो नाम पंचाशत मोक्षासः ॥ ५५ ॥ अंगद उवाच ॥ यदृपद वृत्त
 ॥ रावन जस शशिर विप्रताप धनु शिव मद अहि पति ॥ चारहु
 थित ऐकत्र प्रलय कारक अरि अति ॥ तास प्रांति अविहेतु
 यदगत वतीरथ सुंदर ॥ सकल भये तेन अजबैं धासो कर रघुवर
 मद धनु यतृ तिय परताप ये भंग भये अरि अंग मह ॥ अवशिष्ट

सुजससोप्रथमही सीयहरत भौनरुवह ॥ १ ॥ किंचितकोपकला
 विलासबहु विभवविभूषित ॥ मंजुलमूरतिरामभक्तुजभाज
 अदूषित ॥ रावनइंद्रजिदादिहननकरिकियौ असुरबल ॥ कं
 दतफेरुं कंफेरुं रटत बिघटत विदपभल ॥ फुटप्रगटगुगुलूधु
 पधुवकीडतकपिकगितिश्वसत ॥ आकाशतकोरापकुलव
 धूममतदीपिरगामृदसत ॥ २ ॥ जामधिमिदिरमयूयशिशिर
 समसैवरेनुकरि ॥ वृत्रवेरिवाहिनीविलोकनकीनधीरधरि ॥ वा
 मवजयजिनकियौ रावनादिकनभयोरुज ॥ तेपिभयेभयभीत
 रावेरनिरयतनुगभुज ॥ जिनआश्रयपायप्रवंगवरसरितनाथ
 उत्तीरार्तित ॥ दोर्दंडचंडयंडनठयौशेरिउर्दंडपरचंडजित ॥ ३ ॥
 कविरुवाच ॥ पहरिवृत्त ॥ तदनंतररघुवरमुदितहोय ॥ आभ
 रनजथाचितजोयजोय ॥ सुग्रीवसुग्रीवाभरनदीन ॥ संगद
 भुजसंगदचारुचीन ॥ हनुमंतहीयदियहीरहार ॥ इमजथा
 नुक्तजियधारधार ॥ सतकारकियौ सबकपिनकेर ॥ करियाद
 मकलहियहेरिहेरि ॥ ४ ॥ बहुविलसतबरवानरअनीक ॥ कि
 स्किंधाजावनदर्दसीक ॥ सियलयननुक्तविभुजथाजोग ॥
 उपभोगकरतसाम्राजभोग ॥ ५ ॥ कविरुवाच ॥ मनोहरवृत्त ॥
 दाशरथीरामरविवंशमैउदयभये वनिताविदेहसुताजामजो
 गजानीहै ॥ छत्रकरिवनतैलेगयौलंकलंकाधीशकरिकैकपी
 द्रमय्यपूरग्रीतिठानीहै ॥ पर्वतकेपुंजकरिकीनौसिंधुसेतुबंध
 समुरसंधारिओधपुरीबाहिआनीहै ॥ निजमहारानीनिकलं

कपहिचानीप्रभूतदपिकलंककीकहानीनामुहानीहै ॥
 ७ ॥ बरवेवृत्त ॥ कविरुवाच ॥ वालमीकमुनिआश्रमलय
 तनिहार ॥ सीयरथीश्रीरघुवरआयसधार ॥ ८ ॥ तजिसि
 यलकुमनविलपतवारंवार ॥ नैननिवहतनिरंतरसंसुव
 नधार ॥ ९ ॥ जोरनमधिनजिवावतमारुतिमोय ॥ लयतेनि
 हिंदारुगादुयलोयनदोय ॥ १० ॥ कियौवैरवडहनुमतमो
 हिजिबाय ॥ हेरतहियहहरतहेहरहरहाय ॥ ११ ॥ मृगप
 तिगज्जचकितचितमृगपशुजाति ॥ प्रसवसमयनिजप्र
 मदाछिननजहाति ॥ १२ ॥ असनिर्दयहियरघुकुलभ
 योनहोय ॥ अरघुरामअसउरनिजआवतमोय ॥ १३ ॥ र
 घुवरविरहभयेहजीवतसीय ॥ नाहिजनकजायेहजान
 तजीय ॥ १४ ॥ ॥ जोनजियतउतररघुवरसीयवियोग ॥ त
 वैविधातानिर्दयनिंदाजोग ॥ १५ ॥ इतिश्रीपिपलोदपत
 नाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटी
 कारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासेलहम
 रापरितापवर्गानोनायटपंचाशतमोहामः ॥ ५६ ॥ क
 विरुवाच ॥ गेलावृत्त ॥ भंगकियौभवधनुयसमरकियजा
 मदग्निजय ॥ गुरुगिरतजिवसुमतीसेतुकीनौपयोधिप
 य ॥ दशकंधरक्यकाररामकोकोकहियैंगुन ॥ वर्गानक
 रियैदैवकियौउहिकथासेवचुन ॥ १ ॥ यटपटवृत्त ॥ श्रीरघु
 वरभुजप्रवलवृहततांडवसुंदरवर ॥ कांडमौंडब्रहमांड

भांडमंडितप्रचंडपर॥ रराशिरनाटकमहापाटवां दुधिपा
वनअति॥ अंजनेयप्रविरचितसुनतनरकेनिर्मलमति॥
वहसकलपापनिर्मुक्तहुइपडुलपुन्यपदप्रापहै॥ प्राप्ते
तिअखिलअरिभटविजयश्रीरघुवरजिमआपहै॥ २॥ दे
हावृत्त॥ यहनाटकहनुमतरचितनिर्मलवस्त्रनिहार॥
अंकचतुरदशकलितकरिभुवनचतुर्दशधार॥ ३॥ यह
पदवृत्त॥ पवनपुत्रयहचरितनयरकरिलिखितशिलनप
र॥ बालमीकलधिकद्यौरत्नसमरयहुसिंधुवर॥ अंजने
यतसकीनजथामुनिद्रुतआयसदिय॥ तदवतारनृपभो
जकियोउद्धतहर्षितहिय॥ अरुद्विजदामोदरमिश्रशुभ
गृथितकियोक्रमकरिकलित॥ श्रीहनुमाननाटकमहा
करहुविश्वरच्छाललित॥ ४॥ अत्रश्रीहनुमनाटकेचतु
र्दशोकः॥ १४॥ श्रीराम॥ अधपिडरीवृत्त॥ सोहतसुहिंद
॥ दूलहमहीद॥ राजपिपलीद॥ मानसप्रमोद॥ ५॥ धीव
रधरेश॥ रावतनरेश॥ आयसउचार॥ आशयनिहार॥
६॥ जाहरजहान॥ नाटकमहान॥ हेरिहनुमान॥ हीयक
रिमान॥ ७॥ पंथचितचीन॥ ग्रंथजुनवीन॥ होयइकन्या
र॥ सोशिरसिधार॥ ८॥ टीकमकविंद॥ अंगजगोविंद॥
नागरसुविप्र॥ धीयधरिछिप्र॥ ९॥ येरचितग्रंथ॥ प्रेमिन
सुपंथ॥ हेहियहुलास॥ श्रीवरविलास॥ १०॥ संशयवि
लोपि॥ जोपढेंकोपि॥ चेतसिचहंत॥ वांछितलहंत॥ ११॥

श्रीरमाराग॥ धूलसतधाम॥ पावतसुप्रम॥ दैसकलहं
म॥ १२॥ श्रीवरविलास॥ अभिधानजास॥ कीर्तनप्रकाश
॥ सतपनउलास॥ १३॥ सतपनविशेष॥ मेदतअशेष॥ स
तपनरयंत॥ सतपनपियंत॥ १४॥ सोरठावृत्त॥ अतिउदार
गंभीरललितलसतलखलूटमन॥ धर्मधुरंधरधीरदिन॥
दूलहदूलहनृपति॥ १५॥ दूलहनृपअभिरामप्रतिपत्त॥
पालकपुन्यपथ॥ निसदिनरातागमगुनग्यातादातारत्न
॥ १६॥ मनोहरवृत्त॥ पुरपिपलीदप्रजापुंजप्रतिपालप्रभु
दूलहनरेंदपरतापहिंदकायोंहै॥ थोरवयवीचजातेंजो
हैंमुजसजहसुगुनसमूहस्वच्छसुखसरसायोंहै॥ रावरी
दरसपायअमितअनंदभयोबुद्धिअनुसारथोंगोविंदगु
नगायोंहै॥ ऐसेसोअोरतेरेजोडतोडकीमरोडवारोठोरठो
रठाकरकरोडमेंनपायोंहै॥ १७॥ कायोहैप्रतापपरचंडय
डयंडनमेंमुजससमूह + दूनास्वच्छकविकायोंहै॥ ऐसे
सेगुनग्यानधियध्यानदिलजानजैसेअगरमानयानपान
सुखसरसायोंहै॥ १८॥ गावतगोविंदसुनोंदूलहनरेंदआप
याहिहेतजोडियासुवंशमनभायोंहै॥ ऐसेसोअोरतेरीजो
डतोडकीमरोडवारोठोरठाकरकरोडमेंनपायोंहै॥ १९॥
॥ छंदमतगजेंद्र॥ तीरथतोमतमामकियेजगदीशसुदर्श
नकाजसिधावत॥ ठोरनठोरसनानकियेबहुदानदियेनि
गमागमगावत॥ लाठमिलापभयोंभलठाठनिराटविनोद

विशेषवटावत ॥ रावत साहबदूलह सिंह समान जहान
न आनलयावत ॥ १६ ॥ हाकमहक उगयदियौ दुतकाः
जसमस्तस्वहस्त करावत ॥ लंदनलौं यलुव्यात विव्यात
रुसावधता अंगरेज सरावत ॥ गावत है गुगा गोविंदयौं
ततितस्करनाकितमैं सतरावत ॥ रावत साहबदूलह सिंह
समान जहानन आनलयावत ॥ आंमदकौं अवलोक
तनित्यनिहारि विलोचनयर्च करावत ॥ नीतिविहायर
येनहिं पायसहायक संकटमैं सरसावत ॥ जचककौं ल
खिकै रथिकै गुगा हेरि हमे सहियै हरसावत ॥ रावत
साहबदूलह सिंह समान जहानन आनलयावत ॥ २१ ॥
मंगनसंघ उमंग भरे जिहिं अंगन अंगनमैं नित आवत ॥
दानसुतोय तरंगनतैं निसवासर ओध अरिष्टवहावत
गावत है गुगा गोविंदयौं जित जाचक जे उर इच्छित पा
वत ॥ रावत साहबदूलह सिंह समान जहानन आनल
यावत ॥ २२ ॥ गाहक है गुगा के गरा कौ दुत दाहक
दारिद दर्श दियावत ॥ वारिसोवरसावत बिज कविन
नपै चुनिचित लगावत ॥ गावत है गुगा गोविंदयौं के
विपंडित पेयिमहा मुदपावत ॥ रावत साहबदूलह सिंह
समान जहानन आनलयावत ॥ २३ ॥ आवत ही अति
आदर अर्पिसुनावत मिष्ट गिरावत रावत ॥ यानरूपान
संबैसनमोन दरावत मोद महामनपावत ॥ गावत है गु

गा गोविंदयौं जिहिं के चित कौ कित पारन पावत ॥ रावत सा
हबदूलह सिंह समान जहानन आनलयावत ॥ २४ ॥ कौः
सकुवेर सुमेरु परै करत छिन वेर करै लुटावत ॥ उच्चनतैं
अति उच्च उदार गंभीरनतैं गहरो दर सावत ॥ गावत है गुगा
गोविंदयौं जिहिं के चित कौ कित पारन पावत ॥ रावत साह
बदूलह सिंह समान जहानन आनलयावत ॥ २५ ॥ मनो
हरवृत्त ॥ मंजुल मंदील मनोरंजन समर्थ सीस पुरठ पडा
सौ दिव्य दुपटा दिवायौ है : गावत गोविंदविप्रपावत मा
हान मोद रावत धरेश धीय पारनाहिं पायो है : रोकरूपेचा
रसैं विचार सैं रये है गोद दूलहन रेंद्र वित्त वारि वरसाया
हीय हस्मायौ सर्व सुख सरसायौ प्रेम पुंज परसायौ उर अछ
कछ कायौ है : १ दिल दरियाव दिव्य दूल दुलह सिंह राज
नीतिरीति मध्य सुमति सनीरहौ : सासदान भेद दंड चारहु
उपायनतैं रैय्यतत मामह गरीबरु गनीरहौ : गावत गोवि
ंद गिरा कीरति सुधाकर सी दे शदेश दियत दिगंत लौं चः
नीरहौ : वाह वाह वाह गिरनार बाद शाह तेरी जौ लौं शशि
मूर ते लौं साहिबी बनारहौ : २ सोरठा वृत्त ॥ पुरपिपलोद
अधीश ॥ पेंदर वीघा प्रेम करि ॥ छिति कीनी वकसीस ॥
अति मंजुल मालो तरु ॥ १ ॥ श्रीवर श्रीहरि हेत ॥ पुन्यारथ
पुहवी प्रवर ॥ दुज गहि आशिय देत ॥ मन बंछित कै सर्वदा
॥ २ ॥ शतगुनी सपैंतीस सह आश्विन सित दल स्वच्छ : शौ

(१६६)

रिवारदसभीदिवस पूरनभयौप्रतच्छः ३ ॥ ॥ इतिग्रंथ
 पारितोषकवर्णनं ॥ ॥ इति श्रीपिपलीदपत्तनाधिपा।
 लशवतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि
 टीकारामांगजगोविंदरामविरचित श्रीवरविलासैगं।
 यपरिपूर्तिवर्णनोनामसप्तपंचाशतमोऽंशः ॥ ५७ ॥
 प्रलोकः ॥ श्रीरस्तुमंगलं चास्तु प्रशास्तं शस्तमस्तुते ॥ म
 नोभिलषितं चास्तु ह्यविच्छिन्नास्तु संततिः ॥ १॥ दोहा ॥
 गोविंदविरचितगाथजुतश्रीवर विमलविलास ॥ हनुमा
 नकाध्यानधरलिरवारामजीदास ॥ ॥ शुभम् ॥ सं. १६५३

इति श्रीहनुमान्नाटक अर्थात् श्रीवर
 ॥ विलाससम्पूरणम् ॥ श्रीः

पौष कृष्ण १४ चंद्रवास
 ३ सम्वत् १८१
 ॥ ४२ ॥
 इन्द्रमस्थनिवासी पंडित नथ
 मल्लगुप्तार्द्धि प्रोद्धितः ॥ शुभं

(१६७)

अथ सूचीपत्रलिख्यते

नाम	पृष्ठपंक्ति	नाम	पृ.	पं.
गथावतरणिकावर्ण		रामविलासप्रभोनामहाद		
नोनामप्रथमोऽंशः १	४ १७	शोऽंशः १२	३६	११
श्रीरामलक्ष्मणसंवादो।		जटायुस्वर्गसंप्राप्तिवर्ण		
नामद्वितीयोऽंशः २	८ ९	नोनामवयोदशो १३	४२	१६
पुरोहितविदेहसंवादोना		श्रीरामविरहदशावर्णनो		
मैवतीयोऽंशः ३	१० ३	नामचतुर्दशोऽंशः १४	४५	१५
परशुरामागमनं नामचतु		शुभाशुभशकुनावलोक		
र्थोऽंशः ४	१३ १६	नोनामपंचदशोऽंशः १५	४८	४
सीतास्वयंवरनामपंचमो		श्रीरामसुग्रीवसमागमो		
ऽंशः ॥ ५ ॥	२० २	नामयोडशोऽंशः १६	५१	१८
सहचरिगमनोनामषष्ठो	२२ २०	बालीहृदयभेदनोनाम		
जानकीविलासोनामसप्त	२७ १३	मप्रदशोऽंशः १७	५४	२०
मोऽंशः ७		बालीवधोनामाष्टदशो १८	५७	१३
दशरथस्वर्गसंप्राप्तिवर्णः		पवनपुत्रप्रयारोनामैको		
नोनामाष्टमोऽंशः ८	२६ २०	नविंशोऽंशः १८	६०	१
चित्रकूटागमनोनामन		मारुतिमैथिलिसंवादोना		
वमोऽंशः ९	३१ १०	मविंशोऽंशः २०	६३	१७
मारीचागमनोनामदशमो	३४ ८	लंकापुरदहनोनामैकवि		
जटायूमूर्छावर्णनोनामै		शोऽंशः २१	६६	१६
कादशोऽंशः ११	३७ ८			

नाम	पृ.	पं.	नाम	पृ.	पं.
हनुमद्विजयोनामहा।			मायामस्तकनिर्माणो		
विंशोल्लासः २२			नामहाविंशोल्लासः ३२	१००	६
विभीषणासभायणो			रावराप्रपचोनामत्रय		
नामत्रयोविंशो २३			स्त्रिंशोल्लासः ३३	१०५	२
सेतुबंधननामचतुर्विं			रावरा महोदरसंवादो।		
शोल्लासः २४	७५	४	नामचतुस्त्रिंशोल्लासः ३४	१०६	१८
रावरांगदान्योनसंभा			कुंभकर्गारांगरागावत		
यरागोनामपंचविंशो २५	७८	१२	ररागोनामपंचविंशो ३५	११३	०७
रावरांगदयोरुत्तरप्रत्यु			कुंभकर्गवधोनामयट्ट		
त्तरवर्गाननामयट्टिंशो २६	८१	५	त्रिंशोल्लासः ३६	११८	३
रावरांगदप्रथोत्तर			जानक्यशोकवनपुनरा		
वर्गाननामसप्तविंशो २७			गमनोनामसप्तविंशो ३७		
रावरांगदसंवादोना।			इंद्रजीतवधोनामाष्टत्रिं		
माष्ट्रविंशोल्लासः २८	८८	२१	शोल्लासः ३८		
रावराविरूपाक्षसंवा			विभीषराजांबुवानसं		
दोनामैकोनत्रिंशो २९	९२	६	वोदोनमैकोनचत्वारिंशो		
महोदरमंत्रीवाक्यवर्ग			ल्लासः ३९	१२५	४
ननामत्रिंशोल्लासः ३०	९४	८	श्रीरामसमीरमुनुसंवा।		
मंत्रीवाक्यनामैकविंशो			दोनामचत्वारिंशो ४०		
ल्लास ॥ ३१ ॥	९७	८	वानरचंदवेगवर्गानोनामै		

